पायनियर इवैंजलिज़्म
कार्य-पुस्तिका

आत्मा जीतने तथा कलीसिया
स्थापित करने वालों की
सहायता हेतु बाइबल-सिद्धान्त

लेखक
थॉमस वेड एवं बारबरा एकिंस

सम्पादक
वी. के. सिंह

प्रकाशक
एशियन सहयोगी संस्था इण्डिया
42 जेल रोड, गीता वाटिका
गोरखपुर-273006 (उ॰प्र॰), भारत

पायनियर इवैंजलिज़्म
कार्य-पुस्तिका

विषय-सूची

1. सिद्धान्तः सुसमाचार-प्रचार, शिष्यता और कलीसिया स्थापना के बाइबल-सिद्धान्त 5
2. व्यावहारिक पहलूः अपने समूह को क्या प्रशिक्षण दें 20
3. योजनाः नयी कलीसिया को आरम्भ करने के कदम 33
4. नये विश्वासियों के लिए छः सत्य 49
5. यूहन्ना रचित सुसमाचार बाइबल-अध्ययन, द्वाराः वेलन मूर 55
6. यीशु का शुभ-संदेश, द्वाराः क्रिस्टी एकिंस ब्रॉनर 78
7. मसीह में नये जीवन का आरम्भ 107

Written by: *Thomas Wade and Barbara Akins*

Edited by: *V.K. Singh*

Copyright© Junta de Missoes Nacionais
Convencao Batista Brasileira
Rua Gonazapa Gastos, 300
Rio de Janeiro, R.J. 20.541-000 Brazil

Home Page : http: //www.pioneerevangelism.org

सर्वाधिकार सुरक्षितः इस पुस्तक के कुछ भाग या सम्पूर्ण भाग को प्रयोग में लाने की अनुमति है, यदि पुस्तक की विषयवस्तु में परिवर्तन न किया जाए और न अपने लाभ के लिए इसकी बिक्री की जाए।

बाइबल के सिद्धान्त

सुसमाचार-प्रचार,
शिष्यता और कलीसिया स्थापना

सुसमाचार-प्रचार, शिष्यता और कलीसिया स्थापना के बाइबल-सिद्धान्त

I. आरम्भिक सुसचार-प्रचार कार्य क्या है?

आरम्भिक सुसमाचार प्रचार, पद्धति में प्रचारकों को नए क्षेत्रों में जाने के लिए प्रशिक्षण देना जिससे कि जहां कलीसिया नहीं है, वहां नए लोगों को यीशु के पास लाया जाए और नए कार्य, आरंभ हो सकें।

क. आप की समझ में वे रुकावटें जो नई कलीसिया की स्थापना में आड़े आती हैं:

____

____

____

____

____

____

ख. नई कलीसिया की स्थापना के चार प्रारूप

1. **परम्परागत प्रारूप (दृढ़ विश्वासियों के साथ)**
   (क) कलीसिया कार्यक्षेत्र निर्धारित करती है।
   (ख) नया कार्य आरम्भ करने के लिए कलीसिया कार्यकर्त्ता को, आवश्यक नहीं कि वह पास्टर हो, आमन्त्रित करती है।
   (ग) कार्यकर्त्ता नये समूह और नये लोगों को बाइबल-अध्ययन और आराधना के लिए आमन्त्रित करता है।
   (घ) कलीसिया 5 या 10 या इससे अधिक स्थानीय मसीहियों का सहयोग प्राप्त करती हैं।
   (च) कलीसिया के आर्थिक सहयोग के साथ, विश्वासियों का समूह और कार्यकर्त्ता कलीसिया प्रारम्भ करते हैं।
   (छ) कलीसिया सामान्यरूप से सभी निर्णय लेती और नई कलीसिया के सभी खर्चों का भार उठाती है, जैंसे: सम्पत्ति, भवन और वेतन आदि।
2. **परम्परागत प्रारूप (दृढ विश्वासियों के बिना)**
   कलीसिया पिछले आदर्श के अनुसार समस्त कार्य करती है, जब तक नया कार्य अधिकारिक रूप से नयी कलीसिया के रूप में संगठित नहीं हो जाती है। इसमें केवल इतना ही अंतर है कि यह क्षेत्रीय विश्वासियों की आर्थिक सहायता से वंचित होती है।

3. **विशेष परियोजना**

कलीसिया परियोजना के लिए ऐसा क्षेत्र निर्धारित करती है जिसका अत्यधिक प्रभाव हो। सामाजिक परियोजना के कुछ आदर्श जैसे-बाइबल-अध्ययन या सेवा कार्य मसीह से अनजान समाज के लिए। यह परियोजना संस्था, व्यक्तिगत और आर्थिक स्त्रोतों के अनुसार चुनें। जैसे - 1992 में ब्राजील के एक प्रांत मिनास गेरीज में भयंकर बाढ़ आई और सैंकड़ों लोगों ने अपने घर खो दिये। बारबरा एकिंस अपनी संस्था के सेवा-कार्य के लिए धन एकत्रित करने में सफल हुईं ताकि ये लोग अपने घर दोबारा बना सकें। शहर के मेयर ने दान में जगह दी और उन्होंने पड़ोस में ही एक नयी जगह बसायी जिसका नाम रखा बेथेल-परमेश्वर का नगर। उन्होंने एक साल में 70 घर बनाये और घरों में बाइबल-अध्ययन प्रारम्भ किया। लोग बच गये और कलीसिया शुरु हो गई थी। ये विशेष परियोजना और पायनियर इवैन्ज़ेलिज़्म का समायोजन था। क्योंकि अध्ययन शुरू हुआ उन घरों में, जिनमें परिवार के सदस्य तबाह हुए थे। अकसर विशेष परियोजना का संचालन एक कार्यकर्त्ता करता है और संस्था या कलीसिया सभाकक्ष की व्यवस्था कराती है और अधिकारिक रूप से मिशनरी-कार्यों के द्वार खोलती है। कलीसिया निर्णय लेने के लिए इनका चुनाव कर सकता है।

4. **आरम्भिक सुसमाचार प्रचार के रूप**

(क) कलीसिया उस जगह का निर्धारण करती है जहां प्रचार करना है।

(ख) पास्टर या कलीसिया के अधिकारी इस कार्य को करने के लिए किसी अनुभवी कार्यकर्त्ता का चुनाव करते हैं।

(ग) पास्टर या कलीसिया के अधिकारी इस साधारण कर्मचारी को शिक्षा-दीक्षा देते हैं। इस नियमावली का उद्देश्य यह प्रदर्शित करना है कि उन्हें कैसे प्रशिक्षित किया जाए।

(घ) ये साधारण कार्यकर्त्ता गैर-मसीहियों के घर बाइबल-अध्ययन के साथ नया कार्य शुरू करते हैं।

(च) बाइबल-अध्ययन के द्वारा बने नये विश्वासी जो एक मत हों, एक जगह पर एक नयी कलीसिया स्थापित करते हैं जो परमेश्वर की अगुवाई में स्वचालित स्वनिर्मित और स्वप्रचारित होती है।

(छ) किसी कलीसिया के सहयोग के स्थान पर, पायनियर इवैन्ज़लिस्ट, इस नये समूह का मार्गदर्शन करता है- प्रारम्भ से ही सभी निर्णयों को लेने और सारे खर्च को स्वयं वहन करने के लिए। अगर विश्वासियों का यह नया समूह जगह खरीदना या उसे किराये पर लेना चाहे या किसी कार्यकर्त्ता को पारिश्रमिक देना चाहे, तो सारा खर्च स्वयं वहन करे।

II. बाइबल और संस्कृति

मुख्य बातें : प्रत्येक देश की अपनी-अपनी संस्कृति और उपसंस्कृति होती है। इसलिए आरम्भिक सुसमाचार-प्रचारकों को चाहिए कि वे अपने प्रचार का कार्य स्थानीय संस्कृति को ध्यान में रखकर करें। ऐसा न हो कि प्रचारक अन्य देशों की संस्कृति से प्रभावित हो। आरम्भिक प्रचारक का कार्य केवल सुसमाचार का प्रचार करना ही होना

चाहिए। क्योंकि सुसमाचार स्वयं संस्कृति के उन पहलुओं को जो बाइबल से संबंधित न हों बदल देगा।

III. बाइबल और इसका अधिकार

संसार में हर मनुष्य के पास अधिकार का स्रोत है। डा. राल्फ नेबर जूनियर ने अपनी पुस्तक सर्वाइवल किट (ब्रोडमेन प्रेस) में शक्ति के चार स्रोतों का वर्णन किया है जो निर्धारित करते हैं कि क्या सही है और क्या गलत है।

(1) **ज्ञान :** यह वह है जब व्यक्ति अपने ज्ञान के अनुसार यह सिद्ध करता है कि क्या सही और क्या गलत है, क्या सच और क्या झूठ है, क्या संभव और क्या असंभव है, वगैरह-वगैरह। उदाहरणत: एक व्यक्ति जो अपने ज्ञान पर भरोसा करता है वह यीशु मसीह के आश्चर्यकर्मों का इनकार करता है क्योंकि उन्हें वह वैज्ञानिक तरीके से सिद्ध नहीं कर सकता। यशायाह 55: 8 में "यहोवा कहता है," मेरे विचार और तुम्हारे विचार एक समान नहीं हैं, न ही तुम्हारे मार्ग, और मेरे मार्ग एक जैसे हैं।"

(2) **अनुभव :** यह वह है जब एक व्यक्ति अपनी चेतना, ज्ञान और भावना के द्वारा सही और गलत का निर्धारण करता है। उदाहरणत: एक दिन थॉमस वेड ब्राजील के शहर रिओ-डी-जनैरियो से एक टैक्सी में बैठे और ड्राइवर से सुसमाचार के विषय में बातें करने लगे। ड्राइवर ने थॉमस को बताया कि उनकी एक सभा में एक नेत्रहीन व्यक्ति किस तरह दोबारा देखने में सफल हुआ। जब थॉमस ने ड्राइवर से उसके चर्च के विषय में पूछा तो उसने कहा कि वह मसीही नहीं है; और वास्तविकता यह थी कि उसका धर्म मसीहियत से भी संबंधित नहीं था। शैतान के पास आश्चर्यकर्म करने की ताकत है, लेकिन वह किसी को बचा नहीं सकता, सच्ची शांति और क्षमा नहीं दे सकता। शैतान कभी-कभी लोगों को धोखा देने के लिए आश्चर्यकर्मों का सहारा लेता है। पवित्रशास्त्र बाइबल में लिखा है: उस अधर्मी का आना, नाश होने वालों के लिए, शैतान की गतिविधि के अनुसार संपूर्ण सामर्थ्य, चिह्नों, झूठे आश्चर्यकर्मों और दुष्टता के हर धोखे के साथ होगा, क्योंकि उन्होंने सत्य के प्रेम को ग्रहण नहीं किया कि उनका उद्धार हो। इसी कारण परमेश्वर उनपर भरमाने वाली सामर्थ्य को भेजेगा कि वे झूठे की प्रतीति करें। जिससे कि वे सब जिन्होंने सत्य की प्रतीति नहीं की परन्तु दुष्टता में मग्न रहे, दंड पाएं (थिस्सुलुनीकियों 2:9-12)। कुछ लोग इस तरह कहते हैं - मैं जब शराब और नशीले पदार्थों में विश्वास करता हूं या उनका आदी हूं, क्योंकि इनका सेवन करके मैं बेहतर महसूस करता हूँ। इस व्यक्ति के अधिकार का स्रोत इसकी भावनाएं हैं। अपने विश्वास को वर्णित करने का यह बहुत ही भयानक रास्ता है। कुछ कहते हैं कि मैं फलां व्यक्ति या डाक्टर या चंगा करने वाले पर विश्वास करता हूं क्योंकि उसमें बीमारियों से चंगाई देने की सामर्थ है। लेकिन एक आश्चर्यकर्म करने वाला व्यक्ति अपने प्रदर्शनों के द्वारा प्रसिद्धि और सम्पत्ति प्राप्त कर सकता है, लेकिन परमेश्वर से नहीं बच सकता। हम अपना विश्वास आश्चर्यकर्मों, भावनाओं या अनुभव पर आधारित नहीं कर सकते, इसके स्थान पर हमारे विश्वास की नींव मसीह है जो कि परमेश्वर है और जिसके वायदे परमेश्वर के वचन में हैं।

(3) **रीति-रिवाज :** ये उन प्रमुख समस्याओं में से एक थी जिसका सामना यीशु मसीह को करना पड़ा था। वह यहूदियों के रीति-रिवाजों के विरुद्ध थे। क्योंकि यहूदी अपनी

इन रीति-रिवाजों को मनुष्यों की आवश्यकताओं से ज्यादा प्रमुखता देते थे। मरकुस 3:1-6 में हम पाते हैं: फरीसियों द्वारा यीशु की परीक्षा लेना।

पद 1- यहां हम देखते हैं कि जब यीशु यहूदियों के मंदिर में पहुंचते हैं जो लोगों से खचाखच भरा था, और उनके बीचों-बीच एक व्यक्ति खड़ा था जिसका हाथ सूखा था।

पद 2- लोग आपस में कुछ इस तरह फुसफुसाने लगे, "तुमने देखा अभी-अभी किसने प्रवेश किया?" "यीशु" "क्या तुम्हें पता है उधर कौन बैठा है," "सूखे हाथ वाला व्यक्ति" "क्या तुम सोचते हो यीशु उसे ठीक करेगा" "मुझे नहीं मालूम आज तो शनिवार है।"

पद 3-यीशु उस व्यक्ति से कहते हैं "खड़ा हो, आगे आ," और फिर वह भीड़ से प्रश्न करते हैं वास्तव में क्या उचित है? क्या इस व्यक्ति को चंगा करना पाप है?

पद 4-वे सब चुप हो गये और यीशु ने उन्हें उनके हृदय की कठोरता के कारण क्रोध से देखा।

पद 5-यीशु ने उस व्यक्ति से कहा - "अपना हाथ बढ़ा।" उस व्यक्ति ने अपना हाथ बढ़ाया और उसका हाथ पूरी तरह से अच्छा हो गया। परमेश्वर की स्तुति, हो उसका हाथ ठीक हो गया। लेकिन उनके उतर देने का तरीका यह नहीं था। पद 6 पढ़ें।

पद 6- तब फरीसी बाहर निकले और तुरन्त यीशु के विरुद्ध हेरोदियों के साथ सम्मति करने लगे कि किस प्रकार उसे नाश करें। उन्होंने योजना बनाई कि यीशु को उसकी सेवकाई के प्रारम्भ में ही समाप्त कर दिया जाये ....न कि अंत में। क्यों?

1. यहां क्या समस्या थी? – यह सब्त का दिन था।
2. एक व्यक्ति को सब्त के दिन चंगा करने में क्या कठिनाई थी?–पुन: धार्मिक परम्परा।
3. क्या आप विश्वास करते हैं कि यीशु त्रिएक में से एक है और परमेश्वर का पुत्र है?
4. क्या आप विश्वास करते हैं कि वह सब्त का भी परमेश्वर है?
5. क्या आप विश्वास करते हैं कि यीशु ने जब उस व्यक्ति को सब्त के दिन चंगा करके अपने पिता, जो स्वर्ग में है, की आज्ञा का उल्लंघन किया?
6. तब क्या कठिनाई थी?

धार्मिक अगुवों ने भिन्न-भिन्न पारंपरिक नियम और रीति-रिवाज बनाये थे जो परमेश्वर ने नहीं बनाये थे।

पायनियर इवैन्ज़लिज़म और कलीसियास्थापना के समय क्या करें? सब कुछ !!!!!! जब थॉमस वेड एकिंस ब्राजील गये, तो उन्होंने कलीसिया स्थापित करने वालों की एक टीम बनाई। उनमें से बहुत से लोग साधारण थे। उन्होंने सिखाया कि "किस तरह वे गवाही दें और कलीसिया की स्थापना करें।" वे गांवों में गये, लोगों को यीशु के लिए जीता और नयी कलीसिया की स्थापना की और उन्होंने दो साल में 63 कार्यो को आरम्भ किया। इस प्रकार थॉमस एकिंस ने 3 शक्तिशाली रिवाजों का समाना किया जो मनुष्यों द्वारा बनाये गये थे, परन्तु अत्यधिक शक्तिशाली और कलीसिया के शीघ्र विस्तार में रुकावट थे।

परम्परा-1 लोगों को मसीह के लिए जीतने के पश्चात् पास्टर थॉमस वेड ने कहा कि हमें लोगों को जीतने के बाद चाहिए कि ये साधारण सुसचार-प्रचारक नये विश्वासियों को बपतिस्मा दें तथा उनको प्रभु-भोज दें। फिर भी कुछ पास्टरों (सभी नहीं) ने कहा कि वे ऐसा नहीं कर सकते, क्योंकि ये 'ऑर्डेण्ड' नहीं हैं।

थॉमस ने पूछा: "बाइबल यह कहां सिखाती है?" लोगों ने कहा: "बाइबल यह नहीं सिखाती, लेकिन यहां यह हमारी 'परम्परा या नियम हैं।"

आधुनिक अभिषेक का प्रचलन बाइबल में नहीं है, और न ही किसी पारंपरिक अभिषेक का कार्यक्रम है। "ऑरडेन" का अर्थ है–निर्दिष्ट करना, नियुक्त करना, प्रबंध करना, आज्ञा देना। यूहन्ना 15:16 में यीशु ने अपने चेलों को चुना (नियुक्त किया) "तुमने मुझे नहीं चुना, परन्तु मैंने तुम्हें चुना और तुम्हें नियुक्त किया कि तुम फल लाओ और तुम्हारा फल बना रहे।"

प्रेरितों के काम 14:23 में पौलुस प्राचीनों के नियुक्त करता है। पौलुस और बरनाबास ने उनके लिए प्राचीन नियुक्त किए और प्रार्थना और उपवास के साथ उन्हें प्रभु के हाथ में सौंपा जिसपर उन्होंने विश्वास किया था।" ये प्राचीन पौलुस की स्थापित कलीसिया के साधारण अगुवे थे। "अभिषेक" बाइबल के अनुसार परमेश्वर का कार्य था, मनुष्य का नहीं। परमेश्वर नियुक्त करता, चुनाव करता और अगुवों को चुनता है। आज हमारी आधुनिक पद्धति में अभिषेक कुछ ज्यादा ही धार्मिक हो गया है। कुछ देशों में किसी भी अगुवे के अभिषेक से पहले उसे किसी बाइबल कॉलेज या सेमिनरी की शिक्षा को समाप्त करना होता है। यीशु किस सेमिनरी में गया था? पौलुस कौन-सी सेमिनरी में गया था? पतरस या यूहन्ना ने कौन सी सेमिनरी में हिस्सा लिया था?

मैं आपसे एक प्रश्न पूछता हूं: प्रेरित पौलुस को बपतिस्मा किसने दिया था? क्या किसी पास्टर या अगुवे ने? यीशु ने कितने लोगों को बपतिस्मा दिया था?

यह विचार हमें कहां से मिला कि सिर्फ पास्टर ही बपतिस्मा या प्रभु-भोज दे सकते हैं? कलीसिया-क्षेत्र में हम जीवन भर पुराने नियम की पद्धति के अनुसार कार्य करते हैं। जहां लोगों के लिए सारे कार्य पुरोहित करता है। कुछ प्रभाव रोमन कैथोलिक चर्चों का है।

परम्परा-2 थॉमस ने तब कहा- "हमें इन कलीसियाओं को चर्च की तरह स्थापित करना होगा।" कुछ ने कहा- "हम तब तक ऐसा करने नहीं दे सकते, जब तक उनके पास उनकी जमीन या भवन न हो।" पास्टर थॉमस ने उत्तर देते हुए कहा- "बाइबल हमें कहां सिखाती है?" एक बार फिर यही उत्तर था- "बाइबल यह नहीं सिखाती, लेकिन यहाँ यह हमारी परम्परा या नियम है।"
बहुत बार परम्परा परमेश्वर के वचन से शक्तिशाली हो जाती है और वास्तव में यीशु मसीह ने इसी का सामना किया था। अगर हम परमेश्वर के राज्य को बढ़ता देखना चाहते हैं और नये-नये चर्चों की स्थापना करना चाहते हैं तो हमें एक बार फिर बाइबल

की तरफ ध्यान लगाना होगा, उसके वचनों का पालन करना होगा और सारे नियमों, परम्पराओं के ऊपर बाइबल को प्राथमिकता देनी होगी। अगर हम इस संसार में एक वास्तविक कलीसिया-स्थापना-आन्दोलन देखना चाहते हैं तो हमें एक साधारण प्रचारक को अधिकार देने होंगे कि बाइबल के अनुसार कलीसिया निर्माण में जो करना चाहे करें। जब हम परम्पराओं और नियमों को परमेश्वर के वचन से ज़्यादा अहमियत देते हैं तो हम उसके वचन को अयोग्य करार देते हैं। मत्ती के 15:6-9 में यीशु ने ऐसे लोगों को पाखंडी कहा है। "ये लोग होंठो से तो मेरा आदर करते हैं। परन्तु इनका हृदय मुझ से दूर है। ये व्यर्थ मेरी उपासना करते हैं, और मनुष्यों की शिक्षाओं को धर्म-सिद्धान्त करके सिखाते है।"

(4) **परमेश्वर का वचन:** प्रभु का वचन ही वास्तविक अधिकार है। परमेश्वर सच्चाई को अपने लिखित वचनों के द्वारा प्रदर्शित करता है। ये पूर्ण और अटल हैं।
यूहन्ना 8:32 में यीशु ने कहा - "और तुम सत्य को जानोगे और सत्य तुमको स्वतंत्र करेगा।"
यशायाह 40 : 8 में लिखा है-"घास तो सूख जाती है और फूल मुर्झा जाता है, परन्तु हमारे परमेश्वर का वचन सदा अटल रहेगा।"
भजन 119 : 105 कहता है-'तेरा वचन मेरे पांव के लिए दीपक और मेरे मार्ग के लिए उजियाला है।"
भजन 119 : 140 कहता है- "तेरी प्रतिज्ञाएं पूर्णत: तायी हुई हैं, इसलिए तेरा दास उससे प्रेम करता है।"
भजन 119: 160 कहता है- "तेरा संपूर्ण वचन सत्य ही है और तेरा एक-एक धर्ममय नियम सनातन है।"
यूहन्ना 14: 6 कहता है- "यीशु ने कहा- "मार्ग सत्य और जीवन मैं ही हूँ।" बिना मेरे द्वारा कोई पिता के पास नहीं पहुंच सकता।

<u>सत्य क्या है?</u>
(क) प्रभु यीशु मसीह।
(ख) परमेश्वर का वचन।

IV. आरम्भिक मूल प्रचारक कौन हो सकता है? नए नियम की कलीसियाओं में तीन अधिकारी पाए जाते हैं।

क. अध्यक्ष-1 तीमुथियुस 3
ख. सेवक (दास)- 1 तीमुथियस 3 : 8अ, 10अ, 12अ, 13
ग. अगुवे - प्रेरित 14:23, 56 बार नए नियम में आया है। वे कौन हैं प्रेरितों के काम 15: 2अ, 4अ, 6अ, 22; 16:4, 21:8 पौलुस प्रेरित ने नई कलीसियाओं की स्थापना के लिए नीचे लिखी बातों को अपनाया था।

1. <u>वह नगर में गया:</u>
प्रेरितों के कार्य 13:5, 6, 14 :1, 6, 24, 25, (प्रथम यात्रा)
प्रेरितों के कार्य 16: 12, 17 : 1, 10, 15, 18 :1, 19(द्वितीय यात्रा)
प्रेरितों के कार्य 19: 1, 20 : 2 (तृतीय यात्रा)

2. उसने सुसमाचार का प्रचार किया:
प्रेरितों के कार्य 14 : 3, 7, 21, 25
3. उसने खोये हुओं को मसीह के लिए जीता:
प्रेरितों के कार्य 14 : 1, 21, 19 : 8
4. उसने नये विश्वासियों को शिक्षा दी:
प्रेरितों के कार्य 14 : 22, 18 : 23, 19 : 9, 10
5. उसने स्थानीय अगुवों को शिक्षित और तैयार किया:
6. उसने स्थानीय कलीसियाओं को संगठित किया और स्थानीय कलीसियाओं का भार उठाने में स्थानीय अगुवों को चुना: प्रेरितों के कार्य 14 : 23, 20 : 17, 28
7. वह एक नगर को छोड़ दूसरे नगर चला गया: प्रेरितों के कार्य 20:36-38,

नये चर्च की अगुवाई कौन करेगा? ____________________

वहां अगुवा कौन होगा? ____________________

बाइबल के अनुसार कौन पायनियर प्रचारक है?____________________

कलीसिया के चार कार्य : इफिसियों 4:11

क. **प्रेरित** - "वह जो बाहर भेजा गया हो।"

ख. **भविष्यद्वक्ता** - व्यवस्थाविवरण 18 : 18 में उनके जाति-भाइयों में से तेरे समान एक नबी खड़ा करूँगा, और अपना वचन उसके मुंह में डालूंगा और जो-जो आज्ञाएं मैं उसे दूंगा वही वह उनको कह सुनाएगा।

ग. **प्रचारक**-जिसे परमेश्वर ने शुभ-संदेश के प्रचार के लिए बुलाया हो कि वह खोए हुए लोगों के प्राणों को यीशु के लिए जीते। फिलिप्पुस एक सामान्य जन था जो सेवक और एक प्रचारक भी था। प्रेरितों के कार्य 21 : 8 में कहा गया है, "दूसरे दिन वहां से चलकर हम कैसरिया पहुंचे और फिलिप्पुस सुसमाचार-प्रचारक के घर जाकर, जो सातों में से एक था, उसके यहां ठहरे।" वह एक साधारण व्यक्ति था जिसने खोए हुओं को सुसमाचार सुनाया और उन्हें बपतिस्मा दिया। प्रेरितों के कार्य 8 : 12 पौलुस प्रेरित को किसने बपतिस्मा दिया? क्या पास्टर ने, या साधारण जन ने।

घ. **पास्टर-शिक्षक**-"कि पवित्र लोग सेवा कार्य के योग्य बनें" (इफिसियों 4 : 12)। परमेश्वर की योजना अपने अनुयायियों को दान देना है, ताकि वे उन दोनों को सेवकाई में इस्तेमाल कर सकें। 1 पतरस 4 : 10 में लिखा है, "जबकि प्रत्येक को एक विशेष वरदान मिला है, तो उसे परमेश्वर के विविध अनुग्रह के उत्तम भंडारियों के समान एक दूसरे की सेवा में लगाओ।

बाइबल के अनुसार एक पायनियर की योग्यताएं:

1. उद्धार पाया हुआ (प्रेरितों 9)
2. बुलाहट को स्वीकार करना (गलातियों 1:15-16)
3. पवित्र आत्मा से परिपूर्ण (गलातियों 5:16, इफिसियों 5:18 और प्रेरित 13 : 9)
4. उसे परमेश्वर के वचन को प्रयोग करना आना चाहिए (2 तिमुथियुस 2:15)
5. परमेश्वर को प्रसन्न करने और उसकी आज्ञा मानने की इच्छा रखना (1थिस्सलुनीकियों 2:4)
6. नये परिवर्तित लोगों से प्रेम रखना और उनका ध्यान रखना (1 थिस्सलुनीकियों 2:7-12,

तीतुस 1 : 9)

7. यह जानना कि प्रार्थना कैसे करें (1थिस्सलुनीकियों 1: 2, कुलुस्सियों 4 : 2-6)
8. पवित्र जीवन जीना (1तीमुथियुस 5 : 22, तीतुस 1: 7-8)
9. विश्वास में दृढ़ रहना (तीतुस 1 : 9)

आदर्श प्रचारक कौन बन सकता है?-----------------------------------

कौन मूल प्रचारक हो सकता है? जो-----------------------------------

V. पायनियर इवैंजलिस्ट लीडर (पी॰ई॰एल॰) के कर्त्तव्यः

पास्टर, प्रचारक और साधारण आदर्श अगुवों के प्राथमिक कर्त्तव्य क्या हैं। क्या उसे ही सब कुछ करना चाहिए? "नहीं" वह आध्यात्मिक अगुवा है जो लोगों की सेवा करता है।

इफिसियों 4 : 11-12 स्पष्ट व्याख्या करता है कि पास्टर के प्राथमिक कर्त्तव्य क्या हैं। बाइबल बताती है कि परमेश्वर ने कलीसिया को पास्टर और अध्यापक दिये ताकि वे उसे लोगों को परमेश्वर के कार्यों और सेवा के लिए तैयार करें जिससे मसीह की देह की उन्नति हो। इसका अर्थ यह है कि उन्हें व्यावहारिक सेवा के लिये तैयार करना, न कि सिर्फ सिद्धांतों को सीखना। दूसरे शब्दों में पास्टर और अगुवों का प्रथम कर्त्तव्य यह है कि वे साधारण मनुष्यों को यह सिखाएं और उन्हें तैयार करें कि वे उस सेवकाई को पूरा करें जो परमेश्वर ने उन्हें दी है।

एक पास्टर के कार्यों की बेहतर व्याख्या एक फुटबाल टीम से की जा सकती है। एक फुटबॉल टीम में कई खिलाड़ी और एक कोच होता हैं। क्या कोच मैदान में जाकर खेलता है? या खिलाड़ियों को खेल कैसे खेलना है, सिखाता है? इसका उत्तर है हां, वह खिलाड़ियों को सिखाता है कि कैसे खेलें? चर्च का पास्टर या कलीसिया या संस्था का अगुवा सदस्यों की सेवकाई के लिए नहीं, बल्कि लोगों को सिखाने और तैयार करने के लिए होता है कि सेवकाई "किस तरह" करें। उसे अपने सदस्यों को सिखाना चाहिए कि वे सभी कार्य जो वह कर रहा है "किस प्रकार" करें; जैसे कि....किस प्रकार गवाही दें, वचन का प्रचार करें, बपतिस्मा दें, प्रभु भोज दें, वगैरह...वगैरह...सब कुछ।

एक बार थॉमस वेड ने एक कारखाने में बढ़ई के सहायक के रूप में कार्य किया। बढ़ई एक यूनियन से संबंध रखता था। एक दिन वह बढ़ई और थॉमस एक ऊंची मचान पर कार्य कर रहे थे। बढ़ई एक भारी भरकम व्यक्ति था और उसे ऊंची मचान पर इसलिए बैठा था ताकि वह एक बोर्ड को काट सके। उसने चारों तरफ देखा कि कोई देख तो नहीं रहा, फिर उसने कहा, "थॉमस तुम बोर्ड काट दो।" थॉमस ने कहा "हां क्यों नहीं?" आप इस तरह चारों तरफ क्यों देख रहे हैं? तब उसने स्पष्ट किया कि जब तक थॉमस यूनियन का सदस्य नहीं बन जाता तब तक वह न तो बोर्ड काट सकता है और न कील ठोक सकता है।

बहुत से देशों में आज की आधुनिक सेवकाई में 'पास्टर यूनियन' की महक पाई जाती है। पास्टर बपतिस्मा दे सकता, प्रभु भोज दे सकता, वगैरह, लेकिन साधारण कार्यकर्ता नहीं। परमेश्वर का वचन सिखाता है कि हम सब अगुवे हैं। 1पतरस 2 : 4 "तुम भी आत्मिक भवन बनते जाते हो, जिस से याजकों का एक पवित्र समाज बन कर........।" 1 पतरस 2 : 9 में लिखा है, "तुम एक चुना वंश, राजकीय याजकों का समाज एक पवित्र प्रजा और परमेश्वर की निज सम्पत्ति हो।"

हर विश्वासी व्यक्ति एक पास्टर तथा एक अगुवा है और परमेश्वर के राज्य में यूनियन

के लिए कोई स्थान नहीं है। पास्टरों को आवश्यकता है कि वे अपने कार्यों को सेवक और धार्मिक अगुवे के रूप में देखें और जनसामान्य को हर रूप की सेवकाई में शामिल करें।

यीशु ने 12 शिष्यों को सिखाने में 3 साल बिताए। विश्व पर प्रभाव छोड़ जाने का वह एक पूर्ण आदर्श है। उसने गुणन क्रिया के मूल सिद्धांत का प्रयोग किया। जो कुछ उसने किया हमें भी वही करना चाहिए। यीशु ने क्या किया?

यीशु की दो प्रकार की सेवकाई थी:

1. उसने जनता की सेवकाई की। उसने भीड़ को उपदेश दिया।
2. उसने व्यक्तिगत सेवकाई की। उसकी व्यक्तिगत सेवकाई थी जिसने सबसे ज़्यादा विश्व को प्रभावित किया।

अपनी व्यक्तिगत सेवकाई में उसने तीन कार्य किये:

1. उसने चेलों की टीम तैयार की। उसकी टीम में कितने लोग थे? 12 लोग। आपको 12 से शुरुआत करने की आवश्यकता नहीं है। अगर आपके पास एक है तो उससे शुरुआत करें। अगर आपके पास कोई नहीं तो आप किसी को जीतें।
2. **उसने अपनी टीम को सिखाया :** यह मैनुअल आदर्श सेवकाई का प्रयोगात्मक हिस्सा सिखायेगा कि आप "किस तरह" अपनी टीम को सिखाएँ।
3. **उसने अपनी टीम को बाहर भेजा:** नये चर्च की स्थापना तथा चर्च की उन्नति के लिए टीम के सदस्यों को किस तरह बाहर भेजें, इसके कई तरीके हो सकते हैं। 12 सदस्यों की टीम के प्रयोग के लिए 3 साधारण तरीके इस प्रकार हैं :

* अपने शहर या समाज को 12 भागों में विभाजित करें और अपने प्रत्येक सदस्य को शहर के एक भाग का कप्तान बना दें। वे अपने उस भाग में प्रचार करने के लिए उत्तरदायी होंगे।
* नया कार्य शुरू करने के लिए आप उन्हें कप्तान के रूप में 12 विभिन्न पड़ोसी जगहों, शहरों, कस्बों, तथा गांवों में भेज दें। ताकि नया कार्य शुरू हो।
* या चर्च की बेहतर उन्नति के लिए कुछ को समाज में प्रचार के लिए भेजें, और बाकियों को नया कार्य शुरू करने के लिए अन्य पड़ोसी जगहों, शहरों, गांवों, कस्बों में भेजें। (हर कप्तान समय पर अपनी एक स्वयं की, दो या ज्यादा लोगों की उप-टीम बनायेगा और जो कुछ उसने सीखा उन्हें सिखायेगा। तब कप्तान के टीम के सदस्य अपने क्षेत्र में नया कार्य शुरू करने के लिए जिम्मेदार होंगे।

पायनियर अगुवा प्रचारक चेलों की टीम भी साधारण व्यक्तियों के द्वारा बनायेगा और उन्हें सिखायेगा, तत्पश्चात कप्तान की टीम से सदस्य अपने अधीन क्षेत्रों में सुसमाचार प्रचार के उत्तरदायी होंगे या उन क्षेत्रों में नया कार्य आरम्भ करने के लिए जिम्मेदार होंगे।

पायनियर इवैन्ज़लिस्ट अगुवे को आम जनता में से कुछ लोग लेकर सुसमाचारीय शिष्यता दल बनाना होगा और उस दल को प्रशिक्षित करना होगा ताकि वह दल सुसमाचार प्रचार कर सके, शिष्य बना सके और कलीसियाओं का निर्माण कर सके। यह नियमावली आपका मार्गदर्शन करेगी कि आप कैसे इस कार्य को करें, परन्तु सर्वप्रथम तो आपको अपने दल का विकास करने की आवश्यकता है। यदि आपको प्रशिक्षण हेतु विश्वासी जन नहीं मिलते हैं तो आपको सबसे पहले विश्वासी जन बनाने

होंगे। मसीह के लिए लोगों को जीत लेने के बाद ही आप उन्हें शिष्य बना सकेंगे और फिर उनका दल भी बना पायेंगे। आपका मूल उद्देश्य है कि आप शिष्यों की टीम बनाएं जिसे आप प्रशिक्षित कर सकें। ताकि वह टीम पायनियर इवैन्ज़लिस्ट बन सके, तब उसे आप भेज सकें। इस टीम को हम प्रशिक्षण में पायनियर कहते हैं। प्रत्येक पायनियर का लक्ष्य होगा कि वह पायनियर इवैन्ज़लिस्ट लीडर (PEL) बन सके और उसके बाद वे स्वयं अपने शिष्यों पर पायनियरों की टीम बना सके। यह एक निरंतर बढ़ने वाली प्रक्रिया है।

आप दो प्रकार से अपना दल बना सकते हैं:

1. सार्वजनिक घोषणा द्वारा : आप 'पुलपिट' से सूचित कर सकते हैं कि आप एक शिष्यता संबंधी सेवकाई का गठन करने जा रहे हैं और प्रत्येक इच्छुक व्यक्ति को सम्भागी होने के लिए निमन्त्रण दे सकते हैं। परमेश्वर अवश्य कुछ लोगों को उभारेगा जिन्हें आपने नहीं चुना : जैसे - आपने मत्ती को चुना जो चुंगी लेने वाला था कि वह चेला बने।

2. व्यक्तिगत रीति से : प्रार्थना करें कि परमेश्वर आपकी टीम का सदस्य बनने के लिए परमेश्वर किसे चाहता है। तब उनके पास व्यक्तिगत रूप से जायें और टीम में शामिल होने के लिए आमन्त्रित करें। उन्हें बताएं कि आप हर सप्ताह एक बार जमा होंगे। तब आप उन्हें सिखाएं और प्रशिक्षित करें। तब उन्हें मसीह के लिए आत्माएं जीतने के लिए भेजें।

पायनियर इवैज़लिस्ट मिनिस्ट्री में (PEL) के दो मुख्य उत्तरदायित्व हैं।:

1. पहला प्रारम्भिक उत्तरदायित्व कि वह उन्हें एक-एक करके या छोटे समूहों में प्रशिक्षित करे। यह ऐसा प्रशिक्षण है जो भीड़ में या बड़े समूहों में नहीं दिया जा सकता है। उसे उन्हें छोटे समूह में प्रशिक्षित करना चाहिए। सभी पास्टर या अगुवे टीम बना सकते है। हमारी सलाह है कि एक टीम में 12 सदस्य हों। ये आपके शिष्य होने चाहिए जिन्हें आप प्रशिक्षण देंगें। यदि टीम बनाने के लिए आपके पास विश्वासी जन नहीं है तो आपको शून्य से आरम्भ करना होगा। पहले आप उन्हें विश्वास में लाइए तब प्रशिक्षण दीजिए। आपका लक्ष्य यह होना चाहिए कि टीम में शिष्य हों और पायनियर भी हों। आप प्रति सप्ताह प्रार्थना, विचारविमर्श, रिर्पोट देने और प्रशिक्षण के लिए मिलेंगे।

   डा. वेलन मूर अपनी पुस्तक, 'शिष्यों की संख्या बढ़ाना' में निम्नलिखित बातें बताते हैं

   (क) शिष्य बनाने की सेवकाई सर्वाधिक अच्छा उपाय है : जिसमें व्यक्तिगत सेवकाई की अनगिनत संभावनाएं होती हैं।
   (ख) शिष्य बनाने की सेवकाई सबसे अधिक लचीली सेवकाई है।
   (ग) सुसमाचार-प्रचार के लिए मसीह की देह को प्रोत्साहित करने के लिए शिष्यता सबसे तेज एवं सुरक्षित उपाय है।
   (घ) अन्य सेवकाइयों की अपेक्षा शिष्यता में फल लाने की दीर्घकालीन क्षमता होती है।
   (च) कलीसिया के लिए शिष्यता परिपक्व ले-लीडर्स लीडर जो परमेश्वर के वचन पर आधारित तथा मसीह केन्द्रित होते हैं, तैयार करती है।

2. पी.ई.एल. की दूसरी जिम्मेदारी यह है कि वह पायनियरों से प्रत्येक सप्ताह भेंट करे। उसे

अपनी टीम के पायनियरों के साथ कम से कम एक घंटा अवश्य व्यतीत करना चाहिए। सदस्यों पर प्रभाव रखने के लिए आपको कम से कम सप्ताह में एक बार अवश्य मिलना चाहिए। इन सभाओं में क्या करना चाहिए :

(क) पी.ई.एल. को प्रत्येक सभा प्रार्थना से आरम्भ करना चाहिए। हम आत्मिक संग्राम में हैं और हमारा एकमात्र बचाव प्रार्थना है।

(ख) प्रत्येक पायनियर से कहिए कि वह सप्ताह भर के जय के अनुभव बताये।

(ग) पायनियर से कहें कि वह सप्ताह भर की समस्याओं को बताए जिनका उन्हें सामना करना पड़ा, और उनके नोट बनाएं।

(घ) प्रत्येक समस्या पर आप पायनियर के साथ विचारविमर्श करें।

(च) पायनियर इवैंन्ज़लिज़्म मैनुअल की व्यावहारिक बातों का प्रयोग करते हुए टीम को प्रशिक्षित करें। उदाहरणार्थ : "अपनी गवाही कैसे दें" या "सुसमाचार प्रचार" अध्याय में दोबारा पढ़ना ताकि पायनियर को यकीन हो कि वह आत्मा बचा सकता है। या "प्रार्थना" विषय पर लिखा अध्याय आवश्यकतानुसार दोहराया जा सकता है या अन्य 'इन डायरेक्ट मैथड' या 'स्थानीय अगुवे कैसे तैयार करें' आदि। इस समय को अपने सेवकों को प्रशिक्षित करने में व्यय करें।

(छ) टीम को कुछ व्यावहारिक बातें भी सिखाएं: जैसे उपदेश कैसे बनाया जाता है। परामर्श कैसे दिया जाता है। पायनियर को अच्छी तरह से प्रशिक्षित करने का उत्तरदायित्व पी.ई.एल. का है।

(ज) पायनियरों को सामान्य निर्देश देने के बाद सभा को प्रार्थना से समाप्त करें। (इससे संबंधित बातें अध्याय "वीकली फॉलोअप ऑफ द पायनियर" में देखें)

यदि पायनियर दूर स्थान पर रहते हैं तो पी.ई.एल. को एक माह में एक या दो बार लंबी सभाएं करना चाहिए। पत्रों द्वारा भी उनसे संपर्क किया जा सकता है। संत पौलुस ने भी ऐसा ही किया था। यह अति आवश्यक बात है कि पी.ई.एल. समय-समय पर अपने सब पायनियरों से भेंट करता रहे और सभाओं का आयोजन करता रहे।

पास्टर या अगुवे का मुख्य कार्य क्या है:

क्या आप उस समूह (टीम) को बनाने के लिए और उसे बाहर भेजने के लिए वचनबद्ध हैं?

VI. प्रचारकीय शिष्यता टोली

इसके छः लक्ष्य हैं

1. खोई आत्माओं को जीतना
2. नये विश्वासियों को बपतिस्मा देना
3. नये विश्वासियों से संम्पर्क करना तथा उनको शिष्य बनाना
4. स्थानीय अगुवों को शिक्षित करना
5. नयी कलीसियाओं को इस ढंग से संगठित करना कि वे स्वयं अपना पालन पोषण करें, स्वयं अपना प्रशासन चलाएं और स्वयं बढ़ें और फैल सकें।
6. नये कार्यों को जितना जल्दी हो सके उतना जल्दी गुणात्मक रूप से आरम्भ करें। ताकि जल्दी

ही नए प्रचारकों द्वारा नई मंडली को बनाया जा सके और उन्हें शिक्षित किया जा सके कि वे नए कार्यों को आरम्भ कर सकें।

VII. कलीसियाओं का सफलतापूर्वक आरम्भ कराने के नौ मूलभूत सिद्धांत

क. उन लोगों की पहचान करें जिनके पास नया कार्य आरम्भ करने के आत्मिक दान हैं। रोमियों 12 : 6-8, 1कुरिन्थियों 12 : 4-11

ख. साधारण लोगों की अगुवाई को विकसित करना।

ग. कलीसिया के स्वभाव को बाइबल के आधार पर ठोस रूप से समझना।

एक कलीसिया..............................।

कलीसिया के पांच उद्देश्य यह हैं: प्रेरितों 2:42-47

1. प्रशंसा
2. सुसमाचार-प्रचार
3. शिष्यता
4. सेवकों के मध्य सेवाएं
5. संगति

कलीसिया का स्वभाव यह है:

1. परमेश्वर की अगुवाई में आत्म-प्रशासित हो
2. परमेश्वर की अगुवाई में स्वावलंबी हो
3. परमेश्वर की अगुवाई में स्वयं द्वारा बढ़ने और फैलने वाली हो

घ. उन क्षेत्रों की पहचान करना जहां पर कार्य किया जा सकता है

ङ बहुत जल्दी यीशु में अपने विश्वास का आदान-प्रदान करें
भजन 126:6

च. घरों में कलीसिया शुरू करने के लिए ज़ोर डालें।

इन पदों में नई कलीसियाएं कहां मिलती थीं?

प्रेरितों के काम 16 : 40 ....
प्रेरितों के काम 17 : 5-7 ....
प्रेरितों के काम 18 : 7 ....
प्रेरितों के काम 19 : 9 ....
प्रेरितों के काम 20 : 20 ....

पौलुस की सेवकाई का क्या परिणाम निकला? प्रेरितों के काम 19:10,20

उसने यह कैसे किया? 2 तीमुथियुस 2:2 के अनुसार, "और जो बातें तूने बहुत गवाहों के सामने मुझ से सुनी हैं, उन्हें विश्वासी मनुष्यों को सौंप दे, जो औरों को भी सिखाने के योग्य हों।"

उसकी सफलता का भेद क्या था? ....

छ. एक ऐसी स्तुति और अराधना सभा देने की कोशिश करें जो लोगों के लिए आनंदमय हो और जिसमें विश्वासी खुश हों।

ज. लोगों पर "सम्पत्ति का भार न डालें"

झ. कार्य के आरम्भ से ही प्राथमिकता को ध्यान में रखें। ताकि इन दो सिद्धांतों के द्वारा जितना जल्दी हो सके, कार्य को गुणात्मक रूप से फैलाया और बढ़ाया जा सके।

1. साधारण लोगों को शिक्षा देते हुए नए काम करने वालों की संख्या बढ़ाएं।
2. नए विश्वासियों को नए कार्य करने के लिए शिक्षित करें ताकि वे नए कार्य करने के लिए दर्शन प्राप्त कर सकें।

VIII. आरम्भ होने के पश्चात् बढ़ती हुई कलीसियाओं के छः मुख्य सूत्र

क. एक प्रार्थना की सेवकाई

ख. एक स्तुति और प्रशंसा की सेवकाई

1. बपतिस्मा

(अ) * उचित प्रत्याशी
(ब) * उचित अधिकार
(स) * उचित प्रबंधक
(द) * उचित तरीका
(य) * उचित उद्देश्य

2. प्रभु-भोज

(अ) * उचित भागीदार
(ब) * उचित अधिकार
(स) * उचित प्रबंधक
(द) * उचित उद्देश्य

ग. प्रचारकीय सेवकाई

घ. शिष्यता की सेवकाई

ङ संगति की सेवकाई

च. उचित प्रशासन

IX. नये नियम की कलीसिया के तीन मुख्य गुण

अ. परमेश्वर की अगुवाई में स्वयं द्वारा प्रशासित हो।

स्व-शासन का सिद्धांत बहुत महत्वपूर्ण है, उन लोगों के लिए जो प्रजातंत्र में विश्वास करते हैं। कलीसिया के आत्मिक जीवन पर इस सिद्धांत का परिणाम इतना प्राणदायक है कि अगर इस क्षेत्र में वे असफल हुए तो यह एक नयी और आत्मनिर्भर कलीसिया स्थापित करने के प्रयास के साथ समझौता करना जैसा होगा।

* स्व-शासित कार्य-प्रणाली स्वावलंबन तथा स्व-प्रसारण के क्षेत्र में आत्मिक जिम्मेवारी का बोध कराती है। स्वशासन को नये लोगों के हाथों में न देना, नये चर्च-निर्माण में घुटन उत्पन्न करेगा।

हमें कुछ व्यवहारिक पहलुओं पर ध्यान देना चाहिए:

1. पायनियर इवैन्जलिस्ट शहर में प्रवेश करेगा और मसीह के लिए आत्माएं जीतेगा।

2. वह चार्ल्स ब्रॉक की कहानी या अन्य साधनों द्वारा बाइबल-अध्ययन और आरम्भिक सिद्धांत की बातें सिखाएगा।
3. नये परिवर्तित लोगों को बपतिस्मा देगा और चेला बनायेगा।
4. पवित्र आत्मा क्षेत्रीय अगुवों को जागृत करेगा। अगर पायनियर ऐसा होने देगा तो नये परिवर्तित लोग बाइबल के सिद्धांतों को सीखेंगे।
5. परिवर्तित लोग अगर सिद्धांत पर सहमत हों तो वे कलीसिया संगठित करने की योजना बना सकते हैं।
6. स्थानीय समूह अपना अगुवा चुनेगा

ब. परमेश्वर के नेतृत्व में स्वयं-पोषित।

जब नयी कलीसिया प्रयास करती और संघर्ष करती है तो बढ़ती है। मिशनरी चार्ल्स ब्रॉक ने अपनी पुस्तक "स्वेदशी चर्च स्थापना (Indigenous Church Planting) में स्पष्ट किया है कि क्या परिणाम होता है यदि एक व्यक्ति तितली को उसके ककून से मुक्त कराने की कोशिश करे। एक तितली अपना ककून (खोल) छोड़ने के लिए संघर्ष करती है और व्यक्ति को सिर्फ देखते रहना है। अगर वह अपना धीरज खोकर उस लारवे की मदद करते हुए उस खोल के धागों को चाकू से काट देता है तो लारवे का सारा संघर्ष समाप्त हो जाता है। इस प्रकार परिणाम यह होगा कि वह असहाय तितली केवल कुछ ही मिनट जीवित रह सकेगी। दर्शक की तरह मदद करना जीवन का एक नियम तोड़ना है। अगर वह व्यक्ति उस तितली (लारवे) को संघर्ष करने देता तो परिणामस्वरूप वह एक सुन्दर, स्वस्थ, शक्तिशाली संपूर्ण तितली पाता।

जब क्षेत्रीय विश्वासी संघर्ष करते, विश्वास में बढ़ते परमेश्वर का अनुसरण करते, परमेश्वर पर आश्रित हो सभी साधनों को पाकर विश्वास में दृढ़ और शक्तिशाली बनते हैं तो जैसा परमेश्वर उससे चाहता है वह बन जाता है। बहुत-सी कलीसिया के भवनों के सामने नाम लिखें होते हैं: "पहला बैप्टिस्ट चर्च" परन्तु यह कहना अधिक सही होगा: "पहली बैप्टिस्ट कलीसिया यहां इकट्ठी होती है।" अंतर क्या है? पहला चिन्ह दर्शाता है कि 'भवन' चर्च है; परन्तु दूसरा चिन्ह बताता है कि 'कलीसिया के लोग' यहां मिलते हैं, और लोग ही कलीसिया हैं।

नीचे दिए गए फार्म को ध्यान से देखें और एक कलीसिया को परम्परागत विधि के द्वारा स्थापित करने की कीमत का निर्धारण करें:

कलीसिया के संस्थापक का मासिक वेतन......... x 12 महीने x 7 वर्ष=रु. ....
कलीसिया के संस्थापक के घर का किराया ...... x 12 महीने x 7 वर्ष=रु. ....
सम्पत्ति...=रु. ....
भवन..=रु. ....
एक कलीसिया पर कुल खर्चा ....=रु. ....

स. परमेश्वर की अगुवाई में स्वयं बढ़ना।

नये नियम की कलीसियाएं स्वत: प्रचार करने वाली हैं। अपने इसी गुण के साथ वह अपना जीवन दूसरों के साथ बांटती हैं। इस प्रकार की कलीसियाएं सुसमाचार प्रचारक होती हैं और नयी कलीसियाओं को स्थापित करने की इच्छा रखती हैं।

संसार में सामाजिक विघटन द्वारा हमें नये नियम की कलीसिया बनानी चाहिए जो स्वयं अन्य कलीसिया बनाये और इस तरह हम शहरी और ग्रामीण क्षेत्रों में पहुंच सकते हैं।

प्रारम्भ में पायनियर, एक इवैन्ज़लिस्ट होता है। वह आत्माओं को जीतता, उन्हें चेला बनाता और नये विश्वास के प्रारम्भिक सिद्धांतों को सिखाता है। अगला कदम होता है क्षेत्रीय अगुवों को प्रभु की इच्छानुसार प्रशिक्षित करना, उन्हें सिखाना और उन्हें आस-पास की नई जगहों, नये शहरों तथा गांवों में नया कार्य शुरू करने की आज्ञा देना। यह क्रम चलता रहता है, जैसे उस कलीसिया ने नई कलीसिया को आरम्भ किया। अन्वेषक धर्मप्रचारक को क्षेत्रीय अगुवों को तैयार करना जारी रखना, और कलीसिया में विभिन्न समूहों को बनाना चाहिए। फिर उसे कार्य को इन्ही क्षेत्रीया अगुवों पर छोड़ देना चाहिए। परन्तु लगातार उनसे मिलते रहना और प्रोत्साहित करते रहना चाहिए।

X. निष्कर्ष

आरम्भिक मूल प्रचारक यदि कलीसिया की स्थापना में सफलता प्राप्त करना चाहता है तो उसे यह करना चाहिए:

1. वह पूर्णरूप से तैयार और प्रशिक्षित हो।
2. चेलों और प्रचार की मंडली को कैसे तैयार करना है, वह जानता हो।
3. संसार में जाकर खोए हुए जीवन को यीशु के लिए जीतना इस सिद्धांत के द्वारा कि "आप बाहर जाएं", न कि "यहां आएं।"
4. आनंदमय अराधना सभा का आरम्भ करें।
5. कैसे नए विश्वासियों को चेला बनाना है और उन्हें लगातार प्रभु में बढ़ाना है, उसे मालूम होना चाहिए।
6. कैसे नए अगुवों को प्रशिक्षित करना है, उन्हें मालूम होना चाहिए।
7. कैसे नए विश्वासियों को बपतिस्मा देना और प्रभु-भोज को मनाना चाहिए, उन्हें मालूम होना चाहिए।
8. स्थानीय लोगों को शिक्षित करें कि कैसे लोगों को जीतना है और अविश्वासियों के घरों में बाइबल-अध्ययन आरम्भ करना है।
9. नए विश्वासियों को शिक्षित करें कि वे नई कलीसिया की अगुवाई करें।
10. कलीसिया की अगुवाई करें कि वह स्वयं प्रशासित, स्वयं पोषित और स्वयं द्वारा बढ़ने वाली हो।
11. नए विश्वासियों को शिक्षित करें कि वे नए कार्य के लिए प्रचार-मंडली तैयार कर सकें।

व्यावहारिक पहलू
अपने समूह (टोली) को कैसे प्रशिक्षित करें

I. आरम्भिक प्रचारक और पवित्र आत्मा

क. पवित्र आत्मा के गुणः

1. इब्रानियों 9:141–पवित्र आत्मा अनन्त है।
2. भजन संहिता 139: 7–10–पवित्र आत्मा सर्वउपस्थित है।
3. लूका 1:35–पवित्र आत्मा सर्वशक्तिमान है।
4. यूहन्ना 14:12, 26–पवित्र आत्मा सर्वज्ञानी है।

ख. खोए हुए व्यक्ति के साथ पवित्र आत्मा का कार्यः

1. यूहन्ना 15:26, 27–गवाही देता है कि यीशु सत्य है।
2. यूहन्ना 16: 8–11–संसार को पाप के प्रति, न्याय के प्रति और दंड के प्रति कायल करता है।

ग. एक मसीही के जीवन में पवित्र आत्मा का कार्यः

1. 2 कुरिन्थियों 1:22, इफिसियों 1:13–14 अनन्त जीवन का आश्वासन देता है
2. तीतुस 3:5 मसीही का नवीनीकरण करता है
3. रोमियों 8:2 पाप और मृत्यु की व्यवस्था से स्वतंत्र करता है
4. इफिसियों 3:16 परमेश्वर की आत्मा के द्वारा अन्तरात्मा में शक्ति प्रदान करता है
5. प्रेरितों 1:8 गवाही देने के लिए नया और स्वतंत्र करता है

घ. पवित्र आत्मा की परिपूर्णताः

1.	इफिसियों 5:18	विश्वासी को पवित्र आत्मा से भरा होना है
2.	गलातियों 5:22–23	पवित्र आत्मा के फल दिखाई देने चाहिए
3.	प्रेरितों 4:29, 31,	परमेश्वर का वचन बांटने का साहस देता है

ड. पवित्र आत्मा से भरे जाने के लिए आवश्यक शर्तेंः

1. प्रेरित 2:38 प्रभु में बचा हुआ हो
2. 1 यूहन्ना 1: 9, भजन 66,18 सभी ज्ञात पापों से अंगीकार करें
3. 1 यूहन्ना 5: 14–15, रोमियों 1:17 विश्वास द्वारा पवित्र आत्मा से मांगे कि वह आपको भरे और नियन्त्रित करे
4. प्रेरितों 5:32 प्रतिदिन प्रत्येक क्षण प्रभु की आज्ञा का पालन करें।

व्यवहार में लाएं: पवित्र आत्मा से प्रार्थना करें और मांगे कि यदि आपके जीवन में कोई ज्ञात पाप है तो वह प्रकट करे और आप सब पापों से पश्चाताप करें, और पवित्र आत्मा से कहें कि वह आपके जीवन को अपने पूर्ण नियंत्रण में ले ले।

II. आरम्भिक प्रचारक और प्रार्थना

यहां पर प्रार्थना के आठ पहलू दिये गए है जिन्हें कोई भी परमेश्वर के साथ अपने निजी समय में प्रयोग कर सकता है।

(अ) स्तुति और आराधना – भजन 48:1, भजन 34:1–3, भजन 22:3

1. परमेश्वर के भजन गाएं
2. प्रशंसा के गीत या कोरस गाएं अथवा पढ़ें
3. एक प्रार्थना के रूप में परमेश्वर के लिए आप स्तुति के परिच्छेद पढ़ें
4. भजन 8, 9, 24, 65, 92, 104, 139, इत्यादि।

(ब) अंगीकार – 1 यूहन्ना 1: 9

(स) धन्यवाद देना – फिलिप्पियों 4: 6

(द) परमेश्वर की आवाज सुनना – मत्ती 11 : 15

बाइबल में से एक पुस्तक पढ़ना आरंभ करें। उदाहरण के लिए इफिसियों 1:1

- परमेश्वर के वचन में प्रत्येक पद को पढ़े और परमेश्वर से मांगे कि वह आपको उन पदों में आत्मिक सत्यों को आप पर प्रकट करे। परमेश्वर को वचन के द्वारा अपने से बात करने दें और जो आत्मिक सत्य आपको प्राप्त हुए हैं, उन्हें अपने जीवन पर लागू करें।

  1 ______________________________
  2 ______________________________
  3 ______________________________
  4 ______________________________

- प्रत्येक पद को व्यक्तिगत रूप से देखें। परमेश्वर आप से बात करता है।

  1 ______________________________
  2 ______________________________
  3 ______________________________
  4 ______________________________

- परमेश्वर से प्रार्थना करने में आत्मिक सच्चाइयों का प्रयोग करें।

(य) एक दूसरे के लिए प्रार्थना करना – इफिसियों 6: 18; प्रत्येक दिन के लिए, पूरे सप्ताह की प्रार्थना-सूची बनाएं।

(र) मनन और पवित्रशास्त्र के पदों को कण्ठग्र करना – यहोशू 1: 8

(ल) विनती – इब्रानियों 4: 16

III. आरम्भिक प्रचारक और उद्धारः

(अ) सुसमाचार क्या है? 1कुरिन्थियों 15: 4 ______________________________

____

(ब) अनन्त जीवन क्या है? यूहन्ना 17: 3 ______________________________

____

(स) पश्चाताप क्या है? मरकुस 1: 15 ______________________________

____

(द) विश्वास क्या है? मरकुस 1: 15 ______________________

____

IV. आरम्भिक प्रचारक और निजी गवाही

(अ) प्रभु यीशु में आने के पहले मेरा जीवन कैसा था? प्रेरित 22: 1–5

____

(ब) मैंने कैसे महसूस किया कि मुझे यीशु की आवश्यकता है? प्रेरित 22: 6–8

____

(स) मैंने कैसे और कहाँ यीशु को स्वीकार किया? प्रेरित 22: 9–13

____

(द) यीशु को ग्रहण कर लेने के बाद मेरे जीवन में क्या परिवर्तन आया है? प्रेरित 22: 14–18

____

V. आरम्भिक प्रचारक और सुसमाचार

चाहे कोई प्रचारक मसीही अथवा गैर-मसीही संस्कृति पर आधारित समाज में सेवा कर रहा हो, सुसमाचार का सार कभी भी नहीं बदलेगा। ये छः पद स्पष्टता से सुसमाचार के सार का बड़ी स्पष्टता से वर्णन करते हैं।

(क) आपके जीवन के लिए परमेश्वर के पास एक उद्देश्य है।

1 यूहन्ना 5: 13

- **पद का उद्देश्य:** हमें यह दर्शाने के लिए कि हम यह निश्चयपूर्वक जान सकते हैं कि हमारे पास अन्नत जीवन है।
- **पद की व्याख्या:** अन्नत जीवन में दो बातें हैं:

  1. यीशु मसीह को जानना और तुरन्त उसकी शान्ति का अनुभव करना।
  2. यीशु मसीह के साथ अनन्त तक स्वर्ग में निवास करना।
- **पद की व्यावहारिकता:** क्या आपके पास अन्नतजीवन का आश्वासान है?

(ख) आपकी आवश्यकता

रोमियों 3:23

- **पद का उद्देश्य:** यह दिखाना कि हम सब पापी हैं।
- **पद की व्याख्या:** परमेश्वर की आज्ञा का उल्लंघन पाप है।
- **पद की व्यावहारिकता:** क्या आपने पाप किया है?

रोमियो 6:23

- **पद का उद्देश्य:** यह दिखाने के लिए कि यही एकमात्र पाप की मज़दूरी है।
- **पद की व्याख्या:** मृत्यु का अर्थ है परमेश्वर से दो प्रकार से अलगाव।

  1. परमेश्वर से अलगाव पृथ्वी पर इसी जीवन में है।

2. परमेश्वर से अलगाव – अनन्त तक।

- **<u>पद की व्यावहारिकता:</u>** क्या आप समझते हैं कि अपने पापों के कारण आप परमेश्वर से अलग होने के हकदार हैं?

(ग) परमेश्वर का प्रावधान

रोमियों 5: 8

- **<u>पद का उद्देश्य:</u>** पाप का समाधान दर्शाने के लिए।
- **<u>पद की व्याख्या:</u>** यीशु मसीह को सताया गया, सजा मिली और क्रूस की मृत्यु को सहा ताकि हमारे बदले पाप की एकमात्र मज़दूरी, क्रूस की मृत्यु के द्वारा चुका सके।
- **<u>पद की व्यावहारिकता:</u>** क्या आप विश्वास करते हैं कि यीशु मसीह ही एकमात्र आपके पापों की मज़दूरी है?

(घ) आपका प्रत्युत्तर

रोमियों 10: 9

- **<u>पद का उद्देश्य:</u>** यह दिखाना कि यीशु को किस तरह प्रभु और मुक्तिदाता स्वीकार करें।
- **<u>पद की व्याख्या:</u>** यीशु को स्वीकार करने के लिए आपको दो कार्य आवश्यक करना होगा।

(अ) यीशु को अपना एकमात्र प्रभु मानें

(ब) अपने हृदय में विश्वास करें कि यीशु मसीह मुर्दों में से जी उठा और केवल सही आपका उद्धारकर्ता है। इसका अर्थ अपना जीवन यीशु को समर्पित करना है।

- **<u>पद की व्यवहारिकता:</u>** क्या आप अपने जीवन में यीशु को प्रभु और उद्धारकर्ता के रूप में स्वीकार करना चाहते हैं?

(च) रोमियो 10:13

- **<u>पद का उद्देश्य:</u>** यह दर्शाना कि जो कोई प्रभु का नाम लेगा उद्धार पायेगा।
- **<u>पद की व्याख्या:</u>** आप इसी समय प्रभु यीशु को विश्वास के साथ अपने हृदय में ग्रहण कर सकते हैं।
- **<u>पद की व्यावहारिकता:</u>** क्या आप प्रार्थना करना और यीशु को इसी समय अपने हृदय में ग्रहण करना चाहते हैं?

VI. एक नई कलीसिया कैसे आरम्भ करें:

आपको यह पक्का विश्वास होना चाहिए कि पवित्र आत्मा आपकी अगुवाई कर रहा है और खोए हुए लोगों के हृदयों को तैयार कर रहा है।

(अ) ऐसे मनुष्य की खोज करें जो शान्ति प्रिय है – लूका 10: 5

<u>गैर-मसीही संस्कृति आधारित लोगों के लिए प्रश्न:</u>

1. परमेश्वर के बारे में आपकी सोच-समझ क्या है?
2. क्या आप सृष्टिकर्ता परमेश्वर के बारे में सीखना चाहेगे और यह कि आप परमेश्वर को निजी रूप से कैसे जान सकते हैं?
3. क्या मैं आपके साथ सृष्टिकर्ता परमेश्वर के विषय में एक कहानी बांट सकता हूं?

<u>मसीही संस्कृति आधारित लोगों के लिए प्रश्न:</u>

1. क्या आप अपने जीवन में कभी ऐसे बिन्दु पर पहुंचे हैं जहां आप का संबंध प्रभु यीशु के साथ व्यक्तिगत रूप से स्थापित हुआ अथवा अभी आप इसकी प्रक्रिया में से होकर उस बिंदु की ओर अग्रसर हो रहे हैं?
2. क्या आपको विश्वास है कि यदि आज रात आप मर जाते हैं तो स्वर्ग जाएंगे?
3. क्या आप अपने घर में बाइबल अध्ययन कराने के इच्छुक हैं?

(ब) परमेश्वर का प्रेम व्यावहारिक रूप में दर्शाइए: यूहन्ना 13: 34–35

यूहन्ना 13:34 में यीशु मसीह ने हमें एक नई आज्ञा दी कि हमें **"एक दूसरे से प्रेम रखना है"** और उसने यह निर्देश दिया कि किस प्रकार हम एक दूसरे से प्रेम रखें। .... कि **"जैसे मैंने तुमसे प्रेम रखा है, वैसे ही तुम भी एक दूसरे से प्रेम रखो।"**

<u>हमें एक दूसरे से प्रेम वैसे ही प्रेम रखना है "जैसे यीशु प्रेम रखता है।"</u>

अब प्रश्न उठता है: यीशु हमसे कैसे प्रेम रखता है?
बहुत से तरीके हैं लेकिन हम यहां केवल दो की बात करेंगे।

1. बिना शर्त (मत्ती 9: 9–13): यीशु ने मत्ती से कहा : कि वह उसके पीछे हो ले। उस समय "पापी" मत्ती अपनी जाति से निकाला हुआ था। पर यीशु ने मत्ती से प्यार किया। यीशु ने उस व्यक्ति को देखा जो सताया हुआ, उपेक्षित और भटका हुआ था। यीशु ने मत्ती से कहा मेरे पीछे हो ले। उसने मत्ती की तरफ मित्रता का हाथ बढ़ाया। यीशु ने उस व्यक्ति को देखा और वह उससे इतना प्यार करता था कि उसके लिए मरने के लिए तैयार था। यीशु का प्यार हम पर निर्भर नहीं करता कि हम क्या हैं और क्या करते हैं। यीशु हमसे समान प्रेम करता है चाहे हम उसे चुने या त्याग दें। वह अभी भी हमसे प्रेम करता है।

2. मूल्य चुकाकर (मत्ती 14: 13–14): यद्यपि यीशु कुछ समय एकान्त में बिताना चाहते थे, पर वह हमेशा उनसे मिलने के लिए तैयार रहते थे जो उनसे मदद मांगने आते थे। जब ऐसे व्यक्ति यीशु को पाना चाहते तो यीशु तुरंत उनसे मिलते, उन्हें अपना समय और सामर्थ देते। घायलों, भटकों, लंगड़ों के लिए यीशु दया से भर उठते। वे कभी इतने व्यस्त नहीं हुए कि मदद न कर सकें।

हमें एक दूसरे से इसी प्रकार प्रेम रखना है:

1. बिना शर्त: परमेश्वर ने **लैव्यव्यवस्था 19:18** में आज्ञा दी कि, "अपने पड़ोसी से अपने समान प्रेम रखो।" लूका 10: 29 में चेले यीशु से पूछते हैं, "हमारा पड़ोसी

कौन है।" और यीशु मसीह ने दृष्टांत द्वारा उत्तर देते हुए उन्हें दर्शाया कि कौन हमारा पड़ोसी होने के योग्य है, यहां तक कि सबसे घृणित शत्रु सामरी।

यीशु के अनुयायी होते हुए हमारे पास कोई चुनाव नहीं कि हम किससे प्यार करें। यीशु ने अच्छी तरह से स्पष्ट कर दिया कि हमें प्रत्येक व्यक्ति से प्रेम रखना है चाहे वह किसी भी जाति या धर्म का, दोस्त या दुश्मन, अमीर या गरीब, पवित्र और अपवित्र हो।

परमेश्वर प्रेम है। उसके महान प्रेम की अभिव्यक्ति क्रूस है। परमेश्वर अभी भी संसार को अपना प्रेम प्रदर्शित कर सकता है? ये कार्य वह अपने चेलों द्वारा आपके द्वारा कराना चाहता है। तो क्या यह आप करेंगे? क्या आप उन तक पहुंचेंगे जो भटके हुए हैं, घायल हैं, सताये हुए हैं और उनसे व्यावहारिकरूप से परमेश्वर का प्रेम दर्शायेंगे?

2. मूल्य चुका कर: या प्रेम करने के लिए पैसों की नहीं बल्कि समय और सामर्थ की आवश्यकता है। बाइबल का आदेश हमारे लिये यह है कि हम एक दूसरे का बोझ उठाएं। जैसे जब कोई किसी परेशानी या दुख में हो तो सबसे बड़ी जरूरत है कि हम भावनात्मक रूप से उसके दुख में उसके साथ रहें। कभी-कभी सुधरने में काफी समय लग जाता है, लेकिन हमें उसके साथ रहना है, चाहे महीने लगें या साल। क्या हम दूसरों की जिंदगी बचाने के लिए अपना समय दे सकते हैं? क्या हम अपना जीवन परमेश्वर का प्रेम दर्शाने के लिए बलिदान कर सकते हैं?

यूहन्ना 13:35 "यदि तुम आपस में प्रेम रखोगे तो इसी से सब जानेंगे कि तुम मेरे चेले हो।"

अगर हम परमेश्वर का प्रेम बिना शर्त और मूल्य चुकाकर दर्शाते हैं तो लोग हमारे जीवन में उसके प्रेम को देखेंगे और जानेंगे कि हम भिन्न हैं और अपना जीवन उसके प्रेम में समर्पित करेंगे। उसका प्रेम भटके हुओं के दिलों को खोलता है और वे उसका वचन सुनना और ग्रहण करना चाहते हैं। उसका प्रेम हमारे लिए द्वार खोलता है ताकि हम सुसमाचार का प्रचार कर सकें। तो आप किस तरह व्यावहारिक रूप से परमेश्वर का प्रेम दर्शायेंगे। आप अपने समाज की सेवा कैसे करेंगे? किस तरह आप और सेवा करेंगे और कैसे? किस तरह आप और आपकी कलीसिया समाज में जाकर परमेश्वर का प्रेम दर्शाएगी? सोचिए, आप किस तरह भिन्न तरीके से समाज की सेवा कर उन्हें आश्चर्यचकित कर सकते हैं? संसार हमेशा कुछ न कुछ वापसी चाहता है। लेकिन जब हम सेवा और अगुवाई करें तो हमें बदले में कुछ नहीं मागना चाहिए।

जैसे, आप जायें तो कहें कि व्यावहारिक रूप से परमेश्वर के प्रेम को दर्शाना चाहता हूं और कहें कि अगर आप अपने घर में बाइबल-अध्ययन में रुचि रखते हैं तो परमेश्वर अपने प्रेम द्वारा सुसमाचार को समझने के लिए उनके हृदय को खोलेगा। परमेश्वर अपकी मदद करेगा, आपका मार्गदर्शन करेगा – शान्तिप्रिय व्यक्ति की तरह।

(ग) घरानों का पीछा करना प्रेरितों के काम 16:31: इस बिन्दु पर कार्य करने के लिए एक और सिद्धांत है। वह है घराना-सिद्धांत: प्रेरित 16: 31 में लिखा है, "प्रभु यीशु पर विश्वास कर तो तू और तेरा घराना उद्धार पायेगा। सारा संसार एक परिवार से संबंध रखता है।

जब आपको शान्तिप्रिय व्यक्ति मिल जाये तो आवश्यकता होगी कि यह व्यक्ति

आपको अपने पूरे घराने से परिचित कराए। तब आप उस घराने में प्रवेश करें। उसके घराने के हर व्यक्ति का अपना अलग घराना होगा। जैसे, इस शान्तिप्रिय व्यक्ति के घर में दस सदस्य हैं तो उन दस के अलग दस परिवार होंगे। तब आप आसानी से उन परिवारों में प्रवेश कर सकते हैं। शान्तिप्रिय को ढूंढ़ना और फिर स्वत: ही उसके परिवार में प्रवेश करना ही इसकी कुंजी है।

VII अप्रत्यक्ष विधि द्वारा (द्वाराः चार्ल्स ब्रॉक) बाइबल-अध्ययन कैसे कराएं।

परिचय

इस अध्ययन द्वारा कोई भी व्यक्ति जो बाइबल-अध्ययन आरम्भ करना चाहता है उसे सहायता प्राप्त हो सकती है कि कैसे वह बाइबल-अध्ययन ले सकता है और यह बात बिल्कुल साफ है कि इस विधि द्वारा बाइबल-अध्ययन लेने वाले व्यक्ति के लिए कोई विशेष शिक्षा या प्रशिक्षण की आवश्यकता नहीं है।

इस विधि का प्रयोग और भी दूसरी किताबों और अध्यायों के लिए किया जा सकता है। यह अध्ययन विशेषकर मूल प्रचारकों के लिए तैयार किया गया है और यहां पर हमने यूहन्ना रचित सुसमाचार की पुस्तक के अध्ययन को लिया है।

याद रखें पौलुस ने 2 तिमुथियुस 2:2 में दूसरों को तैयार और उन्होंने दूसरों को तैयार किया इत्यादि। यदि हम चाहते है कि दूसरे लोग औरों को भी तैयार करें तो हमें उन्हें सामग्री व तरीका बताना होगा

(अ) अप्रत्यक्ष विधि में दो चीजें होती हैं। उन दो बातों को पहचानना है जो इस तरह की अप्रत्यक्ष नेतृत्व विधि में प्रयोग होती हैं। अप्रत्यक्ष विधि वैसी नहीं, जैसी प्रत्यक्ष विधि होती है। अप्रत्यक्ष नेतृत्व में दो बातें शामिल हैं:

(क) अगुवा समूह को निर्देशन करता है।

(ख) इसमें समूह की सहभागिता होती है।

अप्रत्यक्ष विधि में अगुवे का .... और सदस्यों की .... शामिल होती है।

<u>निर्देशन</u> <u>सहभागिता</u>

ब. यहीं हम अप्रत्यक्ष विधि का उपयोग बाइबल-अध्ययन में करना चाहते हैं; तो फिर हमें पांच नियमों पर ध्यान देना होगा।

1. अगुवे को चाहिए कि वह समूह के सदस्यों को अध्ययन में सहभागी होने के लिए प्रोत्साहित करे।

यदि केवल अगुवा ही बाइबल-अध्ययन में सब कुछ कर रहा है तो अप्रत्यक्ष विधि द्वारा बाइबल अध्ययन करना असंभव है। अप्रत्यक्ष विधि से यह बात बहुत ही महत्वपूर्ण है कि सदस्यों को .... होने के लिए प्रोत्साहित किया जाए।

....

<u>सहभागी होना</u>

2. अपने समूह को एक ऐसी पाठ्य सामग्री दें, जिसमें प्रश्न-उत्तर और रिक्त स्थान हों, या कोई और पढ़ने के लिए चीजें हों, क्योंकि इसके द्वारा शिक्षक के लिए आसान हो जाएगा कि वे किस दिशा में अपने सदस्यों की अगुवाई करें।

इन चीजों के द्वारा सदस्यों को बाइबल-अध्ययन में सहभागी होने के लिए और प्रोत्साहित किया जा सकता है।

एक अभ्यास पुस्तिका शिक्षक के सदस्यों का .... में सहायता करेगी यह सदस्यों को .... लेने में प्रोत्साहित करे।

निर्देशन सहभागिता

3. **जब अगुवा, गैर-मसीहियों के समूह का बाइबल अध्ययन के लिए नेतृत्व कर रहा हो तो अगुवे के लिए धैर्य रखना आवश्यक है।** जब आप उपरोक्त विधि द्वारा बाइबल अध्ययन देते हैं तब धीरज रखना विशेष आवश्यक है। हो सकता है कि समूह के कुछ लोग अध्ययन में बहुत अधिक सहभागी हों और कुछ बिल्कुल भी नहीं। इसलिए अगुवे को हमेशा इस नियम का पालन करना होगा कि वह .... रखे।

धीरज

4. **अगुवा, बाइबल अध्ययन का नेतृत्व करने में, इस बात का ध्यान रखें, और अभ्यास करे कि जैसे वह स्वयं नेतृत्व कर रहा है, वैसे ही और सदस्यों द्वारा भी नेतृत्व की पुनरावृत्ति हो सके।**

पुनरुत्पादन नेतृत्व का का अर्थ यह है कि कक्षा के सदस्यों द्वारा जल्दी ही वैसा ही नेतृत्व करने लग जाए जैसे कि अगुवा या आप बाइबल अध्ययन का नेतृत्व कर रहे थे।

अगुवे को चाहिए कि वह अपने समूह का नेतृत्व इस प्रकार से करे कि उसका नेतृत्व समूह के अन्य सदस्यों द्वारा हो सके।

पुनरुत्पादन

5. हमने सीखा है कि अप्रत्यक्ष नेतृत्व में समूह के सदस्यों को भाग लेना शामिल है। समूह को चाहिए कि वह अध्ययन की सफलता के लिए पवित्र आत्मा पर निर्भर हो।

केवल पवित्र आत्मा ही इस योग्य है कि वह लोगों में कायलियत और परिर्वतन को ला सकता है।

पवित्र आत्मा के कार्य .... और .... हैं।

कार्यालियत परिवर्तन

स. अगुवे को तीन चीजों का प्रयोग अप्रत्यक्ष विधि द्वारा बाइबल अध्ययन में नहीं करना चाहिए।

1 प्राय: ऐसा होता है कि बाइबल अध्ययन में अगुवा कक्षा के अन्य सदस्यों से बाइबल के बारे में अधिक जानता है। हो सकता है कि अगुवा इस बात पर घमंड करे और इसलिए वह ऐसा अनुभव करने लगे कि जब भी किसी विषय पर चर्चा होती है तो सब कुछ जो वह जानता है, कह देना चाहता है। इस व्यवहार को .... कहते हैं।

क. वांछनीय

ख. अप्रत्यक्ष नेतृत्व में अवांछनीय

यह बात बहुत ही महत्वपूर्ण है कि अगुवा हर बात जो वह जानता है नहीं बताए। लेकिन

केवल वह उन्हें दिशा प्रदान करे।

अवांछनीय

2. बाइबल-अध्ययन समूह में कोई न कोई ऐसा भी होगा जो अपने ज्ञान को दिखाना चाहेगा। हम ऐसे व्यक्ति को दार्शनिक कहते हैं। **इस तरह लोगों के साथ वाद-विवाद करना समय बर्बाद करना है।** साधारणत: ये "दार्शनिक" .... होते हैं।

(एक से ज्यादा का चुनाव करके ऊपर के रिक्त स्थान में भरें)

(क) वास्तव में सत्य को खोजने वाले

(ख) लोगों का ध्यान अपनी और आकर्षित करने वाले

(ग) बोलना पसन्द करने वाले

3. जब कि अप्रत्यक्ष नेतृत्व का अर्थ कक्षा के सभी सदस्यों का भाग लेना है तब **अगुवे को इस बात का भी ध्यान रखना जरूरी है कि विषय चर्चा के समय केवल एक ही व्यक्ति के द्वारा प्रभाव न जमाया जाए।** यदि एक ही व्यक्ति द्वारा सारा समय ले लिया जाए तो इसका अर्थ यह हुआ कि अगुवा अच्छी .... का अभ्यास नहीं कर रहा।

अप्रत्यक्ष विधि

द. अब हम यहां पर दो कारणों को देखेंगे कि नई कलीसिया को आरंभ करने के लिए अप्रत्यक्ष नेतृत्व की विधि क्यों अच्छी है?

1. जब हम अप्रत्यक्ष विधि का प्रयोग करते हैं तो नेतृत्व की जिम्मेदारियों को समूह के दूसरे सदस्यों तक पहुंचाने में बहुत आसानी होती है। यही एक वह साधारण तरीका है जिसके द्वारा एक दिन कलीसिया का निर्माण हो जाता है। एक बुद्धिमान अगुवे का गुण यह है कि वह नेतृत्व दूसरों को .... करे।

हस्तान्तरित

2. जब हम नेतृत्व की अप्रत्यक्ष विधि का बाइबल-अध्ययन में प्रयोग करते हैं, तब आप समूह के उन सदस्यों का नेतृत्व करते हैं **जो अनुभव, शिक्षा, या पैसे में सीमित नहीं इसका अर्थ यह है कि कोई भी कर सकता है।**
इसका अर्थ यह हुआ कि बहुत से लोग इस योग्य है, जो नए समूहों का .... कर सकते हैं।

नेतृत्व

VIII.पायनियर इवैंजलिस्ट बाइबल के अलावा अन्य किसी पाठ्य-सामग्री के बिना घर में बाइबल अध्ययन का नेतृत्व करता है

कदम 1. समूह का अगुवा उस परिच्छेद का चुनाव करे जिस पर अध्ययन होना है।

कदम 2. अगुवा किसी से कहे कि वह उस परिच्छेद को पढ़े।

कदम 3. अगुवा दोबारा से उसी परिच्छेद को पढ़े और साधारणरूप से उन पदों को समझाए।

कदम 4. पद को पढ़ने के बाद, आत्मिक सत्यों को जानने के लिए, अगुवा समूह से

आसान सवाल पूछे।

क. यह पद परमेश्वर के बारे में क्या कहता है?
ख. यह यीशु के बारे में क्या कहता है?
ग. यह पद पवित्र आत्मा के बारे में क्या कहता है?
घ. यह पद पाप के विषय में क्या कहता है?
ड. यह पद मुझे क्या सिखाता है?
ण. इस पद को मैं अपने जीवन पर कैसे लागू कर सकता हूं?

कदम 5. अगुवे को चाहिए कि यदि उसे और दूसरे पद भी मालूम हैं, जो उस सत्य से संबंधित हैं, तो वह अपने समूह को बताए।

कदम 6. अगुवा उनकी अगुवाई करे कि वे उन पदों को अपने जीवन में लागू कर सकें।

कदम 7. अगले पद का अध्ययन करें।

कदम 8. अध्ययन समाप्त हो जाने पर एक दूसरे की आवश्यकता के लिए प्रार्थना करें।

IX. मूल प्रचारक गैर-मसीहियों के बीच में शुभ-संदेश की सभाओं का नेतृत्व कैसे करें?

1. पहली सभा

(क) अन्वेषक (पायनियर) को सभा के लिए इन वस्तुओं को लेना चाहिए:

* नये नियम की प्रतियां
* कुछ पेन्सिलें या पेन
* कुछ काग़ज़
* अध्ययन से संबंधित छोटे-छोटे गीत
* "अनन्त जीवन कैसे पाएं" "सुसमाचार अध्ययन" सुसमाचार पर आधारित कहानियों के पर्चे या अन्य किसी भी तरह की अध्ययन-सामग्री जो वह प्रयोग करना चाहता हो।

(ख) अन्वेषक को अपने आपको दृढ़ता से बाइबल अध्ययन-कर्ता अगुवे के रूप में प्रस्तुत करना चाहिए।

(ग) अन्वेषक को चाहिए कि वह प्रत्येक स्त्री/पुरुष से कहे कि अपनी जन्मतिथि, आयु के साथ अपना नाम और हस्ताक्षर करे। लोगों को स्पष्ट करें कि यह लिस्ट उसके अपने लिए है ताकि वह समूह के प्रत्येक व्यक्ति के लिए प्रार्थना कर सके। यह भी स्पष्ट करें कि वह अगली सभा में सभी सदस्यों के लिए यूहन्ना रचित सुसमाचार लायेंगे। यह सूची प्रार्थना पुस्तिका के प्रतिदिन के भाग में रखनी चाहिए।

(घ) अन्वेषक (पायनियर) को चाहिए कि वह बहुत से कोरस को उनके सम्मुख रखे और पूछे क्या वे इन्हें सीखना पसंद करेंगे। समूह को निर्णय लेने दें। अगर वे गीत सीखना चाहें तो उन्हें एक या दो अच्छे कोरस सिखाएं।

(च) अन्वेषक को चाहिए कि उन कोरस में से किसी कोरस को विषय-गीत के लिए चुनें।

(छ) अन्वेषक को पूछना चाहिए कि क्या समूह में से किसी की विशेष आवश्यकता या कोई विशेष प्रार्थना-निवेदन है। बाइबल का परिचय देना तथा अध्ययन को चलाना फिर उनके साथ उन विषयों पर प्रार्थना करें और सप्ताह भर उन विषयों पर प्रार्थना करने का वायदा करे।

2. बाइबल का परिचय तथा अध्ययन का नेतृत्व

याद रखें: ये अविश्वासी हैं जो न तो बाइबल के विषयों को जानते हैं और न ही कि उन्हें कैसे प्रयोग करें इन्हें सिखाने के लिए आपको बडा संयम रखना पड़ेगा। हमारी सलाह है कि आप इन लोगों को छोटे-छोटे झुंड़ों में बांट लें। तब वे एक दूसरे का साथी बनकर, बाइबल को कैसे प्रयोग करना है, एक दूसरे की मदद कर सकते हैं।

सबसे पहले उन्हें बाइबल की विषय सूची दिखाएं। उन्हें बताएं कि बाइबल में दो भाग हैं, पुराना नियम और नया नियम। फिर पुराने नियम और नये नियम के बारे में समझाएं।

उसके बाद कैसे पृष्ठों की गिनती द्वारा, यूहन्ना की पुस्तक के अध्यायों और पदों द्वारा प्रश्नों का उत्तर दें। लेकिन जब आप अप्रत्यक्ष नेतृत्व की विधि का प्रयोग कर रहे हैं तब अगुवा, सवालों का जवाब या पदों4 को नहीं पढ़ेगा। अगुवा तो केवल उनके सही उत्तर ढूढ़ने में सहायता करेगा। यदि वह गलत उत्तर देते हैं तो दुबारा पदों को पढ़ने के लिए और सही उत्तर प्राप्त करने के लिए उनकी सहायता करें। इस विधि का इस्तेमाल करते हुए जल्दी ही नए लोग इस योग्य हो जायेंगे कि, वे भी बाइबल-अध्ययन या कहानियों द्वारा गैर-मसीहियों का नेतृत्व कर सकें।

3. निमंत्रण:

"सुसमाचार"-अध्ययन पुस्तिका में "निमंत्रण" छठा अध्याय है (अगर आप सुसमचार कहानी द्वारा पढ़ रहे हैं तो अगुवे को (सातवाँ अध्याय) "अनन्त जीवन कैसे प्राप्त करें" या अन्य कोई योग्य सामग्री जो सुसमाचार को स्पष्ट करे और समूह को यीशु मसीह को अपना उद्धारकर्ता ग्रहण करने के लिए निमन्त्रित करे।

4. अन्तिम अध्याय:

अन्तिम अध्याय के बाद समूह के सदस्यों के लिए समय होगा निर्णय लेने का। अन्वेषक (पायनियर) को पूछना चाहिए कि क्या वे आपस में अध्ययन जारी रखना चाहते हैं। अगर उत्तर 'हां' में हो तो उसे चाहिए कि वह पत्र-व्यवहार के लिए सामग्री सौंपे। (मसीह में नये जीवन का आरम्भ)। इस बिन्दु पर विशाल परिवर्तन होगा। अन्वेषक को यह सलाह देनी चाहिए कि समूह के सभी सदस्य एक जगह पर एकत्र हों। ध्यान रहे कि प्रत्येक को निमंत्रण दें, उन्हें भी जिन्होंने कोई निर्णय न लिया हो।

X. मूल प्रचारक और फॉलो-अप (मत्ती 28:19 तथा 2 तीमु. 2:2)

प्रभु यीशु ने हमें आज्ञा दी है कि "जाओ और चेला बनाओ" न केवल नए आने वालों को, लेकिन उनको भी जो एक बार अपनेआप को प्रभु को दे देते हैं। लोगों की शिष्यता जल्दी ही शुरू कर देनी चाहिए ताकि वे परमेश्वर के साथ नए संबंध में उन्नति कर सकें और उनका जीवन उद्देश्य से भरा हो और वे परमेश्वर के साथ एक अर्थपूर्ण जीवन बिता सकें।

प्रथम, आप उन्हें शिक्षित करें कि वह अपने संबंध में परमेश्वर के साथ उन्नति करें, और वे कैसे अपने निजी समय को उसके साथ उसके वचन में और प्रार्थना में बिता कर परमेश्वर को अधिक जान सकते हैं। द्वितीय, सेवकाई के लिए प्रशिक्षित करें।

1. एक निर्णायक बिन्दु

अब 'पायनियर' एक अत्यन्त निर्णायक बिन्दु पर पहुँच चुका है। अब वह सभी उन लोगों के साथ एक बैठक का आयोजन करेगा, जिन्होंने शुभ-समाचार अध्ययन समाप्त कर लिया है। उन दोनों, जिन्होंने फालो-अप अध्ययन करने का निर्णय, लिया और जिन्होंने अब तक निर्णय नहीं लिया, को आमंत्रित करें। इस बिन्दु पर 'पायनियर' को दो चीज़ें करनी चाहिए:

(अ) तुरन्त फॉलो-अप सामग्री का अध्ययन आरम्भ कर दें। प्रत्येक नया विश्वासी शिष्यता में अवश्य दीक्षित हो चुका हो। शिष्यता प्रत्येक विश्वासी तथा प्रत्येक कलीसिया के लिए आवश्यक है। शिष्यता विश्वासी को आत्मिक रूप से विकसित होने में सहायता करती है, जो दृढ़ कलीसिया की नींव डलती है और जो आगे चलकर कलीसियाओं को बढ़ाना आरम्भ कर देती है। पायनियर को चाहिए कि वह फॉलो-अप सामग्री को लागू कराने में अप्रत्यक्ष विधि का उपयोग करे। 'पायनियर' अपनी इच्छित किसी भी सामग्री का उपयोग कर सकता है, परन्तु हम कहानी सुनाने वाली सामग्री: 'नये जीवन का आरम्भ करना' की संस्तुति करते हैं।

(ब) अति आवश्यक। सदैव, अधिक से अधिक शान्तिप्रिय लोगों को तलाशते रहें तथा 'शुभ-समाचार अध्ययन' अथवा 'कहानी-क्रम' का उपयोग कर और नये लोगों के साथ मिलकर अधिक समूह आरम्भ करें।

2. तीसरा सप्ताह

यह एक और निर्णायक सप्ताह है। पायनियर को चाहिए कि वह समूह को अपना स्थानीय अगुवा चुनने दे ताकि आने वाले सप्ताह की बहस में वह अगुवाई कर सके। समूह के लिए पायनियर को अगुवा चुनने का स्वयं प्रयास नहीं करना चाहिए, परन्तु अपनेआप को उसका मार्गदर्शन के लिए उपलब्ध कराते रहना चाहिए ताकि सैद्धांतिक त्रुटि से बचा जा सके। 'पायनियर' को स्थानीय अगुवों से अलग से मिलना चाहिए और वह उन्हें अलग से प्रशिक्षित करे। पवित्र आत्मा की अगुवाई में, पायनियर अब उन नये विश्वासियों में से जिन्हें परमेश्वर तैयार करता है, अपनी टोली बनाना आरंभ करता है। वह उन्हें प्रशिक्षित करके बाहर नयी कलीसियाएं आरंभ करने के लिए भेजेगा। **स्मरण रहे:** पायनियर अपनी टोली के साथ साप्ताहिक रूप से मिला करेगा।

3. चौथे और पांचवें सप्ताह

स्थानीय अगुवा सभा-संचालन में अगुवाई करेगा और पायनियर, बिना किसी बाधा, केवल श्रोता होगा। फिर पायनियर के स्थान पर स्थानीय अगुवा अध्ययन में अगुवाई करना जारी रखेगा।

4. छठवां सप्ताह

इस सप्ताह पायनियर को कोई कारण बताना होगा कि वह सभा में क्यों नहीं आ सकता; परन्तु उसे स्पष्ट करना होगा कि किसी भी प्रकार से सभा चलती रहे।

XI. पायनियर इवैंजलिस्ट और कहानी कहना

अच्छी कहानियाँ चुनिए। इस कार्यशाला में 'क्रिस्टी बॉनर' लिखित दो कहानियाँ सम्मिलित की गई हैं। वे सरल, व्यावहारिक और सस्ती हैं। 'यीशु का शुभ-समाचार' में गैर-विश्वासियों के लिए मत्ती की पुस्तक से सात सुसमाचारीय अध्याय पाए जाते हैं। 'मसीह

में एक नया जीवन आरंभ' में नए विश्वासियों के लिए 'फॉलो अप' अध्यायों के आठ अध्याय पाये जाते हैं।

1. प्रत्येक सभा एक छोटी-सी प्रार्थना के साथ आरंभ करें कि प्रभु कहानियों को समझने की समझ प्रदान करें।
2. सभा में भाग लेने वालों के बीच कहानी पढ़ी जाए, अथवा यदि वहाँ इसकी प्रतियां उपलब्ध हों तो अप्रत्यक्ष विधि का उपयोग कर एक साथ कहानी पढ़ी जाएं।
3. कहानी के अंत में अगुवा मौखिक प्रश्न पूछेगा। इन प्रश्नों का उद्देश्य पुनर्विचार अथवा जांच करना है कि कहानी कितनी समझ में आई है– न कि उसे लम्बी खींचने अथवा वाद-विवाद करने हेतु।
4. आत्मिक सच्चाइयों को पढ़ें। समूह के सदस्यों को यह स्वतंत्रता दें कि वे प्रत्येक आत्मिक सच्चाई पर बहस कर सकें तथा प्रश्न पूछ सकें। सावधान रहें कि किसी के साथ झड़प और वाद-विवाद न होने पाए। इस बिंदु पर यह आवश्यक नहीं है कि सदस्य सहमत होकर-आत्मिक सच्चाई को स्वीकार कर ही लें। इसमें महत्त्वपूर्ण केवल यह है कि वे परमेश्वर के वचन बाइबल में प्रकट की गई सच्चाइयों को समझ सकें।
5. आत्मिक सच्चाइयों के बाद, प्रत्येक व्यक्ति को समय दें कि वह समूह के साथ अपनी आवश्यकता तथा प्रार्थना-निवेदन को बांट सके।
6. प्रत्येक को अवसर दें कि वे अपनी आवश्यकताओं को प्रार्थना विनतियों को एक दूसरे के साथ बांट सकें।

योजना

नयी कलीसिया आरंभ करने के कदम

<u>योजना</u>

कलीसिया की स्थापना में **पहली अवस्था** शून्य आधार से उस बिन्दु तक, आप कलीसिया की रूपरेखा बनायेंगे। **दूसरी अवस्था**, आप नये कार्य की रूपरेखा तैयार करेंगे। नयी कलीसिया की रूपरेखा के लिए कई नमूने हैं। लेकिन यहां केवल चार ही दिये गये हैं। यह पाठ पहली अवस्था को भी प्रदर्शित करता है।

1. परम्परागत कलीसिया

यह नमूना कार्यक्रम पर आधारित है। इसमें अक्सर ऐसे कार्यक्रम होते हैं जैसे रविवारीय स्कूल। ये कुछ ज्यादा ही बाइबल संबंधी होते हैं। इसमें भवन निर्माण पर प्रभावशाली बल दिया जाता है और अधिकतर पादरी या धर्म सेवकों या प्राचीनों के शक्तिशाली समूह द्वारा नियन्त्रित किया जाता है।

2. सैटेलाइट कलीसिया

मूल कलीसिया द्वारा, विस्तृत रूप से यह नमूना संचालित किया जाता है, जिसमें अनेकों मिशन और/या मंडलियां होंगी। मूल या समर्थक कलीसिया ही इन मिशनों या मंडलियों को नियन्त्रित करेंगी। हर धर्म मंडली में प्रार्थना, बाइबल-अध्ययन और संगति, घरों, बाज़ारों और छोटे आराधनालयों में होगी। तो भी, वे मूल कलीसिया के सदस्य होते हैं। अक्सर दशमांश शुल्क और चढ़ावा मूल कलीसिया को भेज दिया जाता है। इन सैटेलाइट धर्म मंडलियों की मुख्य समस्या यह है कि स्वयं को पुनरुत्पादित करने का कोई दर्शन इनके पास नहीं है, जब तक कि वे स्वयं ही एक संगठित मूल कलीसिया न बन जायें। अनेकों बार, संगठित करने के लिए आवश्यकता होती है कि उनके पास भूमि, भवन और अभिषिक्त पादरी हो। तथापि ये मनुष्य द्वारा निर्मित आवश्यकताएं हैं और परमेश्वर की ओर से नहीं आतीं।

3. प्रकोष्ठ कलीसिया

यह वह नमूना है जबकि मूल कलीसिया में कई छोटे समूह घरों, बाजारों और कार्यालयों में मिलेंगे। ये समूह भौगोलिक या एकरूपता के आधार पर संगठित होंगे। जैसे युवा समूह, महिला समूह, पुरुष समूह इत्यादि। इन समूहों की सभा में समुदाय एवं संस्थागत समूह पर अधिक बल दिया जाता है पादरी और सदस्य जिम्मेदारी और हिसाब रखते हैं। ये अपने समूह में प्रभुभोज और अपने स्तर पर बपतिस्मा भी करते हैं। हर समूह सामान्य जन द्वारा संचालित होता है, जो कलीसियओं के संस्कारों को पूरा करेगा। प्रति सप्ताह सब समूह एक साथ मिलकर एक बड़े उत्सव का आयोजन करते हैं।

4. पाउच कलीसियाएं

यह नमूना एक धर्मप्रचारक, कर्टिस सार्जेन्ट द्वारा विकसित किया गया था। छोटी कलीसियायें नये विश्वासियों के घरों में प्रारंभ की जाती हैं। यह सब 15 सदस्यों तक बढ़ाई जाती हैं तब उसके बाद गुणात्मक वृद्धि होती जाती हैं। हर ईकाई एक स्थानीय, अलग, स्वतंत्र कलीसिया होती है।

P = Participating (सहभागिता) – हर सदस्य बाइबल-अध्ययन, प्रार्थना और संस्थागत समूह में भाग लेता है।

O = Obedience (अनुसरण) – यह सफलता के लिए एक मानदंड है, न कि यह कितना बड़ा बढ़ता है।

U = Unpaid Leaders (अवैतनिक अगुवे) – सब अगुवे और पादरी सामान्य जन होते हैं।

C = Cell (कोशिका) – ये छोटे समूहों में संगति करते हैं।

H = House (गृह) – इसमें घरों और बाजारों में प्रार्थना सभाएं होती हैं।

आरम्भिक सुसमाचार-प्रचारक चक्र

चक्र 1

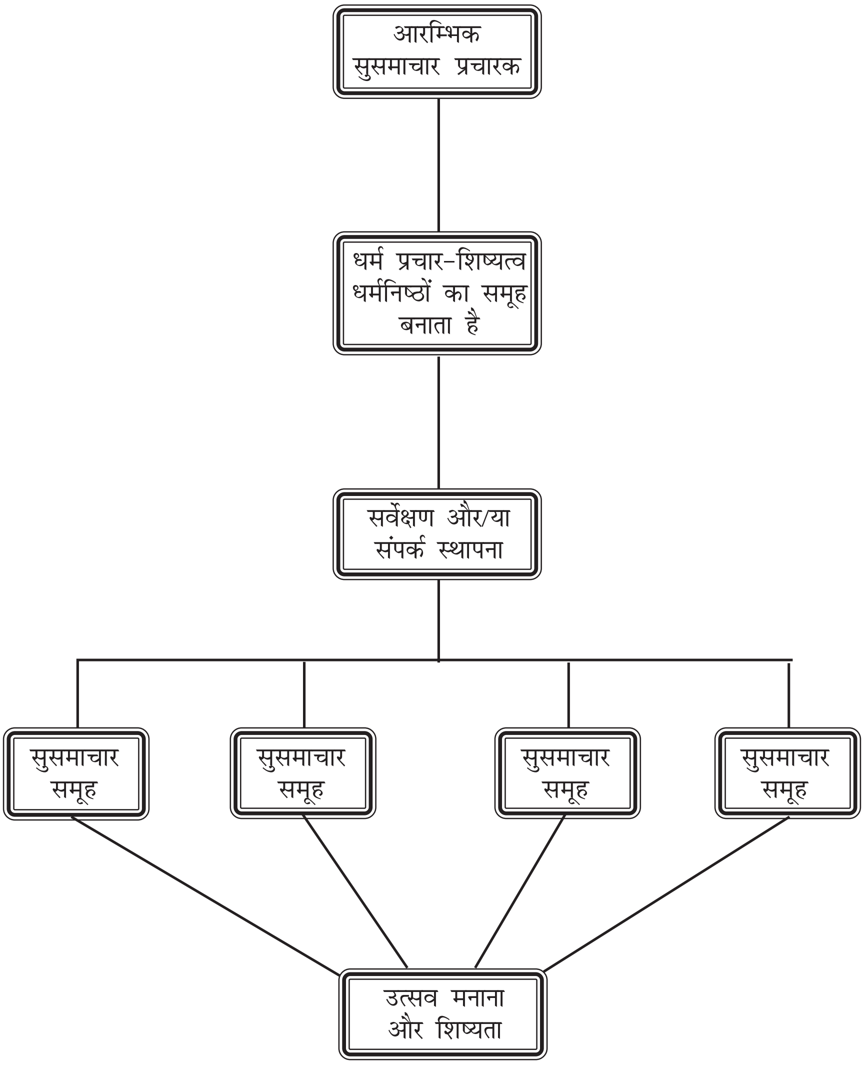

चक्र 2

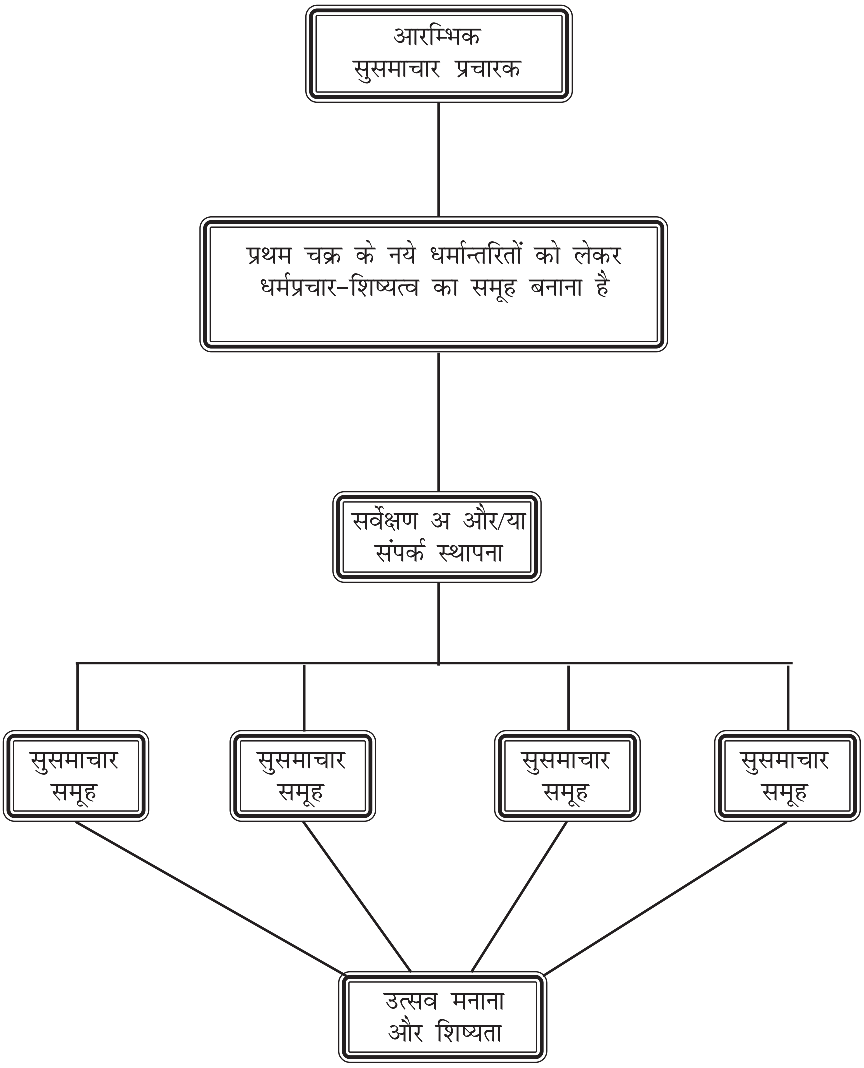
आरम्भिक सुसमाचार प्रचारक
प्रथम चक्र के नये धर्मान्तरितों को लेकर धर्मप्रचार-शिष्यत्व का समूह बनाना है
सर्वेक्षण अ और/या संपर्क स्थापना
सुसमाचार समूह
सुसमाचार समूह
सुसमाचार समूह
सुसमाचार समूह
उत्सव मनाना और शिष्यता

चक्र – 2 जारी

यह उत्सव सभा चक्र एक ही उत्सव सभा से जोड़ी जा सकती है या अलग से स्थानीय कलासिया बन सकती है।

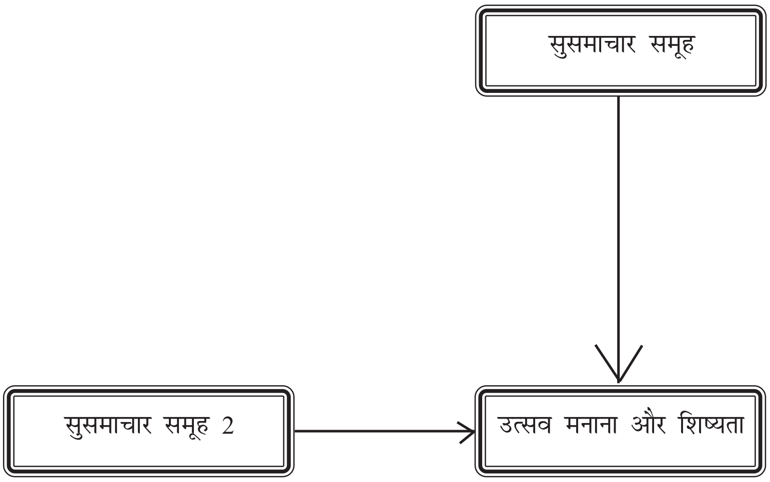

चक्र – 3

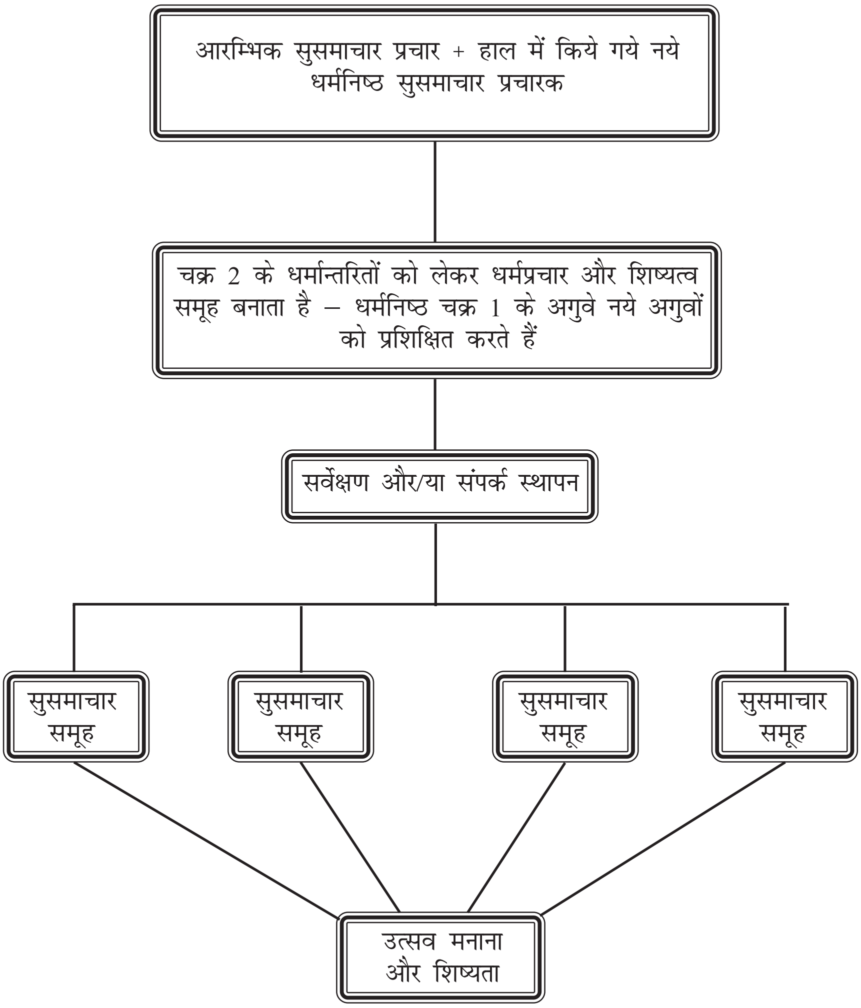

चक्र 3 में, सुसमाचार मंडली उत्सव आयोजन और धर्मप्रचार वास्तविक सुसमाचार प्रचारक को चक्र 1 और 2 के अलावा यीशु में आये हुए नये विश्वासियों द्वारा शिष्यता का प्रशिक्षण चलाना चाहिये।

चक्र – 2 जारी

यह उत्सव सभा चक्र एक ही उत्सव सभा से जोड़ी जा सकती है या अलग से स्थानीय कलासिया बन सकती है।

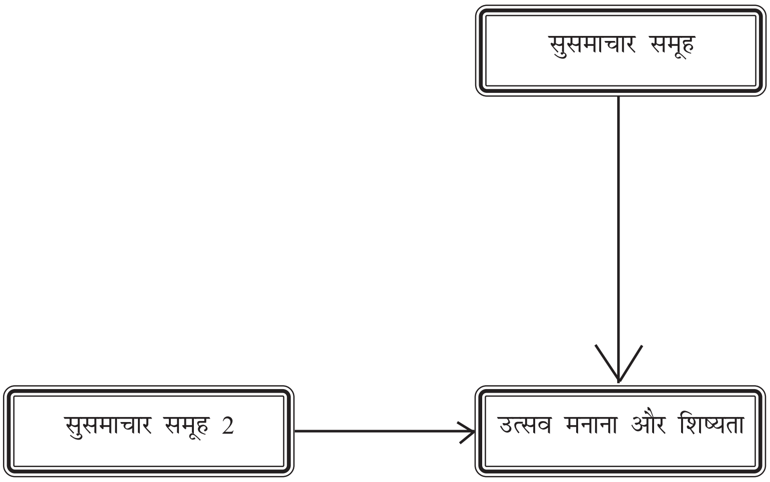

चक्र – 3

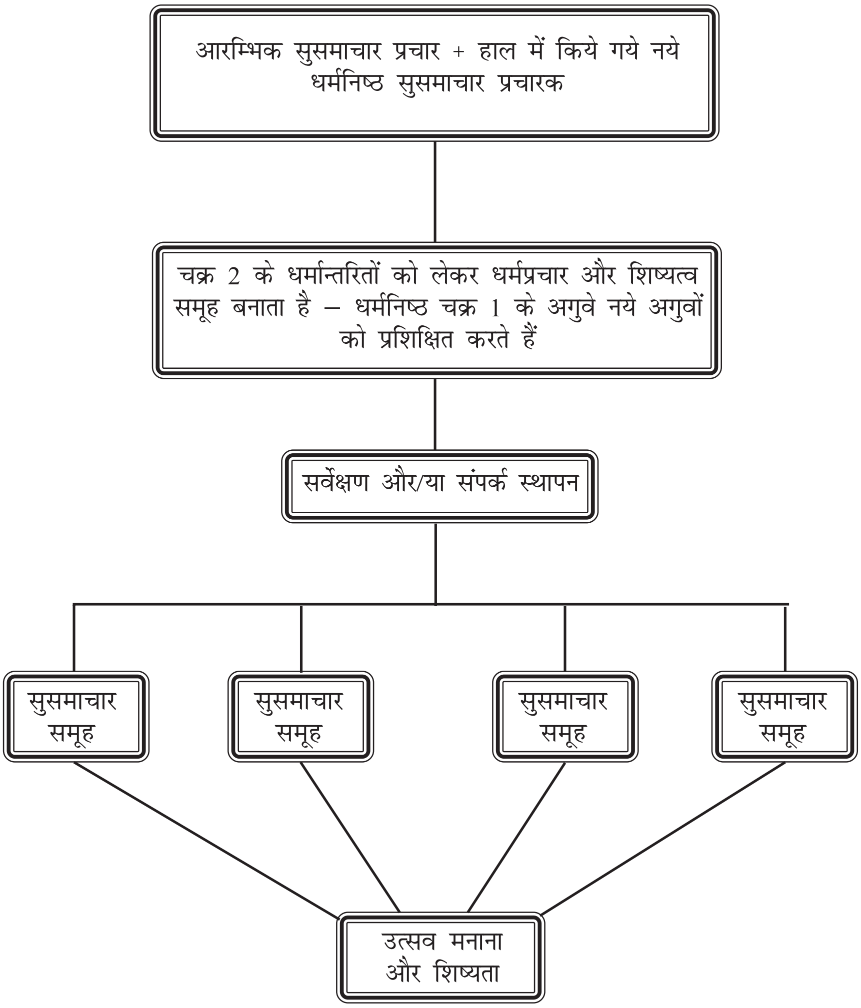

चक्र 3 में, सुसमाचार मंडली उत्सव आयोजन और धर्मप्रचार वास्तविक सुसमाचार प्रचारक को चक्र 1 और 2 के अलावा यीशु में आये हुए नये विश्वासियों द्वारा शिष्यता का प्रशिक्षण चलाना चाहिये।

चक्र – 3 जारी

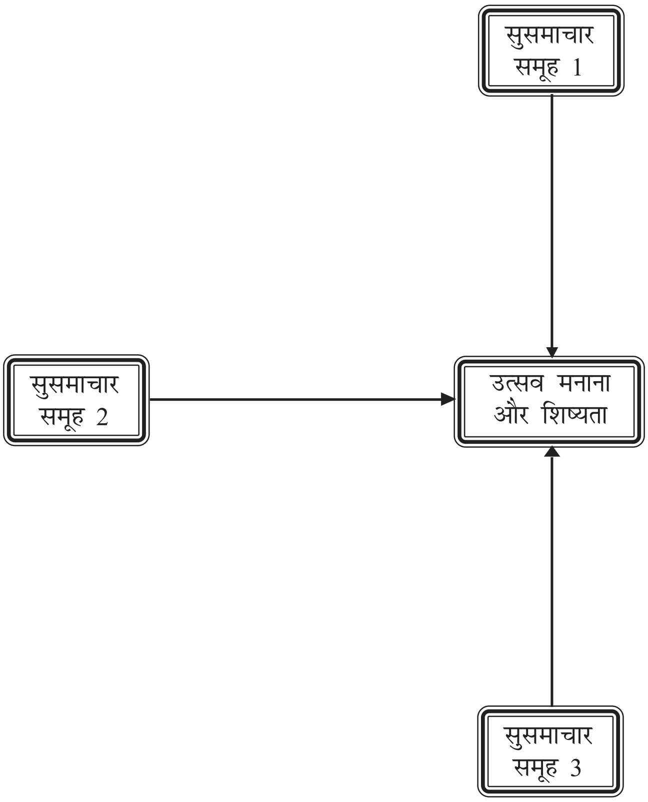

चक्र – 4

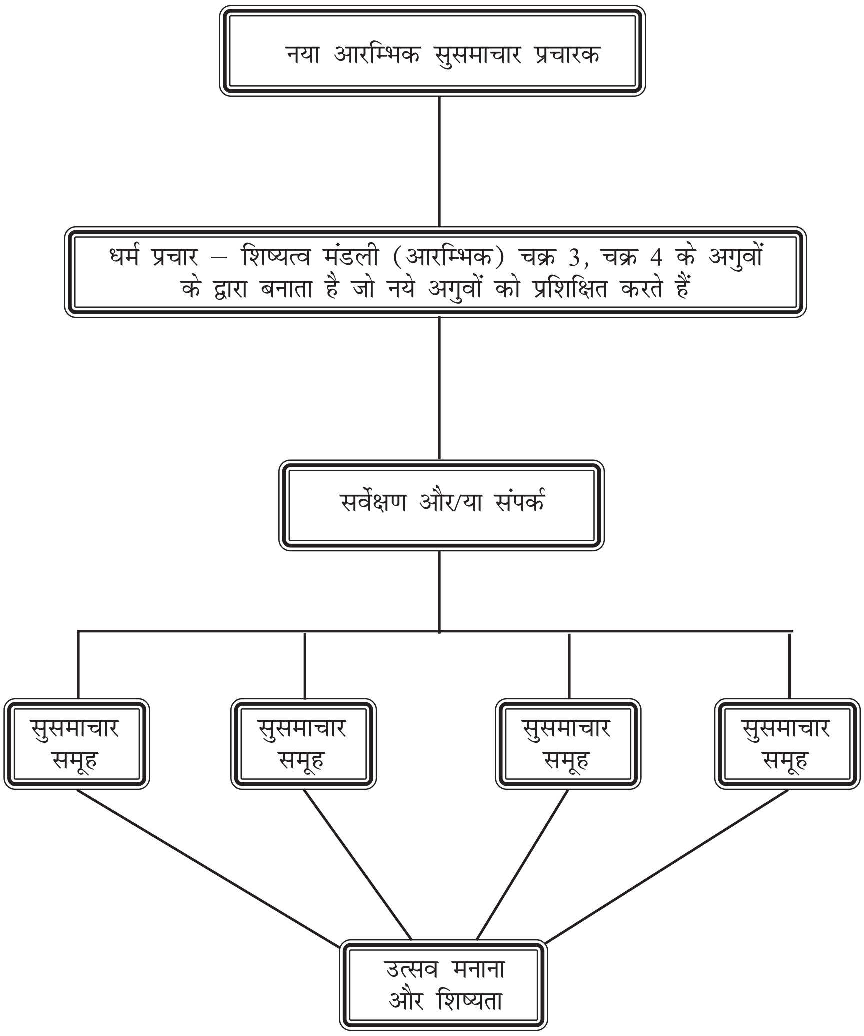

अब स्थानीय अगुवे सुसमाचार समूह, उत्सव आयोजन और शिष्यता समूहों को संचालित करते हैं। नये अगुवों को अब कलीसिया संचालन का प्रशिक्षण दिया जाये।

चक्र – 4 जारी

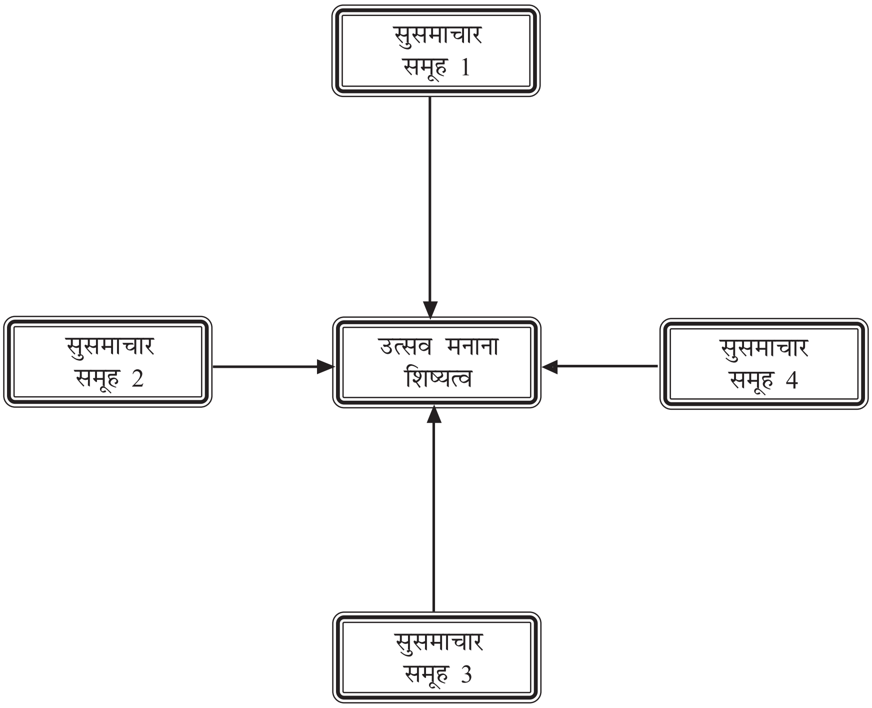

आपकी सांस्कृतिक वास्तविकता के आधार पर एक स्थानीय कलीसिया या चार अलग कलीसियाएं हो सकती हैं। स्थानीय अगुवों द्वारा सबको संचालित किया जाना चाहिए।

चक्र – 5

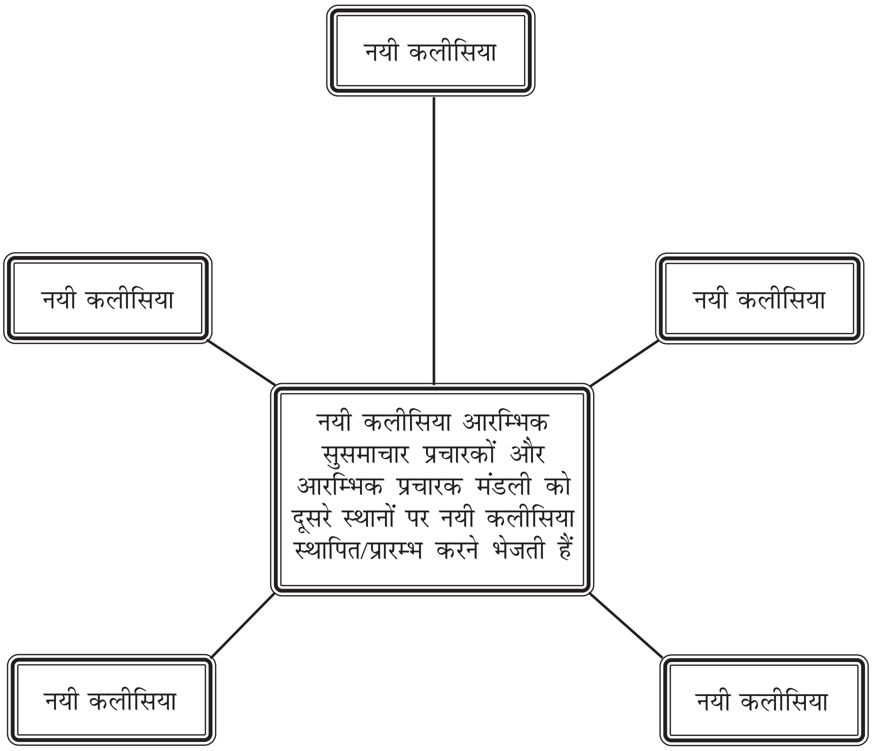

नयी कलीसिया की स्वत: पुनरुत्पति

इकाई (सैल) कलीसिया को आरम्भ करने के लिए प्रचारकों की योजना का प्रयोग

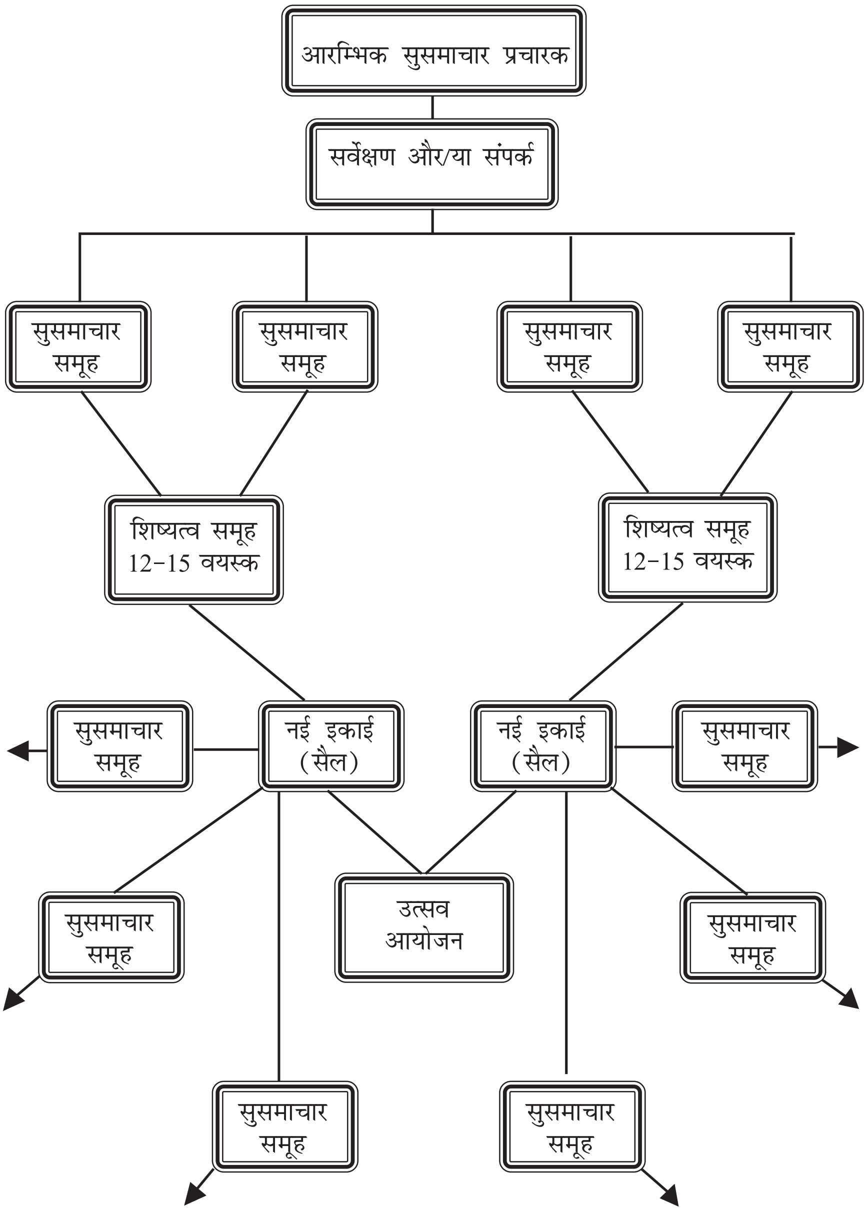

पाउच कलीसिया के लिए धर्मनिष्ठ सुसमाचार प्रचारक का प्रयोग

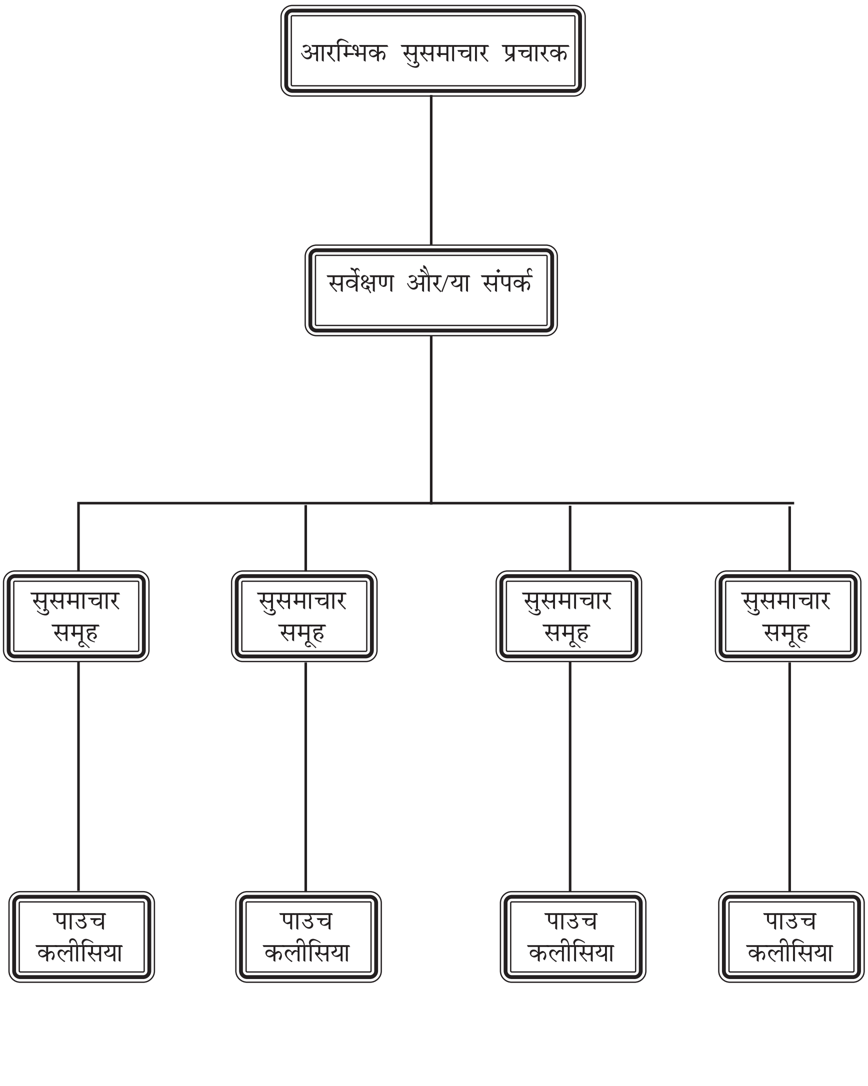

घराने (OIKOS) की प्रक्रिया

+ वे लोग, जिन्होंने यीशु का अंगीकार किया है क्योंकि शांति-प्रिय व्यक्ति का मन परिवर्तन हुआ जो अब तक विश्वासी नहीं हैं

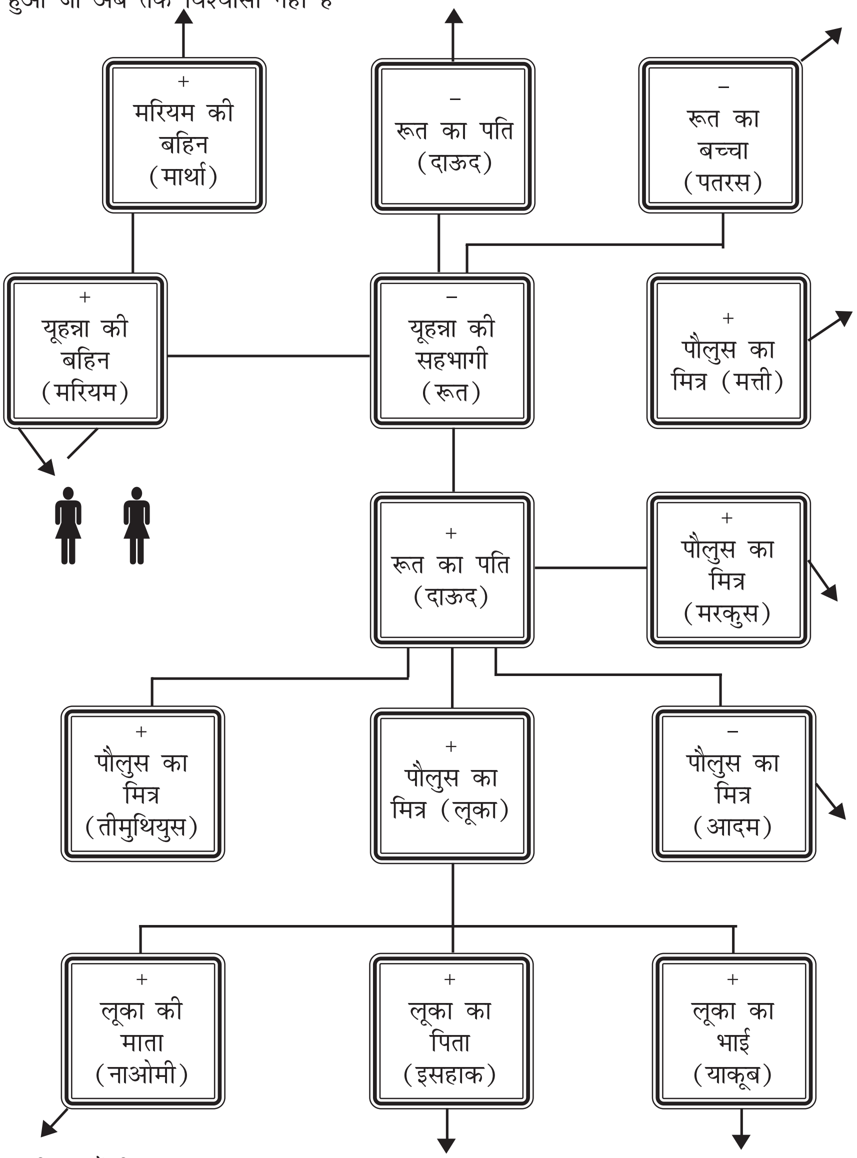

नये विश्वासी के लिए छः सत्य

द्वारा–थॉमस वेड एकिंस

पायनियर इवैंजलिज़्म क्रम

नये विश्वासी के लिए छः सत्य

परिचयः

बाइबल कुलुस्सियों 2:6 में कहती है, "इसलिए जैसे तुमने मसीह यीशु को प्रभु मानकर ग्रहण कर लिया, वैसे ही उसमें चलते रहो।" इस अध्ययन में आप सीखेंगे कि यीशु के साथ संगति में आपको कैसे रहना चाहिए।

जब आप शरीर में उत्पन्न हुए थे तब आप एक ही बार उत्पन्न हुए थे और जब आप यीशु को ग्रहण करते हैं तब आप आत्मिक रूप से जन्म लेते हैं, इस पुनः आत्मिक जन्म को यूहन्ना 3 में "नया जन्म" जैसे कहा गया है। शारीरिक दृष्टि से आप प्रत्येक रविवार दुबारा जन्म नहीं ले सकते आत्मिक जन्म के साथ भी ऐसा ही कुछ है।

उद्धार का निश्चय और अनन्तजीवन

सत्य-1

अनन्तजीवन क्या है? यूहन्ना 17 : 3 बताता है "....और अनन्त जीवन यह है कि वे तुझे जो एकमात्र सच्चा परमेश्वर है और यीशु मसीह को जिसे तूने भेजा है जाने।" दूसरे शब्दों में कह सकते हैं कि अनन्तजीवन यीशु है जो आपके ह्दय (आत्मा) में है। इसका अर्थ यह हुआ कि जब यीशु आप के जीवन में प्रवेश करेगा, तब वह आपको नया जीवन देगा और आप उसके साथ अनन्तकाल के लिए स्वर्ग में रहेंगे।

1 यूहन्ना 5:12 में लिखा है, "जिसके पास पुत्र है उसके पास जीवन है; जिसके पास परमेश्वर का पुत्र नहीं, उसके पास वह जीवन भी नहीं।" क्या होता है जब आप यीशु को ग्रहण करने के बाद पाप करते हैं आप अपना उद्धार नहीं खोते। इसे हम ऐसे समझ सकते हैं *मेरे तीन बच्चे हैं और कभी-कभी वे मेरा हुक्म नहीं मानते। क्या समझते हैं आप, क्या मैं उन्हें सदा के लिए छोड़ दूँगा? कदापि नहीं! वे मेरे बच्चे हैं, और मैं उन्हें प्यार करता हूँ। जो मैं करूँगा, वह यह कि उन्हें सुधारूँगा, और अनुशासित करूंगा। इब्रानियों 12:7 में लिखा है, "तुम दुःख को ताड़ना समझकर सह लो, क्योंकि परमेश्वर तुम्हें पुत्र जानकर तुम्हारे साथ व्यवहार करता है। वह कौन सा पुत्र है जिसकी ताड़ना उसका पिता नहीं करता? पर यदि वह ताड़ना जो सब की होती है, तुम्हारी नहीं हुई तो तुम पुत्र नहीं, परन्तु व्यभिचार की संतान ठहरे।" यूहन्ना 1:12 में लिखा है, "परन्तु जितनों ने उसे ग्रहण किया, उसने उन्हें परमेश्वर की संतान होने का अधिकार दिया, अर्थात् उन्हें जो उसके नाम पर विश्वास करते हैं।" इसलिए जब एक परमेश्वर का पुत्र पाप करता है तो वह सुधारा जाएगा, और यदि नहीं तो वास्तव में वह परमेश्वर का पुत्र नहीं है। लेकिन जो वास्तव में उसका पुत्र हैं उसका उद्धार कभी नहीं खो सकता, क्योंकि उसके पास अनन्त जीवन है। यदि हम यीशु को ग्रहण करने के बाद पाप करते हैं तो परमेश्वर हमको अनुशासित करेगा, वह हमको शिक्षित करेगा कि हम उसके सही मार्गों में चल सकें। वह हमारे उद्धार को हम से नहीं छीनेगा, क्योंकि हमारा उद्धार अनन्तकाल का है और अनन्तकाल का अर्थ जो खत्म होने वाला नहीं।

बपतिस्मा लें!

सत्य-2

यीशु ने मत्ती 28:19 में कहा, "इसलिए, जाओ और सब जातियों के लोगों को चेले बनाओ तथा उन्हें पिता, पुत्र और पवित्र आत्मा के नाम से बपतिस्मा दो।" हो सकता है जब आप बच्चे थे तब आपका बपतिस्मा हुआ हो। लेकिन यीशु ने कहा है केवल वे जो उसके पीछे चलते हैं उन्हीं के पास यह अधिकार है कि वे बपतिस्मा लें। क्या जब आप छोटे बच्चे थे, आप यीशु के पीछे चल रहे थे? नहीं, आप को तो यीशु के बारे में कुछ मालूम भी नहीं था। आप केवल तभी यीशु के अनुयायी बनते हैं जब आप विश्वास और पश्चाताप के द्वारा यीशु को अपने हृदय में ग्रहण करते हैं

छोटे बच्चें रहते हुए आपका बपतिस्मा क्यों नहीं होना चाहिए? क्योंकि बपतिस्मा इस बात का चिह्न है कि आप यीशु के अनुयायी हैं।

बाइबल में हम देखते हैं कि यीशु को ग्रहण करने के बाद उसके अनुयायियों ने पानी में बपतिस्मा लिया। डुबकी का बपतिस्मा क्या है? जब आपको बपतिस्मा दिया जाता है तब कोई आपके शरीर को पानी के अंदर थोड़ी देर के लिए डुबोता है। क्यों? क्योंकि यह मृत्यु, दफनाया जाना, और यीशु के पुनरुत्थान का प्रतीक है। जब आप छोटे बच्चे हैं तब आप ऐसा नहीं कर सकते लेकिन जब आप यीशु को ग्रहण कर लें तब यह ज़रूर करना चाहिए।

रोमियों 6:3-4 में कहा गया है, "क्या तुम नहीं जानते कि हम सब जो बपतिस्मे के द्वारा मसीह यीशु के साथ एक हुए, बपतिस्मे द्वारा उसकी मृत्यु में भी सहभागी हुए। इसलिए हम बपतिस्मे द्वारा उसकी मृत्यु में भी सहभागी होकर उसके साथ गाड़े गये हैं, जिससे कि पिता की महिमा के द्वारा जैसे मसीह जिलाया गया था, वैसे हम भी जीवन की नई चाल चलें।

पानी हमें नहीं बचाता, लेकिन केवल यीशु बचाता है। आप का बपतिस्मा इस बात का पहला चिह्न है कि आप वास्तव में यीशु के अनुयायी हैं। यदि आप नहीं जानते कि कहां आप का बपतिस्मा होना है, तो आप अपने अगुवे से पूछें।

अपनी बाइबल पढ़ें

सत्य-3

भजन संहिता 119:105 कहता है, "तेरा वचन मेरे पांव के लिए दीपक और मेरे मार्ग के लिए उजियाला है।" बाइबल परमेश्वर का वचन है। पहला भाग पुराना नियम, और दूसरा भाग नया नियम कहलाता है। नियम का अर्थ है "वाचा।"

आपको बाइबल कैसे पढ़नी चाहिए? बाइबल परमेश्वर का प्रेम-पत्र है जो आपके लिए है। बाइबल को नीचे दी गई विधि के अनुसार पढ़ें:

1. एक पुस्तक पढ़ना आरम्भ करें—उदाहरण के लिए: यूहन्ना की पुस्तक।
2. पहला पद पढ़ें।
3. परमेश्वर से मांगे कि वह आपको इस पद में आत्मिक सत्य दिखाए। उदाहरण के लिए यूहन्ना 1:1 में लिखा है: "आदि में वचन था और वचन परमेश्वर के साथ

था और वचन परमेश्वर था।"

इस पद में आत्मिक सत्य क्या हैं?

(क.) जगत की सृष्टि (परमेश्वर के) वचन द्वारा हुई
(ख.) वचन परमेश्वर था (पद 14 में पता चलता है कि यह वचन यीशु है)

4. इसी विधि के द्वारा पदों और परिच्छेदों को पढ़ें और परमेश्वर को अपने से बात करने दें कि आप जान सकें कि वह कौन है, आप के जीवन में कौन-कौन से पाप हैं, और आज्ञा पालन करने के लिए उसकी आज्ञाएं क्या हैं, इत्यादि।

प्रार्थना

सत्य-4

लूका 18:1 में परमेश्वर कहता है कि हमें निरन्तर प्रार्थना करते रहना चाहिए और इसे कभी भी बंद नहीं करना चाहिए। आप प्रार्थना कैसे करें? यहां यह बात महत्वपूर्ण है कि आप परमेश्वर के साथ अकेले में समय व्यतीत करें। नीचे लिखी विधि का इस्तेमाल करते हुए इसे आरम्भ करें:

1. बाइबल का पढ़ा जाना– 5 मिनट तक क्रम सं. 3 का उपयोग करें
2. यह कहकर प्रशंसा करें– "प्रभु परमेश्वर, मैं आपसे प्रेम करता हूं क्योंकि.."
3. धन्यवाद देना–"प्रभु, मैं तेरा धन्यवाद करता हूं, क्योंकि.."
4. दूसरों के लिए प्रार्थना करना–"प्रभु, मैं अपने बेटे, जैफ के लिए प्रार्थना करता हूं क्योंकि उसे आवश्यकता है..."

   (प्रार्थना जारी रखें उन लोगों के लिए भी जिन्होंने प्रभु यीशु को ग्रहण नहीं किया है।) लोगों के नामों की सूची बनाएं। इनमें से कुछ नाम रविवार मंगलवार इत्यादि की सूची पर रखें (और इन दिनों उनके लिए प्रार्थना करें)
5. प्रार्थना - परमेश्वर को अपने निवेदन बताएँ
6. अंगीकार- कुछ समय के लिए खामोश रहें' और परमेश्वर से पूछें कि आपके जीवन में यदि कोई पाप अथवा बुराई हो तो वह उन्हें प्रकट करे।

1 यूहन्ना 1: 9 में लिखा है, "यदि हम अपने पापों को मान लें तो वह हमारे पापों को क्षमा करने, और हमें हमारे सब अधर्मों से शुद्ध करने में विश्वासयोग्य और धर्मी है"। यह उन लोगों के लिए लिखा गया है जिन्होंने पहले ही यीशु को ग्रहण कर लिया है। जब आप गंदे होते हैं तब आपको नहाना जरूरी है। अंगीकार करना मसीहियों के लिए एक आत्मिक स्नान है।

इवैंजेलिकल चर्च का सदस्य बनें

सत्य-5

इफिसियों 1:23 में लिखा है, "क्योंकि कलीसिया मसीह की देह है।" यीशु मसीह कलीसिया का सिर है। इफिसियों 1: 22 में लिखा है, "उसने सब कुछ उसके पैरों तले कर दिया

और उसे सब वस्तुओं पर शिरोमणि ठहराकर कलीसिया को दे दिया।"

पतरस शब्द का अर्थ है "चट्टान"। प्रभु यीशु को चट्टान के रूप में दर्शाया गया है। मत्ती 16 : 18 में परमेश्वर ने ऐसा नहीं कहा कि पतरस कलीसिया का सिर है, लेकिन यीशु को सिरे का पत्थर कहा गया है। 1 कुरिन्थियो 3 : 11 में लिखा है, "क्योंकि उस नींव को छोड़ जो पड़ी है-और वह यीशु मसीह है और कोई दूसरी नींव नहीं डाल सकता।"

एक कलीसिया बपतिस्मा पाए हुए विश्वासियों की देह है जो एकसाथ कुछ विशेष उद्देश्य के लिए इकट्ठा होते हैं, जैसे :

1. आराधना - दो संस्कार अपनाए जाते हैं–प्रभु भोज और बपतिस्मा
2. प्रचार
3. शिष्यता
4. मानव आवश्यकता सेवा
5. संगति

आप को कलीसिया से संबंधित क्यों होना आवश्यक है?

1. मसीह में अन्य भाइयों के साथ मिलकर प्रभु की प्रशंसा करना
2. परमेश्वर के वचन को सीखना
3. मसीह में दूसरे विश्वासियों के साथ संगति करना। (कलीसिया आपका अत्मिक परिवार है)
4. दूसरों की सेवा करना
5. जिन्होंने यीशु को ग्रहण नहीं किया, उन लोगों को यीशु के विषय में बतलाना

गवाही

सत्य-6

मत्ती 28:19 में यीशु ने कहा, "जाओ और चेला बनाओ।" इसका अर्थ यह हुआ कि यीशु का प्रत्येक अनुयायी, संसार के खोए हुए व्यक्ति के पास जाए और जो कुछ उनके अपने जीवन में हुआ है उसे बताएं। यह गवाही देना आपके अपने परिवार से ही शुरु होनी चाहिए। आप उन्हें बता सकते हैं कि यीशु को उद्धारकर्ता ग्रहण करने से पहले आपका जीवन कैसा था। कैसे आपने जाना कि यीशु की आपको आवश्यकता है, कैसे और कब आपने यीशु को ग्रहण किया, और अब आपका जीवन यीशु के साथ कैसा है। इसके बाद आप प्रत्येक से पूछ सकते हैं कि क्या वे भी यीशु को ग्रहण करना और अनन्त जीवन का निश्चय प्राप्त करना चाहते हैं।

यदि व्यक्ति कहता है, "हां," तब आप उसे नीचे लिखे पदों के द्वारा समझाएँ:

1. 1यूहन्ना 5:13 – आप को अनन्तजीवन का निश्चय हो सकता है। अनन्तजीवन का अर्थ है, यीशु आप के हृदय में है (यूहन्ना 17:3)। अनन्तजीवन के द्वारा आपको अभी शांति मिल सकती है (यूहन्ना 10:10 और 10:17) और मरने के बाद स्वर्ग में जाने का पक्का विश्वास।
2. रोमियों 3:23 –मनुष्य की सब से बड़ी समस्या पाप है। हम सब पापी हैं। क्योंकि पाप के कारण ही एक बड़ी रुकावट आती है जो हमें परमेश्वर से अलग करती है।

3. रोमियों 6:23 –"पाप की मज़दूरी मृत्यु है" इसका अर्थ है कि पाप का परिणाम मृत्यु है। मृत्यु का अर्थ परमेश्वर से अलग होना है। इसका अर्थ यह हुआ है कि अब हमारा जीवन शांति, आनन्द और अनंतजीवन से रहित हो जाएगा। यह तनावपूर्ण, जीवन से रहित, खाली जीवन, डरा हुआ और आत्मग्लानि से भरा हुआ होगा। यह एक ऐसा जीवन होगा जो स्वर्ग से अलग और अनन्तकाल के लिए परमेश्वर की उपस्थिति से दूर होगा।
4. रोमियों 5:8 –प्रभु यीशु हमारे पापों के लिए मरा। मसीह ने अपने आप को और मेरे पापों की कीमत को हमारे स्थान पर अपने प्राण देकर चुकाया।
5. रोमियों 8:9, 10 तथा 10:9,10 –प्रभु यीशु को ग्रहण करने के लिए आवश्यक है कि आप उसे अपना प्रभु और उद्धारकर्ता ग्रहण करें। इसका अर्थ यह हुआ कि आप अपनी इच्छा से यीशु को अपने जीवन पर नियंत्रण करने दें। यीशु को ग्रहण करने का अर्थ यह भी है कि आप उसपर पूरा विश्वास करते हैं। विश्वास करने का अर्थ यह हुआ कि आप अन्य वस्तुओं पर विश्वास करना छोड़कर अपना पूरा विश्वास यीशु पर करने लगते हैं।
6. रोमियों 10:13 –व्यक्ति से पूछें कि क्या वह अपना जीवन यीशु को देना चाहता है। यदि वह कहता है, 'हां,' तो आप उससे कहें कि वह प्रार्थना करे और ठीक इसी घड़ी परमेश्वर को अपने जीवन में प्रवेश करने दे (क्योंकि जो कोई प्रभु का नाम पुकारेगा, वह बच जाएगा (रोमियों 10:13)।"

यूहन्ना रचित सुसमाचार
बाइबल-अध्ययन

द्वारा: वेलन मूर

इवैंजलिस्टिक क्रम
पायनियर इवैंजलिज़्म क्रम

आपके लिए परमेश्वर की अद्भुत योजना!

यूहन्ना रचित सुसमाचार बाइबल-अध्ययन

पाठ-1

आपका जन्म इस पृथ्वी पर एक उद्देश्य-परमश्वर को जानने, प्रेम करने व उसकी महिमा करने के लिए हुआ है। आप परमेश्वर को व्यक्तिगतरूप से जान सकते हैं जब आप परमेश्वर के पुत्र, मुक्तिदाता यीशु मसीह, से मिलते हैं व उसके बारे में जानते हैं तो बाइबल परमेश्वर प्रदत्त उन सभी अनुपम उपहारों को प्रकट करती हैं जो यीशु मसीह को जानने वालों और उसके अनुयायियों को दिये गये हैं।

उन अनुपम उपहारों एवं लाभों में से कुछ के बारे में नीचे लिखा गया है। इस अध्ययन का संबंध यूहन्ना रचित सुसमाचार से है। आप परमेश्वर को बाइबल द्वारा स्वयं से बातें करने दें। हर पद में क्या लिखा है, उस विषय पर सोचें। तब अपने शब्दों में जवाब दें। पद के साथ दिये गये रिक्त स्थान में अपना उत्तर लिखें। अब यूहन्ना के अध्याय 10 के पद 10 पर आएं

1. उत्तम चरवाहा यीशु क्यों आया? यूहन्ना 10:28

   ....

2. आपके विचार में "बहुतायत के जीवन" से यीशु का क्या तात्पर्य है।?

   ....

3. जो वास्तव में यीशु में विश्वास करते हैं उन्हें वह कैसा जीवन प्रदान करता है? 10:28

   ....

4. जब हम प्रार्थना में यीशु का नाम लेकर मांगते हैं तो पिता परमेश्वर क्या करता है? 16:23

   ....

5. आपके विचार में "यीशु के नाम से" मांगने का क्या अर्थ है?

   ....

6. यीशु हमारी प्रार्थना का उत्तर क्यों देना चाहता है? 16:24

   ....

7. हम अपने जीवन में कैसे स्वतंत्र होते हैं? 8:31, 32

   ....

8. आपके विचार में यीशु का "उस सत्य" से क्या तात्पर्य है जिसके द्वारा हम स्वंतत्र होते हैं? 17:17

   ....

9. किसी को यीशु के वचन में बने रहने के लिए क्या करना होगा? 8:31

   ....

10. यूहन्ना 14:1 में यीशु कहता कि तुम्हारा ....हो। वह चाहता है कि जो परमेश्वर में विश्वास रखते हैं वे ....।

11. परमेश्वर के विशाल घर, स्वर्ग में क्या है? 14:2

12. जब यीशु पुन: स्वर्ग पर चढ़ा तो वह वहां क्या करने गया? 14:3

....

13. स्वर्ग में अपने अनुयायियों के लिए घर बना चुकने के बाद यीशु सर्वप्रथम क्या करेगा? 14

....

14. तब यीशु क्या प्रतिज्ञा करता है?

....

15. वह क्या चीज़ है जिसे खरीदना असंभव है, परन्तु उसे यीशु हमें नि:शुल्क दे देता है। 14:26

....

16. यदी हम यीशु से प्रेम करते हैं तो हमारे प्रति परमेश्वर की भावना क्या होती है? 16:27

....

क्यों न आप अभी शांतिपूर्वक सिर झुकाकर प्रार्थना करें? परमेश्वर का धन्यवाद दें कि वह आपके पापों से भरे जीवन के बावजूद भी आपसे प्रेम करता है।

बाइबल में दो प्रकार की मृत्यु के विषय में बताया गया है। एक तो शारीरिक मृत्यु और दूसरी आत्मिक मृत्यु अर्थात् यीशु को ग्रहण किये बिना ही मृत्यु को प्राप्त होना। इस प्रकार की मृत्यु का मतलब है परमेश्वर से अलग होना अर्थात् आग की जगह में जाना जो नर्क कहलाता है।

17. परन्तु यीशु उन लोगों से क्या वायदा करता है जो जीवित हैं और संपूर्ण हृदय से यीशु से प्रेम करते हैं?11:26

....

उन महत्वपूर्ण शब्दों पर ध्यान दीजिये जो मार्था ने यूहन्ना 11:27 में यीशु को उत्तर देते हुए प्रयोग किये। उसने वही कहा जो वह यीशु के बारे में और उसकी मृत्यु पर विजय के बारे में विश्वास रखती थी: "हां, हे प्रभु, मैं विश्वास कर चुकी हूं, कि परमेश्वर का पुत्र मसीह जो जगत में आने वाला था, वह तू ही है।"

18. यीशु का वचन समझ जाने पर हमारे अन्दर क्या होने लग जाता है?

....

19. जैसे ही यीशु विश्वास रखने वालों को परिपूर्ण करता है हमें.. प्राप्त होता है जो हमें यीशु के लिए जीने की शक्ति देता है। 1:16

अनुग्रह तो परमेश्वर का उपहार है जो उपार्जित नहीं किया जा सकता। यह तो यीशु के द्वारा हमारी पाप भरी दरिद्रता के बदले परमेश्वर के आत्मिक धन को प्राप्त करना है। हम अपने पापों से अनुग्रह के द्वारा बचाये जाते हैं, कर्मों से नहीं। "क्योंकि विश्वास के द्वारा अनुग्रह से ही तुम्हारा उद्धार हुआ है"—और यह तुम्हारी ओर से नहीं, वरन् परमेश्वर का दान हैं; यह कार्यों के कारण नहीं जिससे कि कोई घमंड कर (इफिसियों 2:8, 9)।"

20. यूहन्ना हमारे सामने यीशु की तस्वीर "परमेश्वर का मेमना" के रूप में प्रस्तुत करता है। यीशु ने क्रूस पर चढ़कर हमारे पापों के लिए क्या किया? 1:

....

21. यूहन्ना 1:12 में एक अकेला वाक्यांश "यीशु में विश्वास" का अर्थ बताता है। यीशु में विश्वास करने का अर्थ उसे अपने हृदय में मसीह और प्रभु करके ....है।

इस अध्ययन में आपने अपने जीवन में परमेश्वर के प्रेमपूरित उद्देश्य के बारे में सीखा और साथ ही उसको जानने के कुछ अद्भुत लाभों के बारे में भी। जो वास्तव में यीशु से प्रेम करते हैं उनको प्राप्त होता है–बहुतायत का जीवन, अनन्त जीवन, प्रार्थना का उत्तर, मुक्ति, स्वर्ग में घर, आनन्द, शांति तथा अनुग्रह प्राप्त होता है। साथ ही साथ परमेश्वर उनके पापों को भी क्षमा कर देगा।

जब आप पापों का पश्चाताप करके यीशु को ग्रहण करते हैं, वह प्रभु के रूप में सदैव के लिए अपने हृदय में आ जाएगा। पश्चाताप का मतलब है पापों से फिरकर यीशु के पीछे चलना। वह आपके पापों के लिए मरा और फिर जीवित हो उठा। अगले पाठ में आप परमेश्वर के दानों में से एक 'अनन्तजीवन' के बारे में और सीखेंगे।

युगानुयुग जीवित रहने की सामर्थ्य

यूहन्ना रचित सुसमाचार बाइबल-अध्ययन

पाठ-2

बहुत से लोगों का सोचना है कि अनन्तजीवन तो मृत्यु के बाद मिलता है। दूसरी तरफ कुछ लोगों की सोच है कि अनन्तजीवन उन सद्‌कर्मों के परिणामस्वरूप मिलेगा जो कि पाप धोने के लिए किये जाते हैं। यह सत्य नहीं है। मुट्ठी भर लोग ही समझते हैं कि यीशु बार-बार हमें बताता है कि हम पूर्णरूपेण जान सकते हैं कि अनन्तजीवन तो इसी समय है। अध्याय 17 का पद 3 पढ़ें और पढ़ के रिक्त स्थान में अपने शब्दों में उत्तर लिखें।

1. अनन्त जीवन क्या है? 17:3

   ....

2. आपके विचार में हम परमेश्वर और यीशु को कैसे "जान सकते" है? 17:7

   ....

   अनन्त जीवन भविष्य के लिए मात्र वायदा नहीं है। अनन्तजीवन तो एक व्यक्ति विशेष यीशु में समाहित है। यीशु को व्यक्तिगत प्रभु व मुक्तिदाता के रूप में ग्रहण करना ही अनन्तजीवन का अलिंगन है।

3. यीशु को पाने का मार्ग क्या है? 5:39

   ....

4. सब के लिए अनन्तजीवन का वचन किसके पास है? 6:67-69

   ....

5. यदि आप अनन्तजीवन से वंचित हैं तो क्या होगा? 3:15

   ....

6. यीशु की भेड़ों को अनन्तजीवन कैसे प्राप्त होता है? 10:28
7. जब हम परमेश्वर की इच्छा ताख पर रखकर अपनी इच्छा पूरी करते हैं तो उसका क्या परिणाम होगा? 12:25

   अनन्त जीवन को हम किस प्रकार बनाए रख सकते हैं?

8. यीशु कहता है "बिना मेरे ....
   ...." 15:5
9. कौन है जो सर्वशक्तिमान है और सबको अनन्तजीवन देने में सक्षम है?

   ....

   यूहन्ना 3:16 दो बार पढ़कर निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दें:

10. संसार के लोगों से कौन प्रेम करता है?

    ....

11. परमेश्वर ने अपने प्रेम के कारण आपके साथ क्या किया?

    ....

12. परमेश्वर का "इकलौता पुत्र" कौन है?

....

13. अनन्तजीवन कौन प्राप्त कर सकता है?

....

14. जो परमेश्वर के इकलौते पुत्र यीशु में विश्वास नहीं करते वे..

....

15. कितने लोगों को अनन्तजीवन मिल सकता है?

....

16. आपके विचार में अनन्तजीवन की अविध क्या है?

....

17. परमेश्वर हमें अनन्तजीवन क्यों देता है?

....

18. आप नाश होने से कैसे बच सकते हैं?

....

19. यूहन्ना 5:24 में यीशु कुछ बहुत महत्वपूर्ण बातें कहता है। रिक्त स्थान भरिये:
    यीशु का अनन्त जीवन प्राप्त करने के लिए सर्वप्रथम...
    ....अति आवश्यक है।

20. तब यीशु तीन महत्वपूर्ण बातों का वायदा करता है:
    आपका ....
    आप पर ....नहीं ....
    आप ....में ....

    हर कोई ठीक उसी प्रकार यह जान सकता है कि वह मृत्यु से जीवन में प्रवेश कर रहा है जैसे कि हर कोई अपने जन्म और विवाह की तिथि जानता है। क्या आपने अभी-अभी मृत्यु से जीवन में प्रवेश किया है। आप यह जान सकते हैं।

21. यीशु अनन्तजीवन का वर्णन..करता है। 4:13, 14
22. तो अनन्तजीवन कैसे प्राप्त कर सकता है? पद 14

....

23. यूहन्ना 4:14 में पानी पीने का तात्पर्य क्या है? सर्वोत्तम उत्तर पर निशान लगाये:
    (अ) वास्तविक पानी पीना
    (ब) यीशु में विश्वास करना
    (स) कुआं खोदना
    (द) बपतिस्मा लेना

24. यूहन्ना 6:47, 48, 51 में यीशु अपने को दूसरे शब्दों में चिह्नित करता है, यीशु................
    ....है।

    उन दो गुणों को लिखिये जो आपके दिमाग में आते हैं जब आप रोटी को देखते, छूते व खाते हैं। ....

25. आप उपरोक्त गुणों को यीशु के साथ कैसे जोड़ेंगे?

....

26. अगर हम जीवित यीशु मसीह में विश्वास करें तो हमें क्या प्राप्त होगा? 6 : 47 आपने सीखा कि अनन्तजीवन और सदैव का जीवन एक ही चीज़ है। यीशु को व्यक्तिगतरूप से जानने का परिणाम ही अनन्तजीवन है। आपको मालूम हो गया है कि अनन्तजीवन सदैव के लिए है। जिसके पास अनन्तजीवन है वह कभी नाश नहीं होगा। यीशु आपका जीवित जल और जीवन की रोटी है।

अगले पाठ में आप सीखेंगे कि दुनिया की सबसे बुरी बीमारियों से मरने से कैसे बचा जा सकता है।

पाप की त्रासदी

यूहन्ना रचित सुसमाचार बाइबल-अध्ययन

पाठ-3

प्रत्येक मनुष्य में एक घातक रोग, पाप पाया जाता है जो आप के प्रिय जनों को संक्रमित करता है, तथा यह माता-पिता के द्वारा बच्चों में आता है। कुछ लोग सोचते हैं कि वे इससे छुटकारा पा रहे हैं। बहरहाल परमेश्वर आपके पापों का निर्णय करता है। हम इस बात के कृतज्ञ हैं कि परमेश्वर ने पाप का उपचार उपलब्ध कराया है।।

आइये हम फिर यूहन्ना रचित सुसमाचार और बाइबल के कुछ मुख्य पदों को देखें। याद रहे कि उत्तर देने के पहले इन पदों को ध्यानपूर्वक अवश्य पढ़ें।

1. यूहन्ना यीशु को "परमेश्वर का मेमना" कहता है। यीशु ने हमारे पापों के लिए क्या किया? यूहन्ना 1:29

   ....

2. यीशु कौन है? परमेश्वर को "पिता" कहने के द्वारा यीशु ने क्या दावा किया? 5:17-18

   ....

3. यीशु का यह दावा सत्य था! परमेश्वर को "पिता" कहने पर धार्मिक अगुवों की क्या प्रतिक्रिया थी? 10:31-33..

   ....

   यीशु ने पाप क्षमा किये, परमेश्वर के समान आराधना स्वीकार की। यीशु पाप रहित था, उसमें परमेश्वर के ही गुण थे। यीशु परमेश्वर और मनुष्य, दोनों था।

4. अन्ततः कौन पापियों का न्याय करेगा? 5:22, 26-27...

   ....

5. एक अत्यंत धार्मिक व्यक्ति को यीशु पाप से छुटकारे का क्या उपाय बताता है? 3:3 ....

   ....

   शरीर में जन्म लेना ही काफी नहीं है। पापी होने के कारण अन्तर में नया जन्म लेना आवश्यक है।

6. हमारे लिए फिर से जन्म लेना आवश्यक है क्योंकि यीशु के बिना हम ....
   ....के दास हैं। 8:34

7. जो पाप और वासना में लिप्त हैं उनका जनक कौन है? 8 : 44

   ....

   हमारा एक सांसारिक पिता है—शैतान—जो चाहता है कि हम अनादिकाल के लिए उसके साथ नर्क में रहें। हमें एक प्रेमी स्वर्गीय पिता की आवश्कता है।

8. चूंकि हमने अपने को संपूर्णरूप से यीशु को समर्पित नहीं किया, इसलिए हम ....
   .... 3:18

9. यूहन्ना 8:1 - 11 पढ़ें।
   यीशु ने घमंडी धार्मिक अगुवों से क्या कहा? 8:7 ....

यीशु ने पापी स्त्री को क्षमा कर दिया। उसने उस स्त्री के हृदय में सच्चा पश्चाताप देखा। यीशु इसी प्रकार का व्यवहार उन सब से करता है जो ईमानदारी से अपने पापों को स्वीकार करते हैं और नये जन्म की इच्छा रखते हैं। "क्योंकि सब ने पाप किया है और परमेश्वर की महिमा से रहित हैं।" रोमियों 3:23

10. उपरोक्त पद के अनुसार कितने लोगों ने पाप किये?..

11. पाप क्या है? सही जवाब पर निशान लगायें:
    (अ) परमेश्वर की व्यवस्था का उल्लंघन करना
    (ब) सभी प्रकार की अधार्मिकता
    (स) परमेश्वर की महिमा से रहित होना
    (द) परमेश्वर के प्रति विद्रोह
    (घ) अविश्वास: क्योंकि यह परमेश्वर को झूठा ठहराता है
    (न) परमेश्वर की इच्छा के विरुद्ध स्वेच्छाचारी जीवन व्यतीत करना

पाप परमेश्वर के प्रति विद्रोह है जोकि तटस्थता की मनोवृति है। प्रश्न 11 के सभी उत्तर बाइबल में पाप की परिभाषा हैं। धार्मिक लोग नर्क में जाते हैं। अच्छे लोग नर्क में जाते हैं। बुरे लोग नर्क में जाते हैं। सिर्फ वे लोग जिनके पाप क्षमा हो चुके हैं, स्वर्ग में जाते हैं। क्षमा प्राप्ति में सम्मिलित है-पश्चाताप के द्वारा पापों से मन फिराना और यीशु को प्रभु मानकर उसके सामने संपूर्ण समर्पण।

"क्योंकि पाप की मज़दूरी तो मृत्यु है, परंतु परमेश्वर का वरदान हमारे प्रभु यीशु में अनन्त जीवन है।"-रोमियों 6:23

12. हममें से प्रत्येक के लिए पाप की मज़दूरी क्या है? ....
    ....

13. क्या हमें परमेश्वर से उद्धार पाने के लिए मेहनत करनी पड़ती है? ....
    ....

14. तो हमें अनन्तजीवन कैसे प्राप्त होता है? ....
    ....

"क्योंकि विश्वास के द्वारा अनुग्रह ही से तुम्हारा उद्धार हुआ है-और यह तुम्हारी ओर से नहीं, वरन् परमेश्वर का दान है। यह कार्यों के कारण नहीं जिससे कि कोई घमंड करे।" - इफिसियों 2:8-9

इस पद को पढ़कर उत्तर दें:

15. हम नर्क से कैसे बचे हैं?...

16. तब हम इस अनन्तजीवन को कैसे प्राप्त करते हैं?..
    अनुग्रह पिता का उपहार है जैसे कि विश्वास। आप अनुग्रह अपने कामों से नहीं पा सकते हैं।

17. जो लोग यीशु को प्रभु और मुक्तिदाता के रूप में अस्वीकार करते हैं, यीशु ऐसे लोगों से क्या वायदा करता है?

18. यूहन्ना 8:24 ....

19. हमें पाप की शक्ति से कौन मुक्ति दिला सकता है? 8:36 ....
    ....

20. इस जगत में जो यीशु को सबसे अच्छी तरह से जानते थे, यीशु ने उनसे क्या पूछा? 8:46
    ....

यीशु ने कभी पाप नहीं किया था। वह भी हमारी तरह परीक्षा में लाया गया। यीशु आपसे प्रेम करता है। उसने इसी प्रेम के कारण क्रूस पर आपके पापों की सज़ा उठानी चाही।

मनुष्यों के लिए एक बार मरना और उसके बाद न्याय का होना नियुक्त किया गया है। -इब्रा. 9:27

21. हम सब के लिए वे कौन-सी दो चीज़ें नियुक्त हैं?

(अ) ....

(ब) ....

जो लोग यीशु के द्वारा प्रदत्त अनन्तजीवनरूपी उपहार स्वीकार करते हैं, वे इन दो भयंकर बातों पर विजय पायेंगे। अगले पाठ में आप सीखेंगे कि यीशु ने किस प्रकार आपके पाप व उनके परिणाम अपने ऊपर उठा लिया।

कर्म एवं उनके परिणाम

यूहन्ना रचित सुसमाचार बाइबल-अध्ययन

पाठ-4

यह संभव ही नहीं है कि हम पाप करें और उसकी सजा न पायें। हम परमेश्वर की आंखों से बच नहीं सकते। "मनुष्य के मार्ग तो यहोवा की दृष्टि में हैं, और वह उसकी सब चालों को देखता रहता है।" -नीतिवचन 5:21 प्रत्येक पद पढ़कर जवाब अपने शब्दों में लिखें:

1. स्वर्गीय पिता ने हमारा न्याय करने के लिए क्या किया है? 5:22

 ....

2. परमेश्वर का पुत्र, यीशु हमारा न्यायकर्ता क्यों है? 5:23

 ....

3. पिता परमेश्वर ने अपने पुत्र यीशु को क्या दो चीज़े दी हैं? 5:26, 27

 ....

4. यीशु किस प्रकार का न्याय करेगा 8:16

 ....

5. न्याय के समय "इस संसार का राजकुमार" शैतान, का क्या हुआ? 12:31

 ....

6. पृथ्वी पर शैतान की शक्ति व उसका अधिकार समाप्त हो जाने से क्या प्रदर्शित हुआ?

 ....

7. यीशु को कब "ऊपर उठाया गया?" 12:33

 ....

"इसलिए हममें से प्रत्येक व्यक्ति परमेश्वर को अपना-अपना लेखा देगा।"......................
....*रोमियों 14:12*

8. न्याय के दिन कितने लोग परमेश्वर को अपना-अपना लेखा देंगे?

 ....

9. न्याय के दिन किसके कर्म परमेश्वर के प्रति जवाबदेह होंगे?

 ....

परमेश्वर के पास हमारा सब लेखा जोखा रखने वाला एक अदृश्य विडियो कैमरारूपी अभिलेखपाल है। वह चौबीसों घंटे हम पर नज़र रखता है। वह आपकी नीयत, विचार, शब्द और सब प्रकार के कर्म के बारे में जानता है। न्याय का दिन तो नियत है।

"तुम सुन चुके हो कि कहा गया था-व्यभिचार न करना, परन्तु मैं तुमसे कहता हूं कि जो कोई किसी स्त्री को कामुकता से देखे, वह अपने मन में उससे व्यभिचार कर चुका।" मत्ती 5:27

10. किसी भी व्यक्ति में व्यभिचार की शुरुआत कब हो जाती है?
 (केवल एक सही उत्तर पर गोला बनाएं):

(अ) जब कोई देखकर इच्छा रखता हो।
(ब) जब कोई पाप-कर्म करता हो।

यीशु के ये शब्द पढ़ें: "क्योंकि हृदय से (अ) बुरे-बुरे विचार (ब) हत्या, (स) व्यभिचार (द) परस्त्रीगमन, (य) चोरी, (र) झूठी साक्षी, और (ल) निन्दा निकलती हैं। ये ही वे बातें हैं जो मनुष्य को अशुद्ध करती हैं। मत्ती 15:19, 20

11. प्रत्येक भयंकर पाप अपने शब्दों में लिखें:
अ. ...., ब. ....
स. ...., द. ....
य. ...., र. ....
ल. ....,
12. इन पापों का उद्गम क्या है?
13. इन में से कौन-सा पाप सबसे अधिक आपको आकर्षित करता है?
....
ये भयंकर पाप हमारे वैवाहिक जीवन, हमारे बच्चों अथवा हमारे कार्यों का विनाश कर सकते हैं। परन्तु ये ही सबसे भयंकर पाप नहीं है। इनसे भी अधिक अक्षम्य पाप हैं जो हमें नर्क में धकेलते हैं।
14. यह कौन-सा भयंकर अक्षम्य पाप है? यूहन्ना 8:24 ....
....
यीशु मसीह सम्पूर्ण परमेश्वर और सम्पूर्ण मनुष्य था। आइये, हम बहुत ध्यानपूर्वक नज़दीक से देखें कि उसने क्रूस पर हमारे लिए क्या किया? निम्नलिखित पद पढ़ें: इब्रा. 10:10–18
"इसी इच्छा के द्वारा यीशु मसीह की देह के एक बार ही सदा के लिए बलिदान चढ़ाये जाने से हम पवित्र किये गये हैं। प्रत्येक याजक प्रतिदिन खड़ा होकर सेवा करता था एक ही प्रकार का बलिदान जो पापों को कभी दूर नहीं कर सकता, बार-बार चढ़ाता है। परन्तु यह याजक तो पापों के बदले सदा के लिए एक ही बलिदान चढ़ाकर परमेश्वर के दाहिने जा बैठा। क्योंकि उसने एक ही बलिदान के द्वारा उनको जो पवित्र किये जाते हैं, सदा के लिए सिद्ध कर दिया है। मैं उनके पापों और उनके अधर्म के कामों को फिर स्मरण न करूंगा। अब जहां इनकी क्षमा हो गयी है तो वहां पाप के लिए कोई बलिदान बाकी न रहा।"
15. पद 10 फिर देखें और बतायें कि यीशु मसीह को हमारे पापों का मूल्य चुकाने के लिए कितनी बार अपना बलिदान देना पड़ेगा? ....
....
"पवित्रीकरण" का अर्थ है "शुद्ध किया जाना, बचा रखना (मृत्यु के दंड से)। जो कुछ यीशु ने किया वह इतना शक्तिशाली है कि उसकी नकल करना असंभव है। जो कुछ यीशु कर चुका है कोई भी और बलिदान उसमें जोड़ा नहीं जा सकता। हमारे पापों को अपने ऊपर लेकर वह हमारे बदले मर गया। "प्रभु" शब्द यूहन्ना रचित सुसमाचार में चालीस से अधिक बार प्रयुक्त हुआ है। यीशु ने हमारा प्रभु "स्वामी" होने का अधिकार अपने प्रेम के द्वारा खरीद लिया।
16. कौन-सी वस्तु हमें पापों से छुटकारा नहीं दिला सकती? पद 11 ....
....

17. मनुष्य, यीशु मसीह ने क्रूस पर हमारे लिए क्या किया? पद 12 ....
....
18. यह बलिदान कब तक प्रभावी रहेगा? ....
....
19. जब कभी कोई बैठ जाता है तो इसलिए कि थक गया हो अथवा इसलिए कि उसने अपना कार्य समाप्त कर लिया हो। लेकिन यीशु मसीह क्यों परमेश्वर की दाहिनी ओर जा बैठा?
....
20. हमें परमेश्वर के समक्ष सिद्ध और पवित्र ठहराने के लिए यीशु को कितनी बार अपने प्राण देने पड़ेंगे? -पद 14
....
21. हमारे पापों के लिए यीशु ने जो अपना लहू बहाया, अब परमेश्वर हमारे कितने और पापों को याद रखेगा? -पद 17
....

यीशु ने सभी के लिए अपना बलिदान दिया। परन्तु जो लोग उसे अपने प्रभु और मुक्तिदाता के रूप में स्वीकार करेंगे, वे ही उसके क्रूस की मृत्यु से लाभन्वित होंगे।

22. चूंकि परमेश्वर ने यीशु के बलिदान को हमारे पापों के लिए पूर्ण क्षमा के रूप में स्वीकार किया है, तो क्या बार-बार सार्वजनिकरूप से यीशु को बलिदान देने की आवश्यकता है? क्यों?
....

हमारे पापों हेतु परमेश्वर का समाधान
यूहन्ना रचित सुसमाचार बाइबल-अध्ययन
पाठ-5

क्रूस पर यीशु की मृत्यु के समय कुछ ऐसा हुआ कि न तो उसके पहले, और न ही उसके बाद कभी हुआ। आइये, यूहन्ना रचित सुसमाचार में इस घटना के बारे में पढ़ते हुए क्रूस की गहराई पर ध्यान दें। यूहन्ना : अध्याय 19 व 20

यीशु की मृत्य-यूहन्ना 19:15-37 पढ़ें

1. उस समय के शासक पिलातुस ने यीशु को...सैनिकों को सौंप दिया 19:16
2. आपके विचार में सैनिकों ने क्या सोचा? ....
....
3. उस समय यीशु को कैसा महसूस हो रहा होगा? ....
....
4. यीशु क्या उठाये हुए था? ....
....
5. सैनिकों ने यीशु के साथ क्या किया? पद 18 और 23 ....
6. क्रूस पर लटके यीशु को क्या पहनाया गया था? ....
7. क्रूस पर चढ़े हुए यीशु ने क्या देखा और क्या कहा? 19:26,27................................

   तब यीशु ने कहा "हे पिता, इन्हें क्षमा कर, क्योंकि ये नहीं जानते कि क्या कर रहे हैं" (लूका 23:34)
8. इस पद के अनुसार यीशु ने उन लोगों के प्रति क्या प्रतिक्रिया व्यक्त की जिन्होंने उसे अन्यायपूर्वक मार डाला। ....
....
9. पद 30 पढ़कर बतायें कि क्रूस पर यीशु के अंतिम शब्द क्या थे? ....
....
10. उसका तात्पर्य (अन्तिम शब्दों से) क्या था? ....
....

    "जो (यीशु) पाप से अनजान था, उसी को उस (परमेश्वर) ने हमारे लिए पाप ठहराया कि हम उसमें परमेश्वर की धार्मिकता बन जायें" (2 कुरिन्थियों 5:21)।
11. यह पद यीशु के विषय में कौन-सी दो बातें बतलाता है?
....

    प्रेरित पतरस लिखता है, *"मसीह भी सबके पापों के लिए एक ही बार मर गया, अर्थात् अधर्मियों के लिए धर्मी, जिससे वह हमें परमेश्वर के समीप ले आये" (1पतरस 3:18)।*

12. यीशु हमारे ....के लिए मरा।
13. यीशु को कितनी बार और मरना होगा
....

14. उसकी मृत्यु ने हमें क्या प्रदान किया?..
....

"उसने स्वयं अपनी ही देह में क्रूस पर हमारे पापों को उठा लिया जिससे हम पाप के लिए मरें और धार्मिकता के लिए जीवन व्यतीत करें, क्योंकि उसके घावों से तुम स्वस्थ हुए हो। (1पतरस 3:24)

15. क्रूस पर चढ़कर यीशु ने अपने ऊपर क्या ले लिया?
....
16. ....चंगाई और क्षमा प्राप्त होती है।

यूहन्ना 15 : 9,13 पद पढ़े

17. यीशु ने हमारे लिए अपना जीवन बलिदान करना क्यों चुना?
....

यीशु मसीह का गाड़ा जाना : यूहन्ना 19:38-42 पढ़ें।

1. यीशु के वे कौन दोस्त थे जिन्होंने यीशु के शव की देख-रेख की? - पद 38-39..........
....
2. उन तीन चीज़ों की सूची बनाएं जो उन्होंने यीशु के शरीर पर किये:
   अ)..
   ब)..
   स)..

यीशु का पुनरुत्थान - यूहन्ना 20:1-31 पढ़ें।

1. मरिमय मगदलीनी ने क्या किया? ....
....
2. पतरस ने क्या किया ....
....
3. यीशु ने स्वयं को किन पर प्रकट किया? पद 11—29 ....
....
4. थोमा ने क्या किया? पद 24-25 ....
....पद 26-29 ......
....
....
5. आपने यीशु के साथ क्या किया है?...
6. यूहन्ना रचित सुसमाचार क्यों लिखा गया? पद 31 ....

पौलुस प्रेरित कहता है, "मैंने यह बात जो मुझ तक पहुंची थी उसे सबसे मुख्य जानकर तुम तक भी पहुंचा दी, कि पवित्रशास्त्र के अनुसार मसीह हमारे पापों के लिए मरा और गाड़ा गया

तथा पवित्रशास्त्र के अनुसार तीसरे दिन जी भी उठा... (1 कुरिन्थियों 15:3,4)।

जब उसके स्वर्गीय पिता ने उसे इस जगत में रहने को मनुष्य रूप में भेजा, यीशु परमेश्वर था, यद्यपि जो कुछ भी मनुष्य के लिए था उसने भी वही सब भोगा, तो भी उसने पाप नहीं किया। आप के प्रति अपने प्रेम के कारण, आप के पापों के मूल्य चुकाने के लिए वह क्रूस पर चढ़ गया। आप के पापों के कारण उसे पिता से अलग होना पड़ा। वह ऐसा सिद्ध बलिदान बना कि उसकी नकल तो असंभव है।

यीशु को एक गुफा में गाड़ा गया। यीशु को मृतकों में से जिलाकर परमेश्वर ने यीशु की मृत्यु को आपके पापों का पूर्ण मूल्य मानकर स्वीकार किया। यीशु मसीह जीवित है। वह उन सभी के हृदयों में आएगा जो उसे अपना प्रभु और मुक्तिदाता मानकर अपने पापों का पश्चाताप करते हैं और उसे अपना जीवन समर्पित करते हैं। वह विश्वासियों के साथ हमेशा रहता है।

सर्वविस्मयकारी उपहार!

यूहन्ना रचित सुसमाचार बाइबल-अध्ययन

पाठ 6

किसी वस्तु के विषय में कुछ जान लेना कभी पर्याप्त नहीं होता। लेकिन जानने के बाद उसे करना जरूरी है। यह अच्छी बात है कि आपको उपहार मिले। लेकिन आप उस उपहार का आनंद उठा ही नहीं पायेंगे, यदि वह आपको देने वाले से प्राप्त न हो और आप उसका इस्तेमाल न कर पाएं। परमेश्वर सबसे उत्तम उपहार अनंत जीवन हमें देना चाहता है। लेकिन आप इस उपहार को तभी प्राप्त कर सकते हैं जब आप उसके पुत्र यीशु को ग्रहण करते हैं। नीचे लिखे पदों को पढ़ें और अपने शब्दों में प्रश्नों का उत्तर दें। प्रतिदिन हम शब्द "विश्वास" का प्रयोग करते हैं। हम कहते हैं, "मैं अपने परिवार पर विश्वास करता हूं।" मैं उस राजनैतिक नेता पर विश्वास करता हूं। लेकिन बाइबल में "विश्वास" शब्द का अर्थ यह नहीं है। परमेश्वर वास्तव में हमसे चाहता है कि हम उसपर विश्वास करें। लेकिन विश्वास करने का अर्थ क्या है?

1. वह कौन-सा एकमात्र 'कार्य' है, जो परमेश्वर उद्धार के लिए स्वीकार करता है? यूहन्ना 6:28, 29

   ....

   यहां कुछ पद हैं, जो दर्शाते हैं कि वास्वत में यीशु पर विश्वास करना क्या है।

   यीशु ने कहा, "देख मैं द्वार पर खड़ा खटखटाता हूं। यदि कोई मेरी आवाज़ सुनकर द्वारा खोले तो मैं उसके पास भीतर आकर उसके साथ भोजन करूंगा और वह मेरे साथ।" (प्रकाशितवाक्य 3: 20)।

2. यीशु कहां खड़ा है ....
3. इस पद में द्वार का क्या अर्थ है? ....
4. यीशु द्वार पर क्यों खटखटा रहा है? ....
5. इससे पहले कि यीशु आपके हृदय में आए, वह कौन-सी दो बातें हैं जिनका होना जरूरी है?

   (क) ....

   ....

   (ख) ....

   ....

6. किसी भी खुले हृदय के साथ यीशु क्या करने की प्रतिज्ञा करता है?

   ....

   एकसाथ भोजन करना एक गहरी मित्रता का प्रकट करना हो सकता है। पवित्रशास्त्र बाइबल के अंदर आपके लिए आत्मिक भोजन है। यीशु मसीह प्रतिदिन आपको जानने और आपके साथ आनन्द मनाने का अवसर चाहता है। आपको परमेश्वर के साथ भोजन करने की आवश्यकता है जब आप उसके वचन को पढ़ते हैं। तब आप प्रार्थना में उससे बात कर सकते हैं। *"कि यदि तू अपने मुख से यीशु को प्रभु जानकर अंगीकार करे, और अपने मन में यह विश्वास करे*

कि परमेश्वर ने उसे मृतकों में से जीवित किया तो तू उद्धार पाएगा" (रोमियों 10:9)।

7. कौन से मुख्य शब्द इस पद में हमें मिलते हैं? यदि तू अपने .... से .... करे और अपने .... से .... करे।
8. हृदय में विश्वास करने और केवल बौद्धिक रूप से विश्वास करने में भेद है उसे स्पष्ट करें।

....

"*जो कोई प्रभु के नाम को लेगा वह बच जाएगा*" (रोमियों 10:13)।

9. यहां पर कौन सा मुख्य शब्द है जिसका अर्थ है कि यीशु पर विश्वास कर तो तू उद्धार पाएगा?

....

10. यदि आज भी आपने मसीह पर विश्वास नहीं किया है तो परमेश्वर के सामने आपकी क्या स्थिति है? 3: 18 ....
11. क्यों सभी लोग परमेश्वर के पुत्र को अपना उद्धारकर्ता और प्रभु ग्रहण नहीं करते? यूहन्ना 3: 19-20.

....

....आइए उन लोगों का जीवन देखें जिन्होंने यीशु पर विश्वास किया। यूहन्ना अध्याय 4 पढ़ें।

12. यीशु ने अपने आपको क्या होने का दावा किया? पद 25: 26 ....

....

13. जब सामरी स्त्री ने यीशु पर विश्वास किया तो उसके विश्वास ने उसे क्या करने को प्रोत्साहित किया? ....

....

14. राज-कर्मचारी की कहानी यीशु में विश्वास करने की सामर्थ को प्रकट करती है 4: 49-53 कैसे हम जानें कि राज-कर्मचारी ने अपने बेटे की चंगाई के लिए यीशु पर विश्वास किया?

....

सच्चे विश्वास की परख यीशु की आज्ञा मानने में है।

15. जिस स्त्री ने व्यभिचार किया था और जिसे यीशु ने मृत्यु-दण्ड से छुड़ाया था, उससे यीशु ने क्या कहा था? 8:11...

....

16. यीशु में विश्वास करने के लिए, ज्योति (यीशु) के .... होना और अंधकार में न चलना है। 8: 12
17. जो यीशु के पीछे चलते हैं, उनसे प्रभु की क्या प्रतिज्ञा है? 8:12 ....

....

18. यीशु द्वारा जन्म के अंधे की आंखों के अभिषिक्त किये जाने के बाद हम कैसे जान सकते हैं कि उस अंधे व्यक्ति ने यीशु पर विश्वास किया? 9:7, 8 ....

....

19. जिस व्यक्ति को यीशु ने चंगा किया, उसे धार्मिक अगुवों ने बाहर निकाल दिया था। और बाद में जब यीशु ने अपने आपको उस पर प्रकट किया तो किस "कार्य" से उस व्यक्ति के विश्वास

का पता चलता है, जो पहले अंधा था? 9:35-39 ....

....

"पश्चात्ताप" का अर्थ "व्यवहार में परिवर्तन होना है जिससे मनुष्य के चलन में बदलावा आता है या जीवन परिवर्तन होता है।" पश्चात्ताप करना, पाप की मजबूत पकड़, जो हमारे जीवन पर होती है, से छूटना, और क्षमा और सब पापों पर विजय के लिए यीशु मसीह को खोजना है। "पश्चात्ताप" अपने व्यवहार में यीशु के प्रति परिवर्तन लाना है। क्योंकि अब यीशु क्रिसमस का चरनी में पड़ा हुआ छोटा बच्चा नहीं है।

आज वह सबका प्रभु और उद्धारकर्त्ता है। यहां पर एक प्रार्थना है जिसे अनेकों लोगों ने किया है। क्या यह प्रार्थना आप करना चाहेंगे और यीशु को अपने जीवन में अपना प्रभु और उद्धारकर्त्ता होने के लिए आमंत्रित करेंगे?

"धन्यवाद, प्रभु यीशु कि आपने सलीब पर मेरे लिए अपना प्राण दिया। धन्यवाद कि आपने मेरे बदले में मेरे सब पापों को अपने ऊपर उठा लिया। मैं अच्छी तरह जानता हूं कि मुझे अपने पापों से फिरना है और प्रभु यीशु, मैं अपनेआप को पूरा आपको देता हूं। आप मेरे जीवन में मेरे स्वामी होकर आइए। जहां कहीं भी आप ले जाना चाहेंगे, मैं आपके पीछे चलूंगा।"

अपने पूर्ण हृदय से इस प्रार्थना को करने के बाद आप अपना नाम यहां लिख सकते हैं:

....

यदि पहले ही आपको निश्चय है कि यीशु ने आपके पापों को उठा लिया है और अब आप सीधा स्वर्ग जाएंगे, तो यहां अपने आपको जांच सकते हैं:

परमेश्वर का वरदान जो वह हमें देता रहता है

यूहन्ना रचित सुसमाचार बाइबल–अध्ययन

पाठ – 7

जब आप यीशु को अपना उद्धारकर्ता और प्रभु ग्रहण करते हैं तो वास्तव में यीशु पवित्र आत्मा के द्वारा आपके शरीर में आता है। "यीशु महिमा की आशा आप में" "–यीशु मुझमें जीवित है" (कुलुस्सियों 1:27, गलातियों 2:20)। यदि आप यीशु को ग्रहण करते हैं, तो प्रार्थना में उसके जीवन के लिए जो आपमें है, उसे धन्यवाद दें। यीशु अनन्तकाल का ऐसा उपहार है जो कभी देना बंद नहीं करता।

"इसलिए यदि कोई मसीह में है तो वह नई सृष्टि है। पुरानी बातें बीत गईं, देखो, नई बातें आ गई है" (2 कुरि 5:17)।

1. इस पद के अनुसार जब हम यीशु को ग्रहण कर लेते हैं, तो परमेश्वर हमें कहां रखता है? ....
2. अब हमें क्या कहा गया है? ....
   ....
3. हमारे पुराने जीवन के बारे में परमेश्वर क्या कहता है? ....
   ....
4. अब परमेश्वर हमें यीशु में कैसे देखता है? ....

   पौलुस प्रेरित "यीशु में" शब्द की अभिव्यक्ति का प्रयोग नये नियम में 163 बार करता है। जिस क्षण आपने अपना जीवन यीशु को दिया, वह आपमें आया और आप यीशु में जुड़ गए और इसी को हम "यीशु में एक होना" कहते हैं।

यीशु के विशेष नाम "मैं हूं" हमारी आवश्यकताओं को पूरी करता है

जब यीशु आपमें रहता है तो वह अपने सब गुणों को जो स्वयं वही हैं, आपको देता है। यीशु का चरित्र आपकी विशेष आवश्यकताओं की पूर्ति करता है।

यूहन्ना के सुसमाचार में यीशु अपना परिचय उस नाम "मैं जो हूं सो हूं।" से जो पुराने नियम में परमेश्वर के लिए प्रयोग किया है, देते हैं आइए यीशु के उन 6 नामों को सीखें जो "मैं हूं" करके प्रयोग किए गए।

5. हमारे प्रतिदिन की आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए परमेश्वर ने किसको भेजा 6:32-35 तथा 51 ....
6. परमेश्वर की रोटी, संपूर्ण संसार के लिए, मुफ़्त में क्या देती है? 6:33 ....
   ....
7. यदि आप यीशु के पास आते हैं तो आप कभी भी 6:35
8. यदि आप उस पर विश्वास करते हैं तो आप कभी 6:35
9. वह कौन से दो "कार्य–शब्द" हैं जो ये दर्शाते हैं कि हम कैसे यीशु से सामर्थ और साधन प्राप्त कर सकते हैं? 6:35 ....

10. यीशु ने कहा, "मैं ...." 8:12

11. नीचे उन तीन कारणों को लिखें कि प्रतिदिन आपको ज्योति की आवश्यता है।

(क) ....

(ख) ....

(ग) ....

आपको दोनों प्रकार की ज्योति, आंखों और हृदय, की आवश्यकता है कि आप अच्छे और बुरे की पहचान कर सकें। तेरे वचनों के खुलने से प्रकाश मिलता है" (भजन 119:130)। यीशु चाहता है कि आप प्रतिदिन बाइबल-अध्ययन के द्वारा उसकी इच्छा को जानना सीखें।

12. उन तीन बातों पर विचार कीजिए जहां एक चरवाहा, द्वार का प्रयोग अपनी भेड़ों के लिए करेगा। यूहन्ना 10:8-10

(क)..

(ख)..

(ग)..

कल्पना कीजिए कि एक बाड़े में बिना किसी फाटक के एक मेषपाल का कार्य कितना कठिन हो जाएगा।

13. इस सप्ताह आपको अपने जीवन में यीशु को 'द्वार' के रूप में अनुभव करने की कैसी आवश्यकता है? ....

....

"यहोवा मेरा चरवाहा है, मुझे कुछ घटी न होगी" (भजन 23:1)। दाऊद द्वारा परमेश्वर को "मेरा चरवाहा" कहा गया। हम उसकी भेड़ें हैं। यीशु ने "चरवाहा" नाम अपने लिए प्रयोग करके परमेश्वर होने का दावा किया।

14. यूहन्ना 10:11-17 पढ़ें, सोचें और उन तीन बातों को बताएं जो एक अच्छा चरवाहा एक मेमने के लिए करेगा।

(क)..

(ख)..

(ग)..

15. कैसे एक अच्छा चरवाहा यीशु, इस सप्ताह आपके जीवन में आपकी जीवन में आपकी आवश्यकता को पूरा कर सकता है?

....

यहून्ना 14:6 से यीशु के तीन नामें को ढूंढ़े।

16. यीशु .... है। प्रतिदिन आप उसके पीछे चलें।

17. यीशु .... है। आप अपनी नौकरी, निर्णय और अपने संबंधों को उसके वचन और उसकी इच्छा अनुसार मापें।

18. यीशु .... है। वह अपने आत्मा के द्वारा आप में रहता है। वह आपको अच्छा रहने के लिए सामर्थ्य देता है और अनन्त जीवन देता है।

यद्यपि अंत में हमारा शरीर मर जाता है लेकिन हमारा व्यक्तित्व कभी नहीं मरता। जब यीशु मसीह

वापस आएगा, तब वह मारे शरीर का पुनरुत्थान करेगा (यूहन्ना 14:2-3)।

19. यीशु ने अपने आपको क्या कहा? यूहन्ना 15:5 ....

20. फलवन्त होने के लिए हमारे लिए क्या आवश्यक है? डालियों को क्या करना है? 15:5

....

21. यीशु के बिना अकेले हम क्या कर सकते हैं? ....

ऊंचे स्वर में दोहराएं: *"यीशु आपको मेरी रोटी, ज्योति, चरवाहा, मार्ग, सत्य और मेरी दाखलता होने के लिए धन्यवाद" इस सप्ताह अपनी पसंद का पवित्रशास्त्र में दिया गया यीशु का नाम कंठस्थ कीजिए।*

हमारा नया सहायक

यीशु मसीह विश्वासियों में पवित्र आत्मा के द्वारा रहता है। "............ परमेश्वर ने अपने पुत्र की आत्मा को हमारे हृदयों में भेजा है (गलातियों 4:6)। उसका आत्मा हमें हर वस्तु जो परमेश्वर की इच्छा के पीछे चलने के लिए आवश्यक है देता है। वह हमें हमारी समस्याओं का समाधान निकालने और शैतान के ऊपर विजयी होने के लिए भी सामर्थ्य देता है।

22. जो लोग आत्मिकरूप से प्यासे हैं, उनके लिए यीशु क्या आमंत्रण देता है? 7:37 ....

....

23. हमारे अन्दर क्या होता है, जब हम विश्वास करते और और उस जल को पीते है? ......

....

24. "जल की नदियां" किसको प्रदर्शित करती हैं? 7:39 ....

....

25. हम पवित्र आत्मा को अपने जीवनों में कैसे प्राप्त करते हैं? 7:38 ....

....

26. वह कौन-सी दो चीजें हैं जो परमेश्वर का सहायक पवित्र आत्मा, हममें करता है? 14:26

.... तथा ....

27. यूहन्ना 15:26 में पवित्र आत्मा के लिए दो नाम है। इनमें से कौन-सा नाम परमेश्वर के आत्मा के उस गुण को दर्शाता है, जिसकी आवश्यकता आज आपको है? ....

....

28. जो यीशु को नहीं जानते हैं, उन्हें यीशु के बारे में कौन साक्षी देगा? 15:26, 27 ....

....

29. जब पवित्र आत्मा प्रत्येक विश्वासी के जीवन में आता है तो वह कौन-सी चार चीजें करता है? 16:13, 14

(क) ....

(ख) ....

(ग) ....

(घ) ....

30. पवित्र आत्मा हमें दिखाता है कि प्रभु यीशु कौन है और वह हममें क्या कर सकता है। यीशु ने प्रतिज्ञा भी की है कि वह अपने आपको हम पर प्रगट करेगा। उसे अपने आपको हमपर प्रगट करने के लिए कौन-सी शर्त है? 14 : 21,24

....

यीशु का शुभ-संदेश

लेखक
क्रिस्टी एकिंस ब्रॉनर

इवैंजलिस्टिक क्रम
पायनियर इवैंजलिस्टिक क्रम

“यीशु का शुभ-सन्देश”
पुस्तक को कैसे प्रयोग करें

1. प्रत्येक सभा को एक संक्षिप्त प्रार्थना के साथ आरम्भ करें– प्रभु से यह विनती करते हुए कि कहानियों के लिए वह समझ प्रदान करे।

2. सभा में भाग लेने वालों के बीच कहानियों को पढ़ें अथवा यदि इसकी प्रतियां उपलब्ध हों तो ‘इंडायरेक्ट मेथड’ का उपयोग कर एक साथ मिलकर उसे पढ़ें।

3. कहानी के अंत में अगुवे को मौखिक प्रश्न पूछने चाहिए। इन प्रश्नों का उद्देश्य कहानी के प्रति समझ का मूल्यांकन करना है, न कि समय को खींचना अथवा वाद-विवाद करना है।

4. आत्मिक सच्चाइयों को पढ़ें। ‘ग्रुप’ के सदस्यों को स्वतंत्रता दें कि वे प्रत्येक आत्मिक सच्चाई पर खुलकर बहस कर सकें। सावधान रहें कि वे कभी भी किसी के साथ बहस अथवा वाद-विवाद न करें। इस बिंदु पर सदस्यों के लिए यह जरूरी नहीं कि वे आत्मिक सच्चाइयों पर सहमत हों अथवा उन्हें स्वीकार करें। महत्त्वपूर्ण केवल इताना है कि वे उस सत्य को समझ सकें जो परमेश्वर के वचन में प्रकट किया गया है।

5. आत्मिक सच्चाइयों के पश्चात् समय निकालें कि प्रत्येक व्यक्ति ‘ग्रुप’ के साथ अपनी आवश्यकताएं तथा प्रार्थना-निवेदन बांट सके।

6. <u>‘ग्रुप’ के प्रत्येक सदस्य के लिए अथवा उसकी आवश्यकता के लिए विशेष प्रार्थना करें। जैसे ही ‘ग्रुप’ आगे बढ़ता है और लोग प्रभु को ग्रहण करते हैं, तो होने दें कि सदस्यगण मध्यस्थता की प्रार्थना में प्रत्येक के लिए प्रार्थना करें।</u>

“यीशु का जन्म”–पाठ 1
मत्ती 1-2

“इस प्रकार इब्राहीम से दाऊद तक सब चौदह पीढ़ियाँ हुईं, और दाऊद के समय से बाबुल निर्वासन तक चौदह पीढ़ियाँ हुईं।” मत्ती 1:17

एक यहूदी स्त्री, मरियम, बिना यौन-संबंध के गर्भवती हुई, क्योंकि वह पवित्र आत्मा की ओर से गर्भवती हुई। उसके मंगेतर ने धर्मी होने के कारण नहीं चाहा कि समाज में मरियम को नीचा देखना पड़े, इसलिए उसने चुपचाप से निर्णय लिया कि वह अपनी मंगनी तोड़ देगा। लेकिन उस रात जब वह यह निर्णय ले रहा था कि प्रभु का एक स्वर्गदूत उसे स्वप्न में दिखाई दिया और बोला, “हे यूसुफ, दाऊद के पुत्र, तू मरियम को अपनी पत्नी बनाने से मत डर, क्योंकि जो उसके गर्भ में है वह पवित्र आत्मा की ओर से है। वह पुत्र को जन्म देगी और तू उसका नाम ‘यीशु’ रखना, क्योंकि वह अपने लोगों का उनके पापों से उद्धार करेगा।” क्योंकि मरियम वही स्त्री थी जिसके विषय में यशायाह भविष्यद्वक्ता ने पुराने नियम में पहले ही से कहा था, “देखो एक कुंवारी गर्भवती होगी और पुत्र को जन्म देगी, और वे उसका नाम “इम्मानुएल” रखेंगे, जिसका अर्थ है “परमेश्वर हमारे साथ।”

युसुफ सपने से जाग उठा, और उसने स्वर्गदूत की आज्ञा मानकर उसने मरियम से विवाह कर लिया। लेकिन जब तक बालक का जन्म नहीं हुआ, तब तक उन्होंने आपस में यौन-संबंध स्थापित नहीं किए, और जैसा स्वर्गदूत ने कहा था उसके अनुसार, यूसुफ ने बालक का नाम यीशु रखा। और यीशु का जन्म बैतलहम नगर में हो गया। बैतलहम इस्राएल देश के यहूदिया प्रान्त का एक नगर था, और यहूदिया के राजा का नाम हेरोदेस था। तब पूर्व से कुछ ज्ञानी एक तारे का पीछा करते हुए यहूदिया पहुंचे। ज्ञानियों के अध्ययन अनुसार, यह तारा इस बात का संकेत था कि यहूदिया में किसी राजा का जन्म होना था। लेकिन ज्ञानियों को निश्चित रूप से यह नहीं मालूम था कि राजा का जन्म ठीक किस स्थान पर हुआ था। इसीलिए वह सबसे पहले हेरोदस के महल में पहुंचे, जो यहूदिया प्रान्त का राजा था, और पूछने लगे, “यहूदियों के नये राजा का जन्म कहां हुआ है।”

हेरोदेस उनकी बात सुनकर बहुत क्रोधित हुआ और तब उसने धार्मिक सलाहकारों और याजकों की एक गुप्त सभा बुलाई। याजकों ने राजा को बताया कि धर्मशास्त्र के अनुसार प्रतिज्ञा किए गए बालक का जन्म बैतलहम नगर में होना चाहिए। तब हेरोदेस ज्ञानियों के पास गया और उनसे पूछा कि सबसे पहले तारा उन्होंने कब देखा। ऐसा उसने इसलिए पूछा था ताकि वह बालक की जन्म-तिथि का पता लगा सके तथा उसे बालक की उम्र का पता चल जाए।

हेरोदेस ने ज्ञानियों को बताया कि किस नगर में बालक का जन्म होना था और यह भी कहा, “जाओ और ध्यान से उस बालक को खोजो, और जब वह तुम्हें मिल जाए तो वापस आकर मुझे भी बताओ ताकि मैं भी जाकर उसकी आराधना कर सकूं।”

तब वे महल छोड़कर तारे का पीछा करते हुए बैतलहम पहुंचे, और तारा ठीक उस स्थान पर जा ठहरा जिस घर में बालक का जन्म हुआ था। उन्होंने घर में प्रवेश किया और जैसे ही उन्होंने बालक को उसकी मां, मरियम, के साथ देखा। उन्होंने झुककर उसकी आराधना की और

कीमती उपहार—सोना, मुर्र और गन्धरस की भेंट चढाईं और वे सब ज्ञानी उस स्थान से अपने घरों को वापस लौट पड़े। लेकिन इससे पहले कि वह वहां से निकल जाते, उन्होंने एक स्वप्न देखा, जिसमें उन्हें सावधान किया गया कि वे हेरोदेस के पास वापस न जाएं और न ही उसे यह बताएं कि बालक कहां उत्पन्न हुआ है। तब वे दूसरे रास्ते से अपने घर लौट गए।

उनके चले जाने के बाद यूसुफ ने एक और स्वप्न देखा। स्वप्न में परमेश्वर ने उसे सावधान किया कि राजा हेरोदेस इस बालक के पीछे पड़ेगा, इसलिए वे मिस्र भाग जाएं, और उसी रात वह अपने परिवार को लेकर वहां से मिस्र को भाग गया और हेरोदेस के मरने तक वह वहीं रहा। ये बात उस भविष्यवाणी का पूरा होना था जो होशे भविष्यवक्ता द्वारा कही गई थी, कि "मैं अपने पुत्र को मिस्र से बुलाऊंगा।"

जब हेरोदेस को पता चला कि ज्ञानियों ने उसे धोखा दिया है तो वह बहुत क्रोधित हुआ और तब उसने घोषणा की कि जितने भी दो-दो साल के लड़के हैं उनको मार दिया जाए, और बैतलहम और उसके आस-पास के नगरों में इन छोटे बच्चों की हत्या का भयानक दृश्य था। लेकिन यिर्मयाह भविष्यवकता ने पहले ही इस घटना के विषय में चर्चा की थी।

जब हेरोदेस मर गया तो स्वप्न में स्वर्गदूत ने यूसुफ को इस्राएल वापस लौट जाने को कहा। लेकिन यूसुफ थोड़ा घबराया, क्योंकि यहूदिया में हेरोदेस का पुत्र सिंहासन पर था। तब वह अपने परिवर को लेकर गलील के पड़ोसी प्रान्त के नगर नासरत को चला गया। यीशु ने अपना बचपन इसी नगर में बिताया। यह बात भी भविष्यवाणी का पूरा होना था, जिसमें कहा गया था कि "वह नासरी कहलाएगा।"

मौखिक प्रश्न

1. मरियम कौन थी?
2. स्वर्गदूत किसको दिखाई दिया और बोला कि बच्चे का क्या नाम रखा जाएगा?
3. क्यों ज्ञानी लोग पूर्व से यहूदिया आये थे?
4. क्यों हेरोदेस यीशु को ढूढ़ना चाहता था?
5. ज्ञानियों को कैसे मालूम हुआ कि उन्हें अपने-अपने घर दूसरे रास्ते से जाना चाहिए, हेरोदेस के पास नहीं।
6. हेरोदेस ने प्रतिज्ञा किये यहूदियों के राजा को किस प्रकार मारने की कोशिश की?
7. यूसुफ को कैसे मालूम हुआ कि उसे देश छोड़कर मिस्र भाग जाना चाहिए?
8. यूसुफ को कैसे मालूम हुआ कि अब वह वापस सुरक्षित लौट सकता है।
9. यूसुफ क्यों यहूदिया न जाकर अपने परिवार को लेकर गलील के पड़ोसी प्रान्त के नगर नासरत चला गया।
10. जिस नगर में यीशु ने अपना बचपन बिताया उसका क्या नाम है?

आत्मिक सच्चाइयां–पाठ 1

मत्ती 1-2

1. परमेश्वर विश्वासयोग्य है और अपनी प्रतिज्ञाओं को हमेशा पूरा करता है। प्रथम पुरुष और स्त्री की रचना के समय से ही परमेश्वर ने संसार में उद्धारकर्ता को भेजने की प्रतिज्ञा की थी। कई सालों तक परमेश्वर इस प्रतिज्ञा को लोगों के साथ दोहराता रहा कि किस प्रकार उद्धारकर्ता का आना होगा। जेसे पवित्रशास्त्र में पहले ही से बताया गया था, ठीक उसी प्रकार प्रभु यीशु मसीह का आना इस जगत में हुआ। आइये, कहानी में हम कम से कम एक भविष्यवाणी को याद रखें जो यीशु के जन्म के द्वारा पूरी हुई।

   *परमेश्वर आज भी हमारे साथ अपनी की गई प्रतिज्ञाओं में विश्वासयोग्य है। बाइबल में, परमेश्वर ने हमारे लिए बहुत-सी महत्वपूर्ण प्रतिज्ञाएं की हैं जिनमें पता चलता है कि परमेश्वर की योजना हमारे बारे में क्या है। परमेश्वर उन सभी प्रतिज्ञाओं और भविष्यवाणिओं को पूरा करेगा। महत्वपूर्ण बात यह है कि हम पवित्रशास्त्र को पढ़ें और खोजें कि परमेश्वर की प्रतिज्ञाएं हमारे जीवन के लिए क्या हैं।

2. बाइबल परमेश्वर का वचन है, और जो कुछ इसमें है वह सत्य है। परमेश्वर हजारों साल पहले ही से अपने नाबियों द्वारा प्रभु यीशु के जन्म और जीवन के बारे में ठीक-ठीक बताता रहा। सब बातें ठीक वैसे ही पूरी हुईं, जैसी कि भविष्यवाणी की गई थी।

3. परमेश्वर सब वस्तुओं पर नियंत्रण रखता है। परमेश्वर आलौकिक और आर्श्चयजनक कार्य कर सकता है। बहुत-सी अद्‌भुत और आश्चर्यजनक घटनाएं इस कहानी में घटित हुई हैं। उनमें से कोई एक घटना क्या है?

4. परमेश्वर मनुष्य के साथ बातचीत कर सकता है और करता है। कुछ लोग विश्वास करते हैं कि पमरेश्वर ने संसार की सृष्टि तो की है लेकिन वह जो कुछ इस संसार में होता है उसकी चिन्ता नहीं करता। इस कहानी में परमेश्वर ने किस प्रकार मनुष्य से बातचीत की। परमेश्वर आज भी हमसे बातचीत करता है। हम इस अध्ययन द्वारा सीखेंगे कि हम कैसे परमेश्वर के साथ वास्तविक संबंध रख सकते हैं।

5. परमेश्वर हर वस्तु को जो होने वाली है जानता है। लेकिन कई बार वह अपने ईश्वरीय ज्ञान में उन खतरनाक चीज़ों को भी होने देता है। हेरोदेस प्रतिज्ञात राजा को मार देना चाहता था, क्योंकि उसे यीशु से डर था। परमेश्वर हेरोदेस के हृदय के बुरे विचार को जानता था। वह जानता था कि हेरोदेस सैकड़ों मासूम बच्चों की हत्या करेगा। हेरोदेस के हृदय के विरोध और विद्रोह के कारण एक भयानक घटना घटी। आज भी कई बार जब हम परमेश्वर की आज्ञा नहीं मानते और उसका विरोध करते हैं, तो बहुत-सी भयानक चीजें हमारे जीवन में घटती हैं। क्या आप कोई ऐसी आधुनिक उदाहणा जानते हैं जिसमें किसी एक व्यक्ति की बुराई के कारण दूसरे को चोट पहुंची हो?

6. मनुष्य कभी भी परमेश्वर का सामना करके जीत नहीं सकता। हेरोदेस प्रतिज्ञा किए हुए बालक को मारने में असमर्थ रहा। केवल वह यह कर सका कि बहुत-से परिवारों में डर पैदा कर

दिया। आज भी कई बार, जब हम परमेश्वर की इच्छा और नियम के विरुद्ध जाने की कोशिश करते हैं, तो हम हमेशा ही भयानक स्थितियों में पड़ते हैं। शायद अपने को नही, लेकिन उनको जरूर चोट पहुंचाते हैं जो हमारे चारों ओर होते हैं। क्या आप किसी ऐसी घटना के बारे में सोच सकते हैं? जब आपने कुछ बुरा किया, जिसके द्वारा अपके जीवन में दुखद घटना घटित हुई। क्या आप ऐसे समय को याद कर सकते हैं, जब किसी अन्य व्यक्ति की बुराई के कारण आपको चोट पहुंची?

7. याजक और धार्मिक सलाहकार पवित्रशास्त्र के द्वारा प्रतिज्ञा किए गए राजा के विषय में जानते थे। किन्तु तब भी वे यीशु से मिलने नहीं आए। क्या धर्मी होने के लिए बाइबल को अधिक जानना और यीशु के बारे में अधिक किसी को जानना जरूरी है चाहे वह कभी भी यीशु को निजी रूप से अपने हृदय में न जानता हो?

8. यीशु "परमेश्वर हमारे साथ" अथवा "इम्मानुएल" हैं जो स्वर्गदूतों द्वारा कहे गये थे तथा पवित्रशास्त्र में यशायाह भविष्यद्वक्ता द्वारा लिखे गए हैं। बहुत से लोग कहते हैं यीशु एक नबी था। "जबकि दूसरे कहते हैं कि वह एक स्वर्गदूत या एक अच्छा व्यक्ति था। परन्तु बाइबल सिखाती है कि परमेश्वर हमारे साथ था।

आगे छः हफ्तों में हम खोज करेंगे कि वास्तव में यीशु मसीह कौन है, और उसका शुभ-संदेश जो वह पृथ्वी पर लाया क्या था।

"यीशु का बपतिस्मा" –पाठ 2
मती 3-4

"पश्चात्ताप करो क्योंकि परमेश्वर का राज्य निकट है।" मत्ती 3:2

पुनर्विचार

1. यीशु की माता का नाम .... था।
2. यीशु के जन्म का एक आश्चर्यकर्म यह था कि वह .... से उत्पन्न हुआ था।
3. पुराने नियम में बहुत-सी बातें यीशु के जन्म के विषय में कही गई थीं; उनमें से एक यह थी कि उसका नाम इम्मानुएल होगा, जिसका अर्थ है परमेश्वर ....।
4. हेरोदेस यहूदिया का .... था, जिसने यीशु को मारने की कोशिश की थी। उसने उन सब बच्चों को जो दो साल से छोटे थे, जो बैतलहम और उसके चारों ओर रहते थे, ... दिया था।
5. जो ज्ञानी लोग यीशु को ढूँढ़ने निकले वे एक .... का पीछा कर रहे थे। वे वापस अपने घर दूसरे रास्ते से गए, क्योंकि परमेश्वर ने उन्हें एक .... के द्वारा सावधान किया था कि हेरोदेस यीशु को .... चाहता है।
6. यूसुफ परिवार सहित रात में ही मिस्र को भाग गया था। क्योंकि परमेश्वर ने उसे .... में दिखाया कि हेरोदेस .... के पीछे पड़ा हुआ है।
7. यूसुफ जानता था कि इस्राएल वापस जाने के लिए .... से होकर जाना सुरक्षित रहेगा। लेकिन वह वापस बैतहम नहीं गया। लेकिन वह अपने परिवार को .... नगर ले गया।
8. जैसा परमेश्वर पूरे इतिहास भर करता आया है, आज भी परमेश्वर अपनी .... को पूरा करता है।
9. परमेश्वर जानता है कि हमारे .... में क्या है। यहां तक कि जहां बहुत अधर्म है, उसे भी वह जानता है।
10. यह संभव है कि बहुत अधिक धर्मी होने के लिए बाइबल और यीशु के बारे में अधिक जाना जाए, चाहे कोई कभी भी .... को निजी रूप से अपने .... मे न जानता हो।

ये शब्द यहूदा के जंगल में रहने वाले मनुष्य ने कहे थे। यह मनुष्य ऊंट के बालों का तथा चमड़े का वस्त्र पहनता था। वह जंगली शहद व टिड्डियां खाता था। उसका नाम यूहन्ना बपतिसमा देने वाला था। यरदन नदी के आसपास के इलाकों में रहने वाले बहुत से लोग जंगल में उसके वचनों को सुनने जाया करते थे। उसके सुसमाचार को सुनने के बाद उन्होंने यरदन नदी में अपने पापों के पश्चात्ताप के बाद बपतिस्मा लिया। बहुत से धार्मिक नेता, जैसे सदूकी और फरीसी भी, यह सब जो हो रहा था देखने गए। जब यूहन्ना ने उन्हें देखा तो उसने उन्हें 'सांप के बच्चों' कहकर पुकारा और आगे उसने कहा कि वे परमेश्वर से नहीं डरते, क्योंकि

वे अपने आपको धार्मिक समझते थे जो उन्हें विरासत में मिली और इसलिए वे अपने पापों की क्षमा मांगने की आवश्यकता नहीं समझते थे।

जब यूहन्ना वचन दे रहा था, तब यीशु उसके पास आया और चाहा कि यूहन्ना उसे बपतिस्मा दे। यीशु के सामने यूहन्ना स्वयं को अयोग्य मानता था। इसलिए पहले तो वह हिचकिचाया, परन्तु यीशु के जोर डालने पर दोनों यरदन नदी के पानी में उतर गए और यीशु ने बपतिस्मा लिया। जब यीशु पानी से बाहर आया तब पवित्र आत्मा कबूतर की नाई स्वर्ग से उसपर उतरा। साथ ही स्वर्ग से बहुत तेज़ आवाज़ आई कि "यह मेरा प्रिय पुत्र है जिससे मैं अत्यंत प्रसन्न हूं।"

उसके बाद पवित्र आत्मा उन्हें जंगल में ले गया ताकि शैतान के द्वारा उसकी परीक्षा हो। तब यीशु चालीस दिन और रात निराहार रहा और उसके बाद वह काफी भूखा और प्यासा था और यह वही समय था, जब शैतान उनके पास आया और उसने उसकी परीक्षा की।

बाइबल के अनुसार यीशु की तीन बातों से परीक्षा हुई। पहली परीक्षा में शैतान ने कोशिश की कि यीशु पत्थरों को रोटियां बना दे, जिससे यह साबित हो जाएगा कि वह पमरेश्वर का पुत्र हैं यीशु ने परमेश्वर के वचन के अनलुसार इसका उत्तर दिया। दूसरी बार, शैतान यीशु को मन्दिर की छत पर ले गया और कहा कि वह अपने आपको नीचे गिरा दे, लेकिन यीशु ने फिर परमेश्वर के वचन के अनुसार उत्तर दिय। अन्त में शैतान यीशु को ऊंचे पर्वत पर ले गया और कहा कि मैं तुझे सब कुछ दे दूंगा अगर तू नीचे गिरकर मुझे प्रणाम और दंडवत करे। यीशु नेउसे जवाब दिया कि तुझे परमेश्वर की आराधना और सेवा करनी चाहिए। यह सुनते ही शैतान यीशु को छोड़कर चला गया और स्वर्गदूत उसकी सेवा-टहल करने लगे।

जंगल से वापस आने के बाद यीशु को पता चला कि यूहन्ना को जेल में डाल दिया गया है। तब यीशु अपने बचपन के शहर नासरत को छोड़ कफरनहूम चले गए। जो यहूदा के उत्तम में गलील का एक इलाका है। तब वह बात पूरी हुई जो यशायाह भविष्यद्वक्ता द्वारा कही गई थी, "जबलून, नप्ताली के देश समुद्र के किनारे, यरदन के उस पार अन्य जातियों का गलील जो लोग अंधेरे में बैठे थे, उन्होंने महान ज्योति देखी, और जो मृत्यु की घाटी में थे उन पर ज्योति चमकी।"

बाइबल के अनुसार इसके बाद यीशु ने लोगों में अपनी सेवा आरंभ कर दी और जिस संदेश का प्रचार उसने किया वह यह था "मन फिराओ पश्चात्ताप करो क्योंकि स्वर्ग का राज्य निकट है।"

मौखिक प्रश्न

1. यूहन्ना बपतिस्मा देने वाले का वर्णन करो?
2. यूहन्ना बपतिस्मा देने वाले का क्या संदेश था?
3. अपने पापों को स्वीकार करने वालों के साथ यूहन्ना क्या करता था?
4. यूहन्ना बपतिसमा देने वाला यीशु को बपतिस्मा क्यों नहीं देना चाहता था?
5. यीशु को बपतिस्मा कैसे दिया गया?
7. यीशु जंगल में क्यों गया?
8. यीशु ने चालीस दिन और रात क्या किया?
9. शैतान की परीक्षाओं में एक परीक्षा क्या थी? बताएं?
10. यीशु की परीक्षा होने के बाद कौन लोग उसकी सेवा में उपस्थित हुए?
11. यूहन्ना को कैद में डालने की बात सुनकर यीशु कहां गए?
12. यीशु का संदेश क्या था? और ऐसे ही संदेश का प्रचार और किसने किया?

आत्मिक सच्चाइयां–पाठ 2
मत्ती 3-4

1. **यूहन्ना बपतिस्मा देने वाला तथा यीशु दोनों के संदेश एक समान थे: "मन फिराओ और पश्चात्ताप करो क्योंकि स्वर्ग का राज्य निकट है।"**
- पश्चात्ताप का अर्थ अपने जीवन में पापों से मन फिराना और अपना जीवन पूर्णत: यीशु के हाथों में दे देना है।
- पाप परमेश्वर और उसके नियमों का उल्लंघन है।

क्या पश्चात्ताप करना मनुष्य के लिए बहुत कठिन बात है। इस शब्द से आप क्या समझते हैं?
अपने समूह में इस बात की चर्चा करें और हर कोई अपना विचार दे।

2. **धार्मिक नेता यही सोचते थे, कि उन्हें पापों को मानने की कोई आवश्यकता ही नहीं है। क्योंकि वे धार्मिक हैं। वे सोचते थे कि वे भले मनुष्य हैं। यूहन्ना ने उन्हें सांप की संतान कहकर पुकारा है। क्या इस संसार में ऐसा कोई धार्मिक व्यक्ति है जिसे अपने पापों से पश्चात्ताप करने की आवश्यकता न हो?**

* **बाइबल रोमियों 3: 23 में कहती है "सबने पाप किया है और परमेश्वर की महिमा से रहित हैं।"**

* **क्या इस दुनिया में कोई ऐसा व्यक्ति है, जिसने पाप न किया हो? क्या इस संसार में ऐसा कोई व्यक्ति है जिसने कभी भी परमेश्वर के आत्मा और उसके व्यवहार के विरोध में पाप न किया हो। बाइबल कहती है, "नहीं" क्या आप बाइबल से सहमत हैं, कि हम सब के जीवन में पाप है। पुन: यह आवश्यक है, कि प्रत्येक व्यक्ति को अवसर मिले कि वह इस विषय पर परमेश्वर के वचन को चुनौती दे सके। अगुवा होने के नाते तर्क न करें, और न ही दूसरों को करने दें; परन्तु यह ठीक है कि लोग अपनी भावनाओं को प्रकट कर सकें।**

3. **यीशु का बपतिस्मा हुआ, लेकिन परमेश्वर होने के कारण उसने कभी पाप नहीं किया।**

   इसका अर्थ यह है कि बपतिस्मा कोई धार्मिक परम्परा नहीं है कि इसके द्वारा मनुष्य के जीवन से पाप खत्म हो जाएगा। यदि बपतिस्मा व्यक्ति के पाप को नष्ट करता है तो यीशु को कभी भी बतिस्मा लेने की आवश्यकता नहीं पड़ती; क्योंकि वह तो स्वयं परमेश्वर था, और उसमें कोई पाप नहीं था।

4. जब यीशु पानी से बाहर आया तब पवित्र आत्मा कबूतर के रूप में उसपर उतरा और स्वर्ग से एक आवाज़ सुनाई दी," कि यह मेरा प्रिय पुत्र है, जिससे मैं अत्यंत प्रसन्न हूं।" यहां पर हम त्रिएकता के तीन व्यक्तियों को देखते हैं वे क्या हैं?

परमेश्वर पिता, परमेश्वर पुत्र और परमेश्वर पवित्र आत्मा

5. यीशु परीक्षा के लिए शैतान द्वारा जंगल में ले जाया गया। शैतान वास्तव में है। वह एक आत्मा है जो इस संसार में है। उसके साथ बहुत-सी आत्माएं हैं जो उसका अनुसरण करती हैं, जिन्हें दुष्टात्मा कहा जाता है, जो हमारे जीवनों में विनाश लाती हैं, तथा परमेश्वर की आज्ञा का उल्लंघन कराती हैं। जिस तरह यीशु की परीक्षा हुई उसी तरह शैतान हमारी परीक्षा करता है। परन्तु बाइबल हमें सिखाती है कि प्रभु यीशु के विपरीत हमारी परीक्षा उन बुराइयों से होती हैं जो हमारे हृदय में होती हैं। जिससे परमेश्वर अप्रसन्न होता है।

6. यशायाह भविष्यद्वक्ता ने भविष्यद्वाणी की कि यीशु मसीह झील के किनारे रहेगा और उनके लिए, जो अंधकार में बैठे हैं और मृत्यु की घाटी में रहते हैं, वह ज्योति बनेगा।

“यीशु के आश्चर्यकर्म”–पाठ 3
मत्ती 4–9

“मेरे पीछे चलो, मैं तुम्हें मनुष्यों के मछुए बनाऊंगा।” – मत्ती 4:19

पुनर्विचार

1. यीशु के आगमन के विषय में यूसुफ को किसने बताया और किसने उसे बताया कि उसका नाम “इम्मानुएल” या “परमेश्वर हमारे साथ” होगा? यह हमें बताता है कि यीशु .... हमारे साथ है।
2. बालक यीशु को कौन मरवाना चाहता था और क्यों? यीशु बच निकला, क्योंकि .... चले गए।
3. यीशु को बपतिस्मा किसने दिया? यीशु मसीह का बपतिस्मा हमें इस सच्चाई को बताता है कि बतिस्मा का कार्य हमारे जीवन के .... से शुद्ध करना नहीं है।
4. जब यीशु पानी से निकला तो कबूतर की नाई स्वर्ग से कुछ उतरा और एक आवाज़ भी स्वर्ग से सुनाई दी। यह कबूतर क्या था, और आवाज किसकी थी?
5. फरीसियों ने सोचा कि उन्हें अपने पापों से पश्चात्ताप की आवश्यकता नहीं है क्योंकि वे धर्मी हैं। क्या संभव है कि केवल धर्मी बनने से किसी के पाप मिटते हैं?
6. ‘पश्चात्ताप’ शब्द का क्या अर्थ है?
7. पाप क्या है?
8. निर्जन स्थान में यीशु की परीक्षा किसने की?
9. यीशु निर्जन स्थान छोड़कर कहां गया?

गलील की झील के किनारे चलते हुए यीशु दो मछुओं से मिला। उसने उन्हें बुलाया और कहा, “मेरे पीछे चलो, मैं तुम्हें मनुष्यों के मछुआरे बनाऊंगा।” वे तुरंत जालों को छोड़कर उसके पीछे चल पड़े। उस दिन यीशु ने अपने पहले चार चेलों, अर्थात् पतरस, अन्द्रियास, याकूब और यूहन्ना को बुलाया। वे सभी मछुए थे, तब यीशु सारे गलील में फिरता हुआ उनके आराधनालयों में उपदेश देता, राज्य में सुसमाचार प्रचार करता, और लोगों की हर प्रकार की बीमारी और हर प्रकार की दुर्बलता को दूर करता फिरा। जहां कहीं भी वह जाता, एक बड़ी भीड़ भी उसके पीछे हो लेती थी।

एक कोढ़ी यीशु के पास आया और उसे दंडवत करके कहने लगा, “हे प्रभु, तू चाहे तो मुझे शुद्ध कर सकता है।” यीशु ने कहा “मैं चाहता हूं, तू शुद्ध हो जा।” और वह तुरंत कोढ़ से शुद्ध हो गया।

एक रोमी सूबेदार यीशु के पास आया, और उसने यीशु से विनती की कि वह उसके सेवक को चंगा करे जो लकवे का मारा अत्यन्त पीड़ा में पड़ा हुआ था। उसने विश्वास किया कि यीशु की सामर्थ उसे चंगा कर सकती है। यीशु ने उससे कहा कि, सारे राज्य के लोग स्वर्ग के राज्य में भोजन करने बैठेंगे, और उसका सेवक उसी क्षण चंगा हो गया।

इसके बाद झील के उस पार दो मनुष्य दुष्टात्मा से ग्रस्त थे। वे कब्रों में रहते थे। वे इतने शक्तिशाली और उग्र थे कि कोई भी उन्हें पकड़ नहीं सकता था। जब उन्होंने यीशु को देखा,

तो चिल्लाकर कहा, "हे परमेश्वर के पुत्र, हमारा तुझसे क्या काम? क्या तू समय से पहले हमें दुख देने आया है?"

उनसे कुछ ही दूर बहुत से सुअरों का एक झुंड चर रहा था। दुष्टात्माओं ने उनसे विनती की, "यदि तू हमें निकालना चाहता है तो हमें सूअरों के झुंड में भेज दे।" उसने उनसे कहा, "जाओ!" वे उन मनुष्यों में से तुरंत निकलकर सुअरों में समा गईं।

पूरा झुंड वेगपूर्वक ढालू किनारे से समुद्र में जा पड़ा और डूब मरा। और चरवाहे भागकर नगर में गए और ये सब बातें और दुष्टात्मा-ग्रस्त मनुष्यों पर जो कुछ बीता था उनका सारा हाल कह सुनाया। सारे नगर के लोग निकलकर यीशु से मिलने आए और उसे देखकर विनती की, हमारे प्रदेश से बाहर चला जा।

वह नाव पर बैठकर पार गया और अपने नगर में आया। वहां वह मत्ती नाम के एक मनुष्य से मिला जो चुंगी लेता था। यीशु ने उससे कहा, "मेरे पीछे आ।" वह उठा और उसके पीछे चल दिया। फिर उस रात यीशु और उसके चेले चुंगी लेने वालों और पापी मनुष्यों के साथ भोजन करने लगे। यह देखकर फरीसियों ने उसके चेलों से कहा, "तुम्हारा गुरु चुंगी लेने वालों और पापियों के साथ क्यों खाता है?"

परंतु उसने यह सुनकर उनसे कहा, "भले चंगों को वैद्य की आवश्यकता नहीं, परंतु बीमारों को होती है।" परन्तु जाओ और इसका अर्थ सीखो: "मैं बलिदान नहीं, पर दया चाहता हूं।" मैं धर्मियों को नहीं, परंतु पापियों को बुलाने आया हूं कि वे पश्चात्ताप करें।

मौखिक प्रश्न

1. यीशु के प्रथम चेलों का व्यवसाय क्या था?
2. जब यीशु ने उन्हें अपने पीछे चलने को कहा, तब उन्होंने क्या किया?
3. यीशु गलील की सभी जगहों पर गया और भीड़ उसके पीछे चल रही थी। ऐसा वह क्या कर रहा था कि सभी का ध्यान उस पर था?
4. मत्ती की पुस्तक में पहली चंगाई कौन-सी लिखी गई?
5. रोमी सूबेदार के सेवक की क्या समस्या थी?
6. दुष्टात्मा-ग्रस्त मनुष्य कहां रहते थे? वे किस प्रकार के मनुष्य थे?
7. यीशु को देखकर दुष्टात्माओं का क्या हुआ?
9. सुअरों को क्या हुआ?
10. सुअर के रखवालों की क्या प्रतिक्रिया थी?
11. मत्ती किस प्रकार का मनुष्य था?
12. यीशु ने किन लोगों के साथ भोजन किया?
13. यह देखकर फरीसियों ने क्या कहा?
14. यीशु ने फरीसियों को क्या उत्तर दिया?

आत्मिक सच्चाइयां–पाठ 3
मत्ती 4–9

1. यीशु लोगों के बीच कोई भेदभाव नहीं करता।
- यीशु के प्रथम चेले मछुए थे, जो औपचारिक शिक्षा के बगैर, साधारण मनुष्य थे।
- कोढ़ी मनुष्य को नगर से बाहर निकाल दिया गया था, क्योंकि वह अपने रोग से कुरूप हो गया था और लोग उससे घृणा करते थे।
- रोमी सूबेदार का सेवक एक अपाहिज मनुष्य था जिसके पास न तो धन था और न ही समाज में कोई मान था।
- मत्ती एक चुंगी लेने वाला था जो संभवत: धनी, परंतु भ्रष्ट था।
- नगरवासियों द्वारा दुष्टात्मा-ग्रस्त मनुष्य इतने तिरस्कृत थे कि नगरवासियों को उनकी चंगाई से अधिक अपने सुअरों की तंदुरुस्ती की चिंता थी। वास्तव में उन्हें कब्रों के बीच रहना पड़ता था।

*** परंतु यीशु के लिए ये सभी व्यक्ति महत्वपूर्ण और मूल्यवान थे। परमेश्वर की दृष्टि में आप योग्य एवं मूल्यवान हैं। परमेश्वर के सामने आपके भूतकाल, धन, रूप और समाज में आपके स्थान का कोई अर्थ नहीं है।**

2. <u>यीशु के पास हमारे रोगों को चंगा करने की सामर्थ है।</u> इस कहानी में लोगों को चंगा करने के कौन-कौन से उदाहरण दिए गए हैं?
3. <u>यीशु को दुष्टात्मा के ऊपर अधिकार है।</u> कई बार लोग दुष्टात्माओं के प्रभाव में आ जाते है, जबकि वे अच्छे कार्य कर रहे होते हैं। लेकिर इससे पहले कि वे जानें कि उनके साथ क्या घट रहा है, दुष्टात्माएं उनके जीवन पर अपना प्रभाव डाल चुकी होती हैं। ये दुष्टात्माएं उन्हें चलाती और सताती है और उन्हें कभी अकेला नहीं छोड़ती। उनके पास कोई सामर्थ नहीं है कि वे इस दुष्टत्माओ से अपने जीवन में छुटकारा पा सकें। **यीशु को हर दुष्टात्मा जो इस संसार में है, उन पर अधिकार और सामर्थ प्राप्त है। हम केवल यीशु के द्वारा ही इन बुरी आत्माओं से स्वतंत्रता प्राप्त कर सकते हैं।**
4. यीशु पापी मनुष्य से प्रेम करता है। वह सभी पापियों को ग्रहण करता है। यीशु मनुष्य को दंड देना नहीं चाहता, परंतु उसकी इच्छा है कि वे पश्चात्ताप करें और क्षमा पाएं।
5. धार्मिक अगुवे, अर्थात फरीसियों ने अपने पापों से पश्चात्ताप नहीं किया, क्योंक उन्होंने सोचा कि वे उन पापियों से अच्छे हैं जो यीशु के साथ भोजन कर रहे थे। <u>अच्छा क्या है। एक बड़ा पापी जिसे पापों की क्षमा मिली, या थोड़े पापों के साथ ऐसा मनुष्य जिसने पश्चात्ताप नहीं किया?</u>

- **यह अधिक अच्छा है कि एक बड़ा पापी होते हुए उसको उसके पापों से क्षमा मिली हो**

हम जैसे भी हों, यीशु हमें ग्रहण करता और हमसे प्रेम करता है। यह उसके लिए अर्थ नहीं रखता कि हम कितने भयानक पापी हैं, गरीब हैं या कम पढ़े-लिखे हैं, या हमारी बहुत समस्याएं हैं, या हम बीमार हैं। उसकी दृष्टि में हम सभी बराबर हैं। मुख्य बात यह है कि हम पश्चात्ताप करके उसके पीछे हो लें।

"यीशु की शिक्षाएं"–पाठ 4
मत्ती 10–16

"मैं दया चाहता हूं, बलिदान नहीं।" मत्ती 12:7

पुनर्विचार

1. यीशु का जन्म एक यहूदी स्त्री द्वारा हुआ जिसका नाम .... था।
2. पूर्व दिशा के ज्योतिषियों ने यीशु को ढूंढ़ लिया क्योंकि वे एक .... का पीछा कर रहे थे।
3. ज्योतिषी वापस लौटकर हेरोदेस के पास नहीं गए, क्योंकि उन्हें परमेश्वर से .... में यह चेतावनी मिली कि वे दूसरे मार्ग से अपने देश लौट जाए।
4. यूहन्ना बपतिस्मा देने वाला जंगल में रहकर प्रचार करने लगा और जो अपने पापों का अंगीकार करते थे, उसने उन्हें .... दिया।
5. 'पश्चात्ताप' का अर्थ क्या होता है?
6. जब यीशु का बपतिस्मा हुआ, तब .... कबूतर की नाई पृथ्वी पर उतरा और एक आकाशवाणी सुनाई दी। यह परमेश्वर के तीन व्यक्तित्व को प्रदर्शित करता है। परमेश्वर . ..., परमेश्वर .... और परमेश्वर ....। इसे हम त्रिएकता कहते हैं।
7. यीशु की परीक्षा .... के द्वारा निर्जन स्थान में हुई।
8. यीशु के प्रथम चेले व्यवसाय से .... थे।
9. दो मनुष्य, जो दुष्टआत्मा-ग्रस्त थे, यीशु को मिले। यीशु ने कैसे उनकी सहायता की? यीशु के इस कार्य पर नगरवासियों की क्या प्रतिक्रिया थी?
10. यीशु ने किन लोगों के साथ भोजन किया था जिसकी आलोचना फरीसी कर रहे थे?
11. क्या वह मनुष्य अच्छा है जिसने अधिक पाप किए और पश्चात्ताप किया, या फिर वह मनुष्य जिसने कम पाप किए और पश्चात्ताप नहीं किया?

यीशु मसीह ने बारह मनुष्यों को अपना चेला बनने के लिए चुन लिया कि वे उसके साथ रहें और वह उन्हें शिक्षित करे। उसने इन बारहों को दुष्टात्माओं पर अधिकार दिया कि उन्हें निकालें और सब प्रकार की बीमारी तथा दुर्बलता को चंगा करने की सामर्थ दी। उसने उनसे कहा कि तुमने मुफ़्त में पाया है, मुफ़्त में दो। जिन्हें उसने भेजा था उनमें यहूदा इस्करियोती भी था।

यीशु ने उन्हें इस्राएल के सभी यहूदियों के पास भेजा कि वे पश्चात्ताप करें और यीशु मसीह पर विश्वास करें। इन बारहों को यीशु ने यह निर्देश देकर भेजा, "प्रत्येक जो मनुष्यों के सम्मुख मुझे स्वीकार करेगा, मैं भी उसे अपने पिता के सम्मुख, जो स्वर्ग में है स्वीकार करूंगा। पर जो मनुष्यों के सम्मुख मुझे अस्वीकार करेगा, मैं भी उसे अपने पिता के सम्मुख, जो स्वर्ग में है, अस्वीकार करूंगा।"

तब यीशु स्वयं गलील में शिक्षा देने, प्रचार करने और हर प्रकार की बीमारियों को ठीक करने निकल पड़ा। परंतु नगरवासियों ने, जिनके साथ उसने अपना अधिक समय व्यतीत किया, उसका संदेश स्वीकार नहीं किया। कफरनहूम नगर ने, जहां से उसने सेवकाई आरंभ की, उसे स्वीकार नहीं किया। इन सब बातों को देखकर, यीशु ने अपने पिता से कहा, "हे पिता, स्वर्ग और पृथ्वी

के प्रभु, में तेरी स्तुति करता हूं कि तूने ये बातें ज्ञानियों और बुद्धिमानों से छिपाकर रखी और बच्चों पर प्रकट की हैं। हां, पिता, क्योंकि तुझे यही अच्छा लगा। मेरे पिता के द्वारा मुझे सब कुछ सौंपा गया हैं, पिता के अतिरिक्त पुत्र को कोई नहीं जानता, न पुत्र के अतिरिक्त पिता को कोई जानता है, या वही जिसपर पुत्र उसे प्रकट करना चाहता है। हे सब थके और बोझ से दबे लोगों, मेरे पास आओ, मैं तुम्हें विश्राम दूंगा। मेरा जुआ अपने ऊपर उठा लो और मुझसे सीखो; क्योंकि मैं नम्र और मन में दीन हूं, और तुम अपने मन में विश्राम पाओगे। क्योंकि मेरा जुआ सहज और मेरा बोझ हल्का है।"

तब यीशु सब्त के दिन खेतों मे से होकर निकला; उसके चेलों को भूख लगी और वे बालें तोड़-तोड़कर खाने लगे। यह देखकर फरीसी, जो धार्मिक अगुवे थे, चेलों की भर्त्सना करने लगे, क्योंकि व्यवस्था में सब्त के दिन काम करना उचित नहीं था। यीशु ने यह कहते हुए कहा कि वे अभी तक परमेश्वर के नियम को नहीं समझते, क्योंकि लिखा है, "मैं दया चाहता हूं बलिदान नहीं।"

खेत से निकलकर यीशु और उसके चेले आराधनालय गए और वहां उन्हें एक सूखे हाथ वाला मनुष्य मिला। यीशु ने उस मनुष्य से हाथ बढ़ाने को कहा और सब्त के दिन आराधनालय में उसे चंगा किया। तब फरीसी बाहर निकले और उसके विरोध में सम्मति की कि उसे किस प्रकार नष्ट करें। परंतु यीशु यह जानकर वहां से निकल गया। बहुत से लोग उसके पीछे चल पड़े, और उसने उन सबको चंगा किया और उन्हें चेतावनी दी कि वे उसे प्रकट न करें, और यीशु कुछ और दिन उस नगर में लोगों को शिक्षा देता रहा और उन्हें उनकी बीमारी से चंगा करता रहा। दो बार ऐसा हुआ कि लोग बहुत लम्बे समय तक बगैर कुछ खाए, जंगल में वचन सुनते रहे और दोनों बार यीशु ने सात से कम रोटी और कुछ मछलियों से लगभग चार हजार मनुष्यों को भोजन खिलाया।

जब वह गलील में ही था, उसने चेलों को बताया कि कुछ समय बाद वह यरूशलेम जाएगा और वहां भयानक घटनाएं घटेंगी; और उसने कहा कि वह शास्त्रियों द्वारा दुख उठाएगा और मार डाला जाएगा और तीन दिन के पश्चात् वह फिर जी उठेगा।

मौखिक प्रश्न

1. यीशु ने अपने चेलों को कौन-सा कार्य करने के लिए सौंपा?
2. यीशु ने उन लोगों के लिए क्या कहा, जो उसे मनुष्यों के सम्मुख स्वीकार करेंगे, और जो मनुष्यों के सम्मुख अस्वीकार करेंगे?
3. कफरनहूम के निवासी तथा गलील के उन नगरों में, जहां उसने अधिकांश आश्चर्यकर्म किए थे, यीशु के संदेश की क्या प्रतिक्रिया हुई?
4. बोझ से दबे और सब थके हुओं को यीशु ने अपने पास बुलाया। यीशु ने उन लोगों से क्या प्रतिज्ञा की?
5. यीशु और उसके चेले खेत में क्यों रुके?
6. बालें तोड़ने पर फरीसियों ने यीशु की आलोचना किस प्रकार की?
7. सूखे हाथ वाले मनुष्य को चंगा करने पर फरीसियों ने यीशु की आलोचना क्यों की?
8. यहूदी अगुवों की सम्मति करने का क्या उद्देश्य था?
9. यीशु ने अपने चेलों को बताया कि कुछ बातें उसके साथ घटने वाली हैं। उसकी क्या भविष्यवाणी थी?

आत्मिक सच्चाइयां–पाठ 4
मत्ती 10–16

1. वे जो मनुष्यों के सम्मुख यीशु को स्वीकार करते हैं, उन्हें वह पिता के सम्मुख स्वीकार करेगा। परन्तु वे जो मनुष्य के सम्मुख उसे अस्वीकार करेंगे वह उनको अपने पिता के सम्मुख, जो स्वर्ग में है, अस्वीकार करेगा।
2. बहुत से लोग यीशु के पीछे केवल आश्चर्यकर्म देखने के लिए चलते थे। परंतु वे उसके साथ कोई संबंध नहीं रखना चाहते थे, और न ही उसकी आज्ञा का पालन करना चाहते थे। वे अपने पापों से पश्चात्ताप नहीं करना चाहते थे। वे केवल परमेश्वर की दया का लाभ उठाना चाहते थे। आज भी कई लोग ऐसा ही करते हैं। क्या आप किसी ऐसे व्यक्ति को जानते हैं?
3. यीशु मसीह के अतिरिक्त पिता को कोई नहीं जानता। जो कोई पिता परमेश्वर को जानना चाहता है, वह केवल यीशु मसीह के द्वारा ही जान सकता है। परमेश्वर और हमारे बीच यीशु मसीह के अतिरिक्त कोई और बिचवई नहीं हैं। परमेश्वर एक ही है, और उसके पास जाने का मार्ग भी एक ही है, और बाइबल हमें बताती है कि वह मार्ग यीशु मसीह है।

* **हो सकता है कि आपको यीशु मसीह के अतिरिक्त किसी अन्य मध्यस्थों के द्वारा परमेश्वर से प्रार्थना करना सिखाया गया हो। यह अन्य मध्यस्थ कौन हैं: क्या वे देवता, भविष्यद्वक्ता, या बीते समय के अच्छे लोग हैं? बाइबल बताती है कि वे अच्छे लोग तो हो सकते हैं, परन्तु परमेश्वर नहीं हैं। क्या आप बाइबल से सहमत है कि परमेश्वर और मनुष्यों के बीच केवल एक ही बिचवई है, अर्थात यीशु मसीह।**

4. **यीशु मसीह हमारे बोझ और चिंताओं को उठाना चाहता है। वह नम्र और मन में दीन है। वह हमारे बोझ से हमें छुटकारा देना चाहता है। यदि हम उसका जुआ उठा ले, तो हम मन में विश्राम पाएंगे, अर्थात हम उसे प्रभु मानकर अपने जीवन में स्वीकार करें।**
5. **यीशु मसीह को हमारे भौतिक आवश्यकताओं की चिंता है। शिष्य भूखे थे, और यीशु ने उन्हें भोजन प्रदान किया। यह जानते हुए कि यहूदियों का प्रकोप और उत्पीड़न उनपर भड़केगा। सृष्टि के सृजनहार परमेश्वर को प्रत्येक की आवश्यकताओं की चिंता है।**

"मैं दया चाहता हूं, बलिदान नहीं।" आप 'बलिदान' का क्या अर्थ समझते हैं? क्या आपके धार्मिक अगुवों ने भलाई प्राप्त करने के लिए या पापों की क्षमा के लिए आपको सिखाया कि परमेश्वर को बलिदान चढ़ाओ? क्या आपके लिए विश्वास करना कठिन है कि परमेश्वर आपसे बलिदान नहीं चाहता? यह दूसरी बार था कि यीशु मसीह ने फरीसियों को समझाया कि परमेश्वर मनुष्यों के बलिदानों से खुश नहीं होता परंतु धार्मिक लोगों के लिए यह बात स्वीकार करना कठिन है। सभी धर्म सिखाते हैं कि हमें परमेश्वर का प्रकोप हटाने व उसे खुश करने के लिए अवश्य कुछ करना चाहिए। अपनी मन्नत पूरी करने के लिए, पापों की क्षमा के लिए और परमेश्वर को भक्ति दिखाने के लिए कई

लोग कई प्रकार के कठिन कार्य करते हैं। परंतु ये सब परमेश्वर नहीं चाहता। यीशु यह जानता था कि उसे कई दुखों से गुजरना है, और फिर मरना है, और फिर तीन दिन बाद मरे हुओं में से जी उठेगा। यह परमेश्वर की योजना थी। उसने यह बात चेलों को भी समझाई, परंतु वे नहीं समझे कि वह क्यों मरकर फिर जी उठेगा।

* इस अध्ययन के पिछले तीन अध्यायों में, हम यीशु मसीह की मृत्यु और पुनरुत्थान के महत्त्व को समझने की कोशिश करने जा रहे हैं। यह अतुलनीय घटना संसार के इतिहास को हमेशा के लिए बदल देगी। इस घटना में इतनी सामर्थ है कि वह पाप के दासत्व को तोड़कर हमारे जीवन को बदल दे।

‘यीशु के साथ विश्वासघात’–पाठ 5

मत्ती 20-26

अब यीशु यरूशलेम जाते समय बारह चेलों को एकान्त में ले जाकर मार्ग में उनसे कहने लगा, “देखो, हम यरूशलेम जा रहे हैं। मनुष्य का पुत्र मुख्य याजकों और शास्त्रियों के हाथों पकड़वाया जाएगा, और वे उसे मृत्यु-दंड के योग्य ठहराएंगे। वे उसे गैरयहूदियों के हाथों में सौंपेंगे कि वे सका उपहास करेंगे, उसे कोड़े मारें उसे क्रूस पर चढ़ाएं और तीसरे दिन वह पुन: जीवित हो जाएगा।” मत्ती 20 : 17-19

पुनर्विचार

1. यीशु एक कुंवारी स्त्री द्वारा उत्पन्न हुआ जिसका नाम .... था।
2. उसके पिता .... को परमेश्वर ने स्वप्न में दर्शन देकर कहा कि वह मिस्र को भाग जाए क्योंकि राजा हेरोदेस बालक यीशु को .... चाहता था।
3. यूहन्ना बपतिस्मा देने वाला जंगल में रहकर प्रचार करता रहा और जिन्होंने अपने पापों से . ... उन्हें बपतिस्मा दिया।
4. यीशु मसीह ने कोई .... नहीं किया, फिर भी उसने यूहन्ना बपतिस्मा देने वाले से बपतिस्मा लिया।
5. “पश्चात्ताप” शब्द का क्या अर्थ है?...
6. जब यीशु का बपतिस्मा हुआ, तब .... कबूतर की नाई उतरा और परमेश्वर की आवाज़ यह कहते हुए सुनाई दी “यह मेरा .... है जिससे मैं प्रसन्न हूं।”
7. निर्जन स्थान में यीशु .... द्वारा परखा गया।
8. यीशु मसीह का सामना दो मनुष्यों से हुआ जो .... से ग्रस्त थे। यीशु मसीह ने प्रदर्शित किया कि उसे दुष्टात्मा पर .... है।
9. कौन अच्छा है, वह मनुष्य जिसने अधिक पाप किए और उनसे पश्चात्ताप किया, या वह मनुष्य जिसने कम पाप किए और कभी पश्चात्ताप नहीं किया?
10. यीशु ने कहा कि यदि हम मनुष्य के सम्मुख उसे स्वीकार करें, तो वह ....के सम्मुख जो स्वर्ग में है, हमें .... करेगा।
11. कई गलीली, कफ़रनहूम निवासियों सहित परमेश्वर के वचन को ...., वे यीशु मसीह के पीछे केवल इसलिए चलते थे क्योंकि वह बहुत आश्चर्यकर्म करता था।
12. वे अपने पापों से पश्चात्ताप नहीं करना चाहते थे। यहां “पश्चाताप” शब्द का क्या अर्थ है?
13. यीशु मसीह ने कहा कि जो थके और बोझ से दबे हुए लोग हैं उन्हें वह .... देगा, क्योंकि उसका जुआ .... है।
14. फरीसी नहीं चाहते थे कि यीशु मसीह सूखे हाथ वाले मनुष्य को चंगा करे क्योंकि वह .. .. का दिन था, और यह व्यवस्था के नियम के विरुद्ध था कि कोई .... के दिन काम करे।
15. फरीसी यीशु को .... के लिए योजना बनाने लगे।

16. यीशु जानता था कि फरीसी उसे मारने की योजना बना रहे थे, लेकिन फिर भी वह दो .... ओर कुछ .... से चार हजार से अधिक मनुष्यों को भोजन कराने सहित कई आश्चर्यकर्म करता रहा।

यीशु अपने चेलों के साथ गलील से यरूशलेम को गया। जब वह यरूशलेम पहँचने पर था, यीशु ने दो चेलों को पास के गांव में भेजा और कहा कि उन्हें वहां एक गदही के साथ उसका बच्चा बाँधा हुआ मिलेगा, जिसकी उसे आवश्यकता है। यीशु उस गदही के बच्चे पर बैठ गया और यरूशलेम में प्रवेश किया।

वह बड़ी भव्यता और विजयोल्लास के साथ यरूशलेम में प्रवेश हुआ। मार्ग के दोनों ओर भीड़ इकट्ठी हो गई। भीड़ में से बहुतों ने अपने वस्त्र मार्ग में बिछाए और उसके सम्मान में दूसरों ने खजूर की डालियां काटकर मार्ग में बिछाईं। जो उसके आगे-पीछे चल रहे थे, पुकार-पुकारकर कह रहे थे, "दाऊद की संतान को होशन्ना। धन्य है वह जो प्रभु के नाम से आता है! सर्वोच्च स्थान में होशन्ना!"

जब उसने नगर में प्रवेश किया तो सारे नगर में हलचल मच गई और सब कहने लगे, "यह कौन है?" और भीड़ के लोग कह रहे थे, "यह गलील के नासरत का नबी यीशु है।"

यीशु ने मंदिर में प्रवेश करके उन सबको जो मंदिर में लेन-देन कर रहे थे, निकाल दिया और सर्राफों की मेजें और दुकानों की चौकियां उलट दीं। उसने उनसे कहा, "लिखा है, 'मेरा घर प्रार्थना का घर कहलाएगा,' पर तुमने उसे डाकुओं की खोह बना दी है।" तब अंधे और लंगड़े उसके पास आए और उसने उन्हें चंगा किया।

कई बातों की शिक्षा देने के बाद यीशु ने मंदिर में कई चिह्न और आश्चर्यकर्म किए। तब मुख्य याजक और शास्त्री उसको मरवाने के लिए षड्यंत्र रचने लगे। वे विचार-विमर्श करने लगे कि उसे कैसे धोखे से मार डालें। वे फसह के पर्व के समय इस खोज में थे कि कैसे उसे पकड़ें और मार डालें। फिर उन्होंने फसह का पर्व निकल जाने तक इंतजार करना निश्चित किया।

तब बारहों में से एक, जिसका नाम यहूदा इस्करियोती था, मुख्य याजकों के पास गया और उसने कहा, "यदि मैं यीशु को तुम्हारे हाथ पकड़वा दूं, तो मुझे क्या दोगे" उन्होंने उसे चांदी के तीस सिक्के तौल कर दे दिए। तबसे वह उसे पकड़वा देने का उपयुक्त अवसर ढूंढ़ने लगा।

जब फसह का पर्व आया, चेलों ने यीशु के निर्देश के अनुसार भोजन खाने की तैयारी की। फिर संध्या के समय यीशु चेलों के साथ भोजन करने बैठा तो उसने उनसे कहा, "मैं तुमसे सच कहता हूं कि तुममें से एक मुझे पकड़वाएगा।" इसपर वे अत्यन्त व्यथित होकर एक-एक करके उससे पूछने लगे, कौन पकड़वाएगा। मनुष्य के पुत्र को तो, जैसा उसके विषय में लिखा गया है। जाना ही है, परंतु हाय उसपर जिसके द्वारा मनुष्य का पुत्र पकड़वाया जाएगा। उस मनुष्य के लिए अच्छा होता यदि वह जन्म न लेता।" तब उसके पकड़वाने वाले अर्थात् यहूदा ने कहा, "रब्बी, क्या वह मैं हूं?" "तूने स्वयं ही कह दिया," यीशु ने उत्तर दिया।

जब वे भोजन कर रहे थे, यीशु ने रोटी ली और आशीष मांग कर तोड़ी और चेलों को देकर कहा, "लो, खाओ यह मेरी देह है।" फिर उसने प्याला लेकर धन्यवाद दिया और उन्हें देते हुए कहा, "तुम सब इसमें से पियो, क्योंकि यह वाचा का मेरा वह लहू है जो बहुत लोगों के निर्मित्त पापों की क्षमा के लिए बहाया जाने को है।"

भोजन करने के पश्चात् उन्होंने भजन गाए। इसके बाद वे जैतून पर्वत पर चले गए। वहां यीशु

उन्हें वे बातें बताने लगा जो थोड़े ही समय बाद घटने वाली थीं।

तब यीशु गतसमनी नामक स्थान में आया, जहां वह पूरी रात प्रार्थना में उनके साथ बिताना चाहता था। उसने अपने साथ पतरस, याकूब और यूहन्ना को लिया और व्यथित तथा व्याकुल होने लगा। उसने उन्हें अपने साथ जागने को कहा, और वह स्वयं वहां से थोड़ी दूर जाकर एकान्त में अपने पिता से प्रार्थना करने लगा। उसने उन होने वाली बातों के लिए प्रार्थना की। उसने इस प्रकार प्रार्थना की:

"हे मेरे पिता, यदि संभव हो तो यह प्याला मुझसे टल जाए। फिर भी मेरी नहीं, पर तेरी इच्छा पूरी हो।"

ऐसा लिखा है कि यही प्रार्थना उसने तीन बार की। उसका मन बहुत उदास था, यहां तक कि वह मरने पर था। फिर भी चेले उसके साथ एक घड़ी भी न जाग सके। वे सब सो रहे थे। अंत में यीशु ने उन्हें जगाते हुए कहा, "उठो, चलें। देखो, मेरा पकड़वाने वाला निकट आ पहुंचा है।"

मौखिक प्रश्न

1. यीशु ने किस जानवर पर बैठकर यरूशलेम में प्रवेश किया?
2. जब यीशु नगर में प्रवेश कर रहा था, तब लोगों ने क्या किया?
3. यहूदा ने यीशु को पकड़वाने के लिए क्या किया?
4. नगर में कौन-सा पर्व मनाया जा रहा था?
5. यीशु ने यहूदा को कैसे चिताया कि वही उसे पकड़वाएगा?
6. भोजन के समय यीशु ने दाखरस के विषय में क्या कहा?
7. यीशु के अनुसार, लहू का बहाया जाना किनके लिए आवश्यक था?
8. यीशु अपने चेलों के साथ रात्रि में प्रार्थना के लिए गतसमनी में गया। कितने चेले सारी रात जागते और उसके साथ प्रार्थना करते रहे?
9. जिस रात यीशु पकड़वाया जाने को था, उसने क्या प्रार्थना की?

आत्मिक सच्चाइयां–पाठ 5
मत्ती 20-26

1. <u>परमेश्वर प्रत्येक वस्तु पर नियंत्रण रखता है:</u> फरीसी यीशु को किसी षड्यंत्र में फंसा कर पकड़ना चाहते थे। लेकिन परमेश्वर अपनी सिद्ध इच्छा को पूरा करने के लिए उनका इस्तेमाल कर रहा था। परमेश्वर की हमेशा से यह इच्छा थी कि यीशु लोगों के पापों के लिए सलीब पर मरे।
2. <u>परमेश्वर हमेशा हमारे हृदय की बात जान लेता है जो शायद और नहीं जानते:</u> प्रभु यीशु को पहले से ही मालूम था कि उसका चेला यहूदा उसे धोखा देगा।
3. <u>यीशु हमसे प्रेम करता और सिखाता है, जबकि हम उसे नकार देते हैं, तब भी वह हमसे प्रेम करता है:</u> यीशु ने यहूदा के साथ इतना अच्छा व्यवहार किया कि कोई और चेला विश्वास ही नहीं कर सकता था कि वह उसे पकड़वाएगा। उसी तरह यीशु भी हमसे प्रेम करता है, जबकि हम उसे धोखा देते और नकार देते हैं।
4. <u>प्रभु यीशु मसीह का लहू हमारे पापों की क्षमा के लिए बहाया गया:</u> चेले इस बात को एक समय तो नहीं समझ पाए कि प्रभु यीशु को अपना प्राण देना क्यों आवश्यक हैं। वे नहीं समझ पाए कि परमेश्वर को पापों की क्षमा के लिए कीमत चुकानी पड़ेगी, और वह कीमत, लहू का बहाया जाना होगा। वह यह समझते थे कि यीशु उनसे प्रेम करता है और उनके पाप क्षमा हो गए हैं। लेकिन उन्हें यह समझना और भी जरूरी था, कि कैसे यीशु को उनके पाप क्षमा करने के लिए अपनी जान की कीमत देनी होगी।

*बहुत से लोग जानते हैं कि पाप उनके जीवन में है। उन्हें यह भी मालूम है कि यीशु उनसे प्रेम करता है लेकिन बहुत ही कम लोग यह बात समझते हैं कि पापों की क्षमा के लिए परमेश्वर लहू की कीमत चाहता है। केवल प्रभु यीशु मसीह ही ऐसा व्यक्ति था जो परमेश्वर होने के कारण इस पृथ्वी पर निष्पाप था। क्योंकि उसका प्रेम हमारे लिए इतना अनोखा था कि उसने हमारे पापों की क्षमा के लिए अपना बलिदान देकर हमें छुड़ाया। यह उसके बलिदान के कारण ही है कि हमें अपने पापों की क्षमा, और परमेश्वर से शांति प्राप्त है।

अगले सप्ताह हम यीशु के क्रूस पर चढ़ाए जाने की शिक्षा लेंगे।

“यीशु का सलीब पर चढ़ाया जाना” –पाठ 6
मत्ती 26-27

यीशु ने उससे कहा, “तूने स्वयं ही कहा। फिर भी मैं तुमसे कहता हूं कि अब से तुम मनुष्य के पुत्र को सर्वशक्तिमान के दाहिनी ओर बैठा हुआ और स्वर्ग से बादलों पर आता हुआ देखोगे।” (मत्ती 26 : 64)।

पुनर्विचार

1. यीशु कुंवारी से उत्पन्न हुआ जिसका नाम .... था।
2. जैसा पवित्रशास्त्र में पहले से ही कहा गया था, यीशु का जन्म .... नगर में हुआ।
3. पवित्रशास्त्र के अनुसार यीशु ....के देश से निकलकर मिस्र जाना पड़ा क्योंकि वह राजा हेरोदेस से भाग रहा था।
4. यीशु के पिता .... ने स्वर्गदूतों द्वारा यह सलाह पाई कि वापस इस्राएल को लौट जा क्योंकि राजा हेरोदेस मर चुका है। क्योंकि यूसुफ हेरोदेस के बेटे से डरता था, इसलिए वह .... के प्रांत नासरत नगर को चला गया।
5. .... के द्वारा बपतिस्मा लेने के बाद यीशु ने अपनी सेवा का आरंभ किया।
6. जैसे यीशु पानी से बाहर निकला .... कबूतर की नाई उसपर ठहरा और आकाश से .... की यह आवाज़ आई कि ‘यह मेरा प्रिय पुत्र है जिससे मैं अति प्रसन्न हूं।’
7. यीशु ने बहुत से लोगों को चंगा किया और उनके .... से उन्हें क्षमा किया।
8. बहुत से आश्चर्यकर्म देखने के बाद भी गलील क्षेत्र के लोगों ने यीशु के संदेश को .... तब भी उन्होंने अपने पापों से पश्चात्ताप नहीं किया।
9. शब्द “पश्चात्ताप” का क्या अर्थ है?
10. जब यीशु यरूशलेम को गया तो एक बड़ा जुलूस उसके साथ हो लिया इस जुलूस में यीशु .... पर बैठा था।
11. फसह के पर्व की रात यीशु ने अपने चेलों से कहा कि उनमें से एक उसे ...., लेकिन काई नहीं जानता था कि वह कौन है?
12. यीशु ने उन्हें पीने वाले दाखरस के बारे में बताया। उसने कहा कि यह उसके लहू का प्रतीक है जो उनके पापों की .... के लिए बहाया जाएगा।
13. चेलों ने इन शब्दों को सुना, फिर भी वे नहीं समझे कि वह उनके पापों के बदले .... देगा।
14. भोजन के बाद वे जैतून पर्वत पर, और वहां से गतसमनी के बाग में गए जहां यीशु रात भर प्रार्थना करता रहा, जबकि उसे चेले .... रहे थे।
15. यीशु ने कहा, “यदि हो सके तो यह प्याला मुझसे टल जाए, परंतु मेरी नहीं, बल्कि तेरी ही .... पूरी हो।”

जबकि यीशु ऊपर जा ही रहा था, तो उसे धोखे से पकड़वाने वाला यहूदा याजकों और धार्मिक अगुवों के साथ उसे पकड़ने आ पहुंचा। उनके हाथों में तलवारें और भाले थे। यहूदा ने यीशु को चूमा और कहा, “हे रब्बी नमस्कार” यीशु ने कहा, “मित्र, तू यहां क्यों आया है?”

तभी यीशु के चेलों में से एक ने जल्दी से तलवार निकालकर महायाजक के दास का कान काट दिया। उसी घड़ी यीशु ने उसका कान ठीक कर दिया। यीशु ने अपने चेलों से कहा कि 'यदि वह लड़ाई करना चाहे तो बारह सेनाओं से अधिक स्वर्गदूतों को बुला सकता है, लेकिन यह तो केवल पवित्रशास्त्र के अनुसार पिता की इच्छा पूरी हो रही हैं।

तभी यीशु उस भीड़ की ओर मुड़ा जो उसे पकड़ने आई थी और कहा, "क्या तुम भाले और तलवार इसलिए लाए हो कि तुम किसी डाकू को पकड़ो? मंदिर में रोज मैं तुम्हारे साथ बैठकर शिक्षा देता था, और वहां तुमने मुझे नहीं पकड़ा। लेकिन यह सब इसलिए हुआ कि भविष्यद्वक्ताओं के द्वारा कहा गया वचन पूरा हो।" उसी घड़ी उसके चेले उसे छोड़कर भाग गए।

तब वे उसे पकड़कर महायाजक काइफा के घर ले गए। वहां बहुत से याजकों और धार्मिक नेताओं ने उससे पूछताछ की। वहां उन्होंने बहुत से झूठे गवाहों को इकट्ठा किया था कि वे उसपर दोष लगाएँ ताकि उसे क्रूस पर चढ़ाया जा सके। लेकिन तब भी वे उसपर मृत्यु योग्य दोष लगाने के लिए प्रमाण न जुटा जाए। तब महायाजक ने स्वयं उससे पूछताछ की। उसने यीशु से कहा, "मैं तुझे जीवित परमेश्वर की शपथ खिलाता हूं, हमें बता कि क्या तू जीवित परमेश्वर का पुत्र मसीह है?"

यीशु ने उससे कहा, "ऐसा तू स्वयं कहता है। लेकिन मैं तुझसे कहता हूं कि इसके बाद तुम मनुष्य के पुत्र को सामर्थी के दाहिने बैठे, और बादलों पर आता हुआ देखोगे।" ऐसा सुनकर महायाजक ने कपड़े फाड़ लिए और कहा, "यह तो घोर निंदा है!" जो लोग वहां इकट्ठा थे, उन्होंने यीशु के मुंह पर थूका, बहुतों ने उसे घूंसों से मारा और उससे पूछा, "हमें बता कि तुझे किसने मारा है?"

अगली सुबह वे उसे रोमी राज्यपाल पिलातुस के पास ले गए, और उससे कहा कि, "यह अपने आप को यहूदियों का राजा कहता है।" पितातुस ने उससे पूछा 'क्या तू यहूदियों का राजा है?' यीशु ने कहा "ठीक, तू स्वयं ही कहता है।" लेकिन बाद भी पिलातुस यीशु में उसे क्रूस पर चढ़ाने योग्य दोष न पा सका। पिलातुस की पत्नी ने एक स्वप्न देखा और अपने पति से कहा कि तू, यीशु के साथ कुछ न करना। पिलातुस यह जानता था कि यहूदी अगुवों ने ईर्ष्यावश ऐसा किया है। लेकिन वह यह नहीं जानता था कि क्या करे। क्योंकि भीड़ क्रुद्ध थी।

एक प्रथा के अनुसार हर फसह पर लोगों की इच्छा अनुसार एक कैदी को छोड़ा जाता था, और इस वर्ष बरअब्बा नामक एक विशेष खतरनाक अपराधी कैद में था। अत: उसने बरअब्बा और यीशु को लिया और उन्हें उनमें से एक को चुनने को कहा कि, "तुम किसको चाहते हो कि मैं तुम्हारे लिए छोड़ दूं–बरअब्बा अथवा यीशु को जो मसीह कहलाता है?" परन्तु लोगों ने, जिनको फरीसियों ने उकसाया था, कहा, "बरअब्बा को!" तब उसने लोगों से पूछा, कि यीशु जो मसीह कहलाता है, के साथ मैं क्या करूँ? लोगों ने उससे कहा, "उसे क्रूस पर चढ़ा।"

तब पिलातुस ने पानी मंगवाया और अपने हाथ धो लिए और कहा, "मैं यीशु के लहू से निर्दोष हूं। जो तुम चाहो उसके साथ करो।" सो उसने बरअब्बा को छोड़ दिया और यीशु को कोड़े लगवाये।

तब सिपाही उसे ले गए और उसको यातना दी, और उसका मजाक उड़ाया। वे चारों ओर इकट्ठा हो गए। उसे चोगा पहनाया, कांटों का ताज उसके सिर पर रखा, और उसके हाथ में एक छड़ी दी और झुककर उसे प्रणाम किया और कहा, "यहूदियों के राजा को नमस्कार!" उसपर उन्होंने थूका, और जो छड़ी उसके हाथ में थी, उसी से उसे मारा। जब वे उसका मज़ाक उड़ा चुके तब उन्होंने उसका चोगा उतारा और उसे गुलगता (खोपड़ी के स्थान पर) ले गए जहां उसे

क्रूस पर चढ़ाया जाना था। वहां उन्होंने यीशु को क्रूस पर चढ़ाया और एक लेख लिखकर उसपर लगा दिया कि यह यीशु यहूदियों का राजा है। उसे दो डाकुओं के बीच में सलीब दी गई। जब यीशु सलीब के ऊपर था, तो नवें घंटे के लगभग यीशु ने जोर से पुकारा, **"एली, एली लमा-शबक्तनी"** जिसका अर्थ है, "हे मेरे परमेश्वर, हे मेरे परमेश्वर, तूने मुझे क्यों छोड़ दिया?" इसके बाद फिर वह चिल्लाया, और कहा "हे पिता मैं अपना प्राण तेरे हाथों में सौंपता हूं।"

जब उसने अपना प्राण त्याग दिया। तब बहुत सी विचित्र घटनाएं घटित हुई, जैसे मंदिर का पर्दा ऊपर से नीचे तक दो टुकड़ों में हो गया। चट्टानें तड़क गईं, भूकंप आया, और बहुत-सी कब्रें खुल गईं, बहुत से पवित्र लोगों के शव जीवित हो उठे, जिन्हें बहुत-से लोगों ने देखा।

मौखिक प्रश्न

1. यीशु को कैसे धोखा दिया गया?
2. यीशु के एक चेले ने यीशु को बचाने के लिए कुछ किया था। उसने क्या किया था और यीशु की क्या प्रतिक्रिया रही?
3. पकड़वाए जाने के समय उसके चेलों ने क्या किया?
4. कौन से बाग में उन्होंने यीशु को पकड़ा?
5. जबकि बहुत से झूठे गवाह वहां थे, लेकिन यीशु पर दोष लगाने के लिए उन्होंने क्या किया?
6. अगली सुबह वे यीशु को कहां ले गए?
7. जब पिलातुस यीशु में कोई दोष न पा सका, तो उसने यीशु को लोगों पर छोड़ दिया। तो पिलातुस ने लोगों के सामने चुनने के लिए क्या रखा, और उन्होंने क्या चुना?
8. सिपाहियों ने यीशु के साथ कैसा बर्ताव किया?
9. तीन घंटे के अंधकार के बाद यीशु ने क्या पुकारा, और उसका क्या अर्थ था?
10. वे कौन सी घटनाएं उस समय घटीं जब यीशु ने अपना प्राण त्यागा?

आत्मिक सच्चाइयां–पाठ 6
मत्ती 26-27

1. यीशु कौन है?: "मनुष्य का पुत्र जो सर्वशक्तिमान के दाहिने बैठा है और स्वर्ग के बादलों पर आने वाला है।" यही जवाब यीशु ने महायाजक को दिया था और, इसी कारण उसे क्रूस पर चढ़ाए जाने के लिए ले जाया गया। यह वह जवाब था जिसे लोगों ने स्वीकार नहीं किया। परन्तु आज भी हर किसी को उसी प्रश्न का सामना करना होगा, यह जानने के लिए कि यीशु कौन है? क्योंकि यदि यीशु वास्तव में सर्वशक्तिमान के दाहिने बैठा है और बादलों पर आने वाला है तो हममें से प्रत्येक को आज निर्णय करना होगा कि हमारा प्रत्युत्तर क्या होगा?
2. बरअब्बा के स्थान पर यीशु को सलीब पर चढ़ाया गया और निर्दयी डाकू, बरअब्बा को मुक्त कर दिया गया।

*हो सकता है कि मैं बरअब्बा के समान घृणित डाकू नहीं हूं, लेकिन परमेश्वर के सामने पापी हूं। और इसी कारण मृत्यु मेरी सजा है। रोमियों 6: 23 में लिखा है "पाप की मजदूरी मृत्यु है।" जिसका यह अर्थ है कि हम सबको मरना है, अपने उन पापों के कारण जो हमने अपने जीवन में किए हैं। जरूरी नहीं है कि हमने बरअब्बा के समान बहुत से पाप किए हों, और न हम उसके चेलों के समान अच्छे व्यक्ति हों, तब भी हमें पापों की क्षमा की आवश्यकता है।

3. यीशु सताया गया, दंडित हुआ और मारा गया केवल हमारे पापों की कीमत को चुकाने के लिए: इसी कारण से यीशु पृथ्वी पर आया, क्योंकि वह चाहता है कि हम परमेश्वर के सामने पापों की क्षमा प्राप्त किए हुए व्यक्तियों की नाई खड़े हों। कुछ लोग कहते हैं कि यीशु एक भविष्यद्वक्ता है, या शहीद है। लेकिन यह सत्य नहीं है। लेकिन यीशु ने स्वयं इस बात का दावा किया कि वह परमेश्वर है और लोगों के पापों के लिए अपना प्राण देने पृथ्वी पर आया।
4. यीशु ने स्वंय अपना प्राण सौंपा: यदि यीशु चाहता तो किसी भी क्षण क्रूस से नीचे उतर सकता था। अपने एक ही शब्द के द्वारा उन सबको जो उसका मजाक उड़ा रहे थे, मार सकता था। लेकिन स्वयं उसने दीन बनना चुना, और हमारे लिए सलीब पर चढ़ा। अपना आत्मा उसने सौंप दिया कि हमारे पापों का कर्ज़ चुकाया जाए। यूहन्ना 3: 16 में लिखा है: "परमेश्वर ने जगत से ऐसा प्रेम किया कि उसने अपना एकलौता पुत्र दे दिया, ताकि जो कोई उसपर विश्वास करे, नाश न हो, परंतु अनंत जीवन पाए।"

*अगले पाठ में हम यीशु के पुनरुत्थान के बारे में पढ़ेंगे, जिससे इस सत्य को जानेंगे कि आज यीशु मरा हुआ नहीं है, लेकिन जीवित है। वह आपके जीवन में आना चाहता है। वह आपके पापों को क्षमा करके, आप को पवित्र बनाना चाहता है और आपके जीवन को पूर्णतः बदलना चाहता है।

यीशु का पुनरुत्थान–पाठ 7

मत्ती 27–28

"डरो मत, क्योंकि मैं जानता हूं कि तुम यीशु को जिसे क्रूस पर चढ़ाया गया था, ढूंढ़ रही हो। वह यहां नहीं है, क्योंकि वह अपने कहने के अनुसार जी उठा है।" मत्ती 28: 5–6

पुनर्विचार

1. यीशु एक कुंवारी कन्या जिसका नाम .... था, उससे पैदा हुआ।
2. यीशु ने अपनी सेवकाई का आरंभ यूहन्ना द्वारा .... पाए जाने के बाद किया।
3. बपतिस्मे के समय .... कबूतर की नाई उसके ऊपर आ ठहरा। और स्वर्ग से परमेश्वर की आवाज़ आई, "यह मेरा प्रिय .... है जिससे मैं अति प्रसन्न हूं।" इससे हमें त्रिएकता के तीन व्यक्तियों .... का पता चलता है।
4. यीशु ने बहुत से लोगों को बीमारियों से चंगा किया और उनके पापों को .... किया।
5. लेकिन बहुतों ने इन आश्चर्यकर्मों को देखने के बाद भी यीशु के वचनों को ग्रहण नहीं किया और अपने पापों से .... नहीं किया।
6. शब्द 'पश्चात्ताप' का क्या अर्थ है?
7. यीशु ने कहा, दाखरस उसके लहू का प्रतीक है जो बहुतों के लिए .... जाएगा, उनके पाप की .... के लिए।
8. फरीसियों ने यीशु को गतसमनी बाग में, जहां वह प्रार्थना कर रहा था, उसे पकड़ा और . ... महायाजक के घर ले गए।
9. महायाजक ने उससे पूछा कि क्या वह .... और यीशु ने कहा हां, वह है। जब वे लोग यीशु के पास आए और उसके मुंह पर .... और उसका .... उड़ाया, और जो .... उसके हाथ में थी उससे उसे मारा।
10. अगली सुबह फरीसी उसे रोमी राज्यपाल, जिसका नाम .... था, उसके पास ले गए।
11. पिलातुस ने यीशु में कोई दोष नहीं पाया लेकिन लोगों के डर के कारण उसे क्रूस पर चढ़ाए जाने के लिए दे दिया कि कहीं लोगों में .... न उत्पन्न हो जाए।
12. रोमी सिपाहियों ने उसे सताया और .... का ताज उसके सिर पर रखा और उसके सिर पर .... से मारा, जो उसके हाथ में थी।
13. यीशु की सलीब पर यह लिखकर टांग दिया गया कि 'यह यीशु है जो यहूदियों का ....है।'
14. छः से नौ घंटे तक पूरे देश .... छाया रहा।

एक धनी व्यक्ति जिसका नाम अरमतियाह का यूसुफ था, वह भी यीशु का चेला था। उसने पिलातुस से आज्ञा ली कि क्या वह यीशु के शव को लेकर अपनी कब्र में दफना सकता है। पिलातुस ने इसे स्वीकार किया और तब यूसुफ ने यीशु को उस कब्र में दफना दिया, और एक बड़ा पत्थर मुंह पर रख दिया। अगली सुबह सब फरीसी इकट्ठे हुए और पिलातुस के पास गए, क्योंकि उन्हें यीशु की बातें याद थीं, कि उसने कहा था कि, "वह तीसरे दिन जी उठेगा।" उन्होंने पिलातुस से कहा, "अच्छा होगा कि कब्र को तीन दिन तक के लिए सुरक्षा में रखा जाए।' अतः

पिलातुस ने यह आज्ञा दे दी, और उन्होंने कब्र के ऊपर रोमी राज्य की मुहर लगा दी।

हफ्ते के पहले दिन मरियम मगदलीनी और दूसरी मरियम, जहां यीशु को रखा था, वहां गईं। उन्होंने देखा कि भूकंप के कारण कब्र का पत्थर हटा हुआ है और प्रभु का स्वर्गदूत पत्थर पर बैठा है; और जो सिपाही उसकी सुरक्षा कर रहे थे, वे भयभीत थे।

लेकिन स्वर्गदूत ने स्त्रियों से कहा, "जिस यीशु को तुम ढूंढ रही हो, वह यहां नहीं है वह जी उठा है। इससे पहले कि तुम गलील पहुंचो, वह वहां होगा और तुम उसे देखोगी।" वे स्त्रियां वहां से आनंद और डर के कारण चेलों को बताने के लिए दौड़ पड़ी। लेकिन जब वे जा रही थीं, तो यीशु उनसे मिला और कहा कि "आनंदित हो।" वे रुक गईं, और झुककर उसे दंडवत किया और उसने उनसे कहा कि "चेलों से कहो कि वे मुझे गलील में मिलें।"

तब सिपाहियों ने महायाजक को, जो कुछ हुआ था, वह सब बता दिया। तब महायाजकों ने निश्चय किया कि वे सिपाहियों को बहुत-सा धन दें, और वे नगर में चारों ओर फैला दें कि जब वे सो रहे थे तो चेले उसका शव चुराकर ले गए। और उन्होंने सिपाहियों से कहा कि 'यदि पिलातुस तुमसे पूछता है कि तुम सो रहे थे, तो हम तुम्हें बचा लेंगे।' सिपाहियों ने घूस लेकर शहर में चारों ओर यह अफवाह फैला दी।

बाकी ग्यारह चेले उस स्थान पर पहुंचे, हां यीशु ने उनसे मिलने को कहा था। जब उन्होंने उसे देखा, तो उसे दंडवत किया। परंतु बहुतों ने उसपर संदेह किया।

तब यीशु ने उनसे आखिरी बार कहा, 'स्वर्ग और पृथ्वी का अधिकार मुझे दिया गया है। इसलिए जाओ सब जातियों के लोगों को चेले बनाओ, तथा उन्हें पिता, पुत्र तथा पवित्र आत्मा के नाम से बपतिस्मा दो। और जो-जो आज्ञाएं मैंने तुम्हें दी हैं, उनका पालन करना सिखाओ, और देखो, मैं युग के अंत तक सदैव तुम्हारे साथ हूं।" आमीन!

मौखिक प्रश्न

1. अरमत्तियाह के यूसुफ ने पिलातुस से क्या आज्ञा लेनी चाही?
2. फरीसी किस बात से डरते थे कि तीन दिन में यीशु के शव के साथ क्या होगा और क्यों?
3. सबसे पहले यीशु को देखने के लिए कौन गया और उन स्त्रियों ने कब्र पर क्या पाया?
4. जब वे चेलों को बताने के लिए वापस आ रही थीं, तो उनकी भेंट किससे हुई?
5. यीशु ने चेलों से मिलने के लिए कौन-सा स्थान चुना?
6. पर्वत पर यीशु ने बहुत ही महत्वपूर्ण कार्य सौंपा। यीशु के शब्दों में उन्हें लिखें। "इसलिए जाओ और सब जातियों के लोगों को .... बनाओ। उन्हें पिता, पुत्र तथा पवित्र आत्मा के नाम से .... दो। और जो-जो आज्ञाएं मैंने तुम्हें दी हैं उनका पालन करना .... और देखो, मैं युग के अंत तक सदैव तुम्हारे साथ हूं।"

आत्मिक सच्चाइयां – पाठ 7
मत्ती 27-28

1. यीशु आज भी जीवित है। यीशु मानव नहीं है कि उसे जेल में डाल दिया जाए और मार दिया जाए, लेकिन वह अनन्त परमेश्वर है। वह बिना आरंभ और अंत के है। परमेश्वर की योजना इस संसार में पूरी करने के लिए वह दास के रूप में प्रकट हुआ जिसे सताया गया, यह उसी की इच्छा थी कि उसे क्रूस पर चढ़ाया जाए और ऐसे सताव से वह गुजरे। उसकी योजना उलझाव पैदा नहीं करती, और न ही कोई उसकी योजना को भंग कर सकता है। वह हमेशा परमेश्वर ही रहेगा–केवल एकमात्र सत्य परमेश्वर।

2. फरीसियों ने यीशु के कथनों पर यहां तक विश्वास किया था कि उसके मरने के बाद उन्होंने सिपाहियों को कब्र पर तैनात कर दिया। क्योंकि उसने तीन दिन बाद जी उठने की प्रतिज्ञा की थी। उन्होंने सिपाहियों की बातों पर विश्वास किया, जब उन्होंने कहा कि यीशु जी उठा है। यहां तक कि उन्होंने सिपाहियों को झूठ बोलने के लिए धन भी दिया और यही वे लोग थे, जब यूहन्ना यीशु को बपतिस्मा दे रहा था, तब भी वे उपस्थित थे। और इन्होंने इस आवाज़ को सुना था, "यह मेरा प्रिय पुत्र है जिससे मैं अत्यंत प्रसन्न हूं।" इन्होंने यीशु के बहुत से आश्चर्यकर्मों को देखा था। वे उससे बहुत क्रोधित थे, जब सब्त के दिन उसने सूखे हाथ वाले व्यक्ति को चंगा किया था। उसने बहुत सी दुष्टात्माओं को निकाला और लोगों के पापों को क्षमा किया। यह भी उन्होंने देखा और हो सकता है फरीसियों से अधिक कोई भी यीशु के जीवन और उसके संदेश के बारे में न जानता हो। लेकिन यह वही लोग थे जब प्रभु का प्रेम उन पर प्रकट हुआ, तब उन्होंने उसे ग्रहण नहीं किया। वे अपने पापों से नहीं पछताए और न ही अपना जीवन यीशु के नियंत्रण में दिया। यीशु से संबध रखना, विश्वास करना उसके बारे में जानने से बहुत बढ़कर है। यीशु की इच्छा हमारे जीवन में यह है कि हम पापों से पश्चात्ताप करें और उसपर विश्वास करें और अपना जीवन उसे दे दें। वह हमारे जीवन का प्रभु होना चाहता है। प्रत्येक दिन वह हमारे जीवन को अपने नियंत्रण में रखना चाहता है।

3. यीशु कौन है?
   - यीशु एक कुंवारी से उत्पन्न हुआ था।
   - यीशु ने दावा किया कि वह परमेश्वर था।
   - यीशु ने बहुत से आश्चर्यकर्म किए और जिन्होंने पश्चात्ताप किया उसने उसके पापों को क्षमा किया।
   - यीशु ने क्रूस पर अपना प्राण देकर न्यायी परमेश्वर के सामने हमारे जीवन के पापों की कीमत को चुकायी।
   - यीशु मृतकों में से जी उठा और आज भी जीवित है।
   - यीशु मुझसे भी चाहता है कि मैं अपने पापों से क्षमा मांगू और अपना जीवन उसे दे दूं।

बाइबल हमें सिखाती है कि यीशु ने अपना प्राण इसलिए नहीं दिया कि वह हमारे लिए मात्र

एक नमूना बन जाए, परंतु इसलिए कि वह हमारा स्थानापन्न बन जाए और हम परमेश्वर का सामना करने से बच जाएं।

बाइबल कहती है कि "जो यीशु का नाम लेगा वह बच जायेगा (रोमि. 10:13)।

- ❖ इसका अर्थ है कि प्रभु हमारे पुराने जीवन को नहीं देखता। मैं यीशु को अपने जीवन में आमंत्रित कर सकता हूं कि वह मेरे पापों को क्षमा करे और मैं उसमें अपना नया जीवन बिताऊं।
- ❖ इसका अर्थ यह हुआ कि जिस क्षण प्रभु यीशु हमारे हृदय में प्रवेश करता है तब हमारे भूत वर्तमान और भविष्य के पाप परमेश्वर के सामने क्षमा हो जाते हैं। यह इसलिए नहीं कि हमने कुछ अच्छा किया है, और न ही इसलिए कि मैं एक आदर्श व्यक्ति हूं; और इसलिए भी नहीं कि मेरे माता-पिता किसी अन्य जाति के हैं। लेकिन यह केवल इसलिए है कि मैंने प्रभु यीशु के बलिदान को जो उसने क्रूस पर दिया, ग्रहण किया है।
- ❖ इसका अर्थ यह हुआ मैं परमेश्वर की दृष्टि में निर्दोष और पवित्र हो गया। बाइबल हमें सिखाती है कि पाप की मजदूरी मृत्यु है, लेकिन प्रभु यीशु की मृत्यु मुझे नया प्राणी बनाने के लिए काफी है। यदि मैं प्रभु के पीछे चलने का निर्णय लेता हूं, यदि आप परमेश्वर की क्षमा अपने जीवन में चाहते हैं, और उसका अनुयायी होना चाहते हैं तो उससे कहे, "इसी क्षण मेरे हृदय में आ।" ऐसा करने के लिए कोई विशेष स्थान या शब्दों की आवश्यकता नहीं है, लेकिन महत्वपूर्ण बात केवल यह है कि आप परमेश्वर के पास जाएं और बात इसकी घोषणा करें कि यीशु परमेश्वर है और उसे आप अपने जीवन का नियंत्रण सौंपते हैं।

यदि चाहें तो आप इस प्रकार प्रार्थना कर सकते हैं।

"पिता, आप जानते हैं कि मैं पापी हूं। मैं विश्वास करता हूं कि यीशु ने अपना प्राण सलीब पर मेरे लिए दिया और मुझे पापों से बचाने के लिए जी उठा। मैं अपने पापों से पश्चात्ताप करता हूं। मेरे जीवन में आ, मेरे पापों को क्षमा कर और मैं अपना जीवन तुझे सौंपता हूं। धन्यवाद तेरे उस प्रेम के लिए जो तूने मुझसे किया। यीशु के नाम में। आमीन!"

4. और देखो, "<u>जगत के अंत तक मैं सदैव तुम्हारे साथ हूं।</u>"

यूहन्ना 14: 13 में बाइबल बताती है "मेरे पिता के घर में रहने के बहुत-से स्थान हैं। यदि न होते तो मैं तुमसे कह देता। क्योंकि मैं तुम्हारे लिए जगह तैयार करने जाता हूं और यदि मैं जाकर तुम्हार लिए जगह तैयर करूं, तो फिर आकर तुम्हें अपने यहां ले जाऊंगा कि जहां मैं रहूं, वहां तुम भी रहो।"

यीशु ने प्रत्येक से प्रतिज्ञा की कि, जो कोई उसे अपना जीवन देगा, वह उसके साथ अनन्तकाल तक स्वर्ग में जीवन बिताएगा स्वर्ग, पिता का घर है। <u>एक बार जब यीशु को हम अपने जीवन में ग्रहण कर लेते हैं, तब हम उसके अनन्तजीवन में भी सहभागी होंगे।</u> इसका अर्थ यह है कि यीशु हमारे साथ पृथ्वी पर होगा, लेकिन जब हम मर भी जाते हैं, तो स्वर्ग में उसके साथ अनंत जीवन बिताएंगे।

जो प्रेम यीशु हमसे करता है, वह कभी खत्म नहीं होता।

❊❊❊

मसीह में
नये जीवन का आरम्भ

लेखक
क्रिस्टी ए. ब्रॉनर

“मसीह में नये जीवन का आरम्भ”
पुस्तक को कैसे प्रयोग करें

1. प्रत्येक सभा को एक संक्षिप्त प्रार्थना के साथ आरम्भ करें–
   प्रभु से यह विनती करते हुए कि कहानियों के लिए वह समझ प्रदान करे।

2. सभा में भाग लेने वालों के बीच कहानियों को पढ़ें अथवा यदि इसकी प्रतियां उपलब्ध हैं तो ‘इंडायरेक्ट मेथड’ का उपयोग कर एक साथ मिलकर उसे पढ़ें।

3. कहानी के अंत में अगुवे को मौखिक प्रश्न पूछने चाहिए। इन प्रश्नों का उद्देश्य कहानी के प्रति समझ का मूल्यांकन करना है, न कि समय को खींचना अथवा वाद-विवाद करना है।

4. आत्मिक सच्चाइयों को पढ़ें। ‘ग्रुप’ के सदस्यों को स्वतंत्रता दें कि वे प्रत्येक आत्मिक सच्चाई पर खुलकर बहस कर सकें। सावधान रहें कि वे कभी भी किसी के साथ बहस अथवा वाद-विवाद न करें। इस बिंदु पर सदस्यों के लिए यह जरूरी नहीं कि वे आत्मिक सच्चाइयों पर सहमत हों अथवा उन्हें स्वीकार करें। महत्त्वपूर्ण केवल इताना है कि वे उस सत्य को समझ सकें जो परमेश्वर के वचन में प्रकट की गई हैं।

5. आत्मिक सच्चाइयों के पश्चात् समय निकालें कि प्रत्येक व्यक्ति ‘ग्रुप’ के साथ अपनी आवश्यकताएं तथा प्रार्थना-निवेदन बांट सके।

6. ‘ग्रुप’ के प्रत्येक सदस्य के लिए अथवा उसकी आवश्यकता के लिए विशेष प्रार्थना करें। जैसे ही ‘ग्रुप’ आगे बढ़ता है और लोग प्रभु को ग्रहण करते हैं, तो होने दें कि सदस्यगण मध्यस्थता की प्रार्थना में प्रत्येक के लिए प्रार्थना करें।

“यीशु का प्रथम और द्वितीय आगमन” – पाठ 1
मत्ती 1 और 24

“इसलिए जागते रहो, क्योंकि तुम नहीं जानते कि तुम्हारा प्रभु किस घड़ी आएगा। इस कारण तुम भी तैयार रहो, मनुष्य का पुत्र उस घड़ी आ जाएगा जबकि तुम सोचते भी नहीं।” (मत्ती 24:42, 44)

* यदि संभव हो, तो समूह का प्रत्येक सदस्य जो लिख सकता है, एक सादी ‘नोटबुक’ और एक कलम लेकर इस अध्ययन में आए।

जिस समय रोमी लोग ज्ञात संसार में राज्य कर रहे थे, उस समय इस्राएल देश में मरियम नामक एक कुंवारी लड़की रहती थी, जिसकी मंगनी यूसुफ नामक एक पुरुष के साथ हुई थी। लेकिन इससे पहले कि उनकी शादी होती, यूसुफ को पता चला कि वह गर्भवती है। उसने अपनी मंगनी मरियम के साथ तोड़नी चाही। उसने निश्चय किया कि वह उसको चुपचाप से छोड़ देगा ताकि उसकी बदनामी न हो। जब वह ऐसा सोच ही रहा था, तो परमेश्वर का स्वर्गदूत उसके पास आया और बोला कि मरियम को अपनी पत्नी बनाने से न डर, क्योंकि जो उसके गर्भ में है वह पवित्र आत्मा की ओर से है। स्वर्गदूत ने उससे कहा कि वह प्रतिज्ञा किए हुए उस पुत्र को जन्म देगी, जिसके विषय में यहूदी नबियों द्वारा प्रतिज्ञा की गई है। यशायाह भविष्यद्वक्ता ने कहा था कि “कुंवारी गर्भवती होगी और पुत्र को जन्म देगी और उसका नाम इम्मानुएल रखा जाएगा जिसका अर्थ है ‘परमेश्वर हमारे साथ’। सो यूसुफ ने स्वर्गदूत का विश्वास किया और मरियम को अपनी पत्नी बना लिया, लेकिन प्रभु यीशु का जन्म होने से पहले उन्होंने आपस में यौन-संबंध स्थापित नहीं किया। इस प्रकार उसका जन्म हुआ और उसका नाम यीशु रखा गया।

प्रभु यीशु के जन्म के बारे में बाइबल में बहुत-सी भविष्यद्वाणियां की गईं। उसके जन्म के विषय में पहले ही लिखा गया, और वैसे ही उसकी मृत्यु और पुनरुत्थान के बारे में भी। यीशु ने अपने बारे में बहुत-सी प्रतिज्ञाएं कीं, कि वह कौन था, और क्या करेगा। उनमें से कुछ भविष्यद्वाणियां और उसकी प्रतिज्ञाएं अभी भी पूरी नहीं हुई हैं। उनमें से एक प्रतिज्ञा यह भी है कि वह दुबारा पृथ्वी पर आएगा। पहली बार वह दीन बनकर एक दुख उठाने वाले दास की तरह आया। लेकिन बाइबल बताती है कि उसका द्वितीय आगमन बहुत ही अलग होगा।

जैतून के पहाड़ पर उसने अपने अनुयायियों को अपने वापस आने के बारे में बताया। जब उससे पूछा गया कि संसार के अंत का और उसके आगमन का क्या चिह्न होगा, तो यीशु ने जवाब दिया: “सावधान रहो कि कोई तुम्हें भरमाने न पाए। उसने कहा कि, ऐसा होगा कि बहुत से कहेंगे कि मैं मसीह हूं,” दुर्भाग्यवश बहुतेरे इन झूठे भविष्यद्वक्ताओं का विश्वास कर लेंगें। उन दिनों पृथ्वी पर जगह-जगह लड़ाइयां होंगी। तब चार भयानक घटनाएं घटेंगीं–युद्ध की अफवाहें, अकाल, बीमारियां और भूकंप होंगे। लेकिन यह चीज़ें मात्र आरम्भ होंगी। यीशु के आने से पहले इससे भी बढ़कर दुख आएंगे। लोग एक दूसरे को धोखा देंगे, हत्या करेंगे, एक दूसरे से नफरत करेंगे। बहुत से झूठे भविष्यद्वक्ता लोगों को भरमाएंगे। अधर्म बढ़ता जाएगा, और एक दूसरे के प्रति प्रेम ठंडा पड़ता जाएगा। इन सब बातों के होते हुए भी प्रभु यीशु का सुसमाचार हर एक जाति, देश

में फैलता जाएगा और तब अंत आ जाएगा। पूरे संसार भर में महाक्लेश होगा और यदि धर्मी लोगों के कारण उस महाक्लेश के दिनों को कम न किया जाता तो पूरी मानवजाति ख़त्म हो जाती। सो इसलिए झूठे भविष्यद्वक्ताओं और झूठे मसीह पर विश्वास न करें जो जगह-जगह जाएंगे और बड़े ही अद्भुत चिह्न दिखाएंगे। यह केवल लोगों को धोखा देंगे। यहां तक कि जो प्रभु यीशु के विश्वासी हैं, उन्हें भी भरमा देंगे। परन्तु जैसे बिजली पूरब से पश्चिम की ओर चमकती है, वैसे ही परमेश्वर के पुत्र का आना होगा।

महाक्लेश के बाद सूर्य अंधकारमय हो जाएगा। चंद्रमा प्रकाश देना बंद कर देगा। आकाश से तारागण गिर पड़ेंगे। आकाश की शक्तियां हिलाई जाएंगी। तब परमेश्वर के पुत्र का चिह्न आकाश में दिखाई देगा। तब संसार की सब जातियां शोकित होंगी और वे परमेश्वर के पुत्र को महिमा और सामर्थ में बादलों पर आते देखेंगे; और वह अपने स्वर्गदूतों को भेजेगा और स्वर्गदूत तुरही के द्वारा उन्हें जिन्होंने अपना जीवन यीशु को दिया, चारों दिशाओं से इकट्ठा करेंगे। इस बात के विषय में कि कब यीशु का आना होगा, कोई नहीं जानता न तो स्वर्गदूत और न ही प्रभु यीशु, लेकिन केवल स्वयं पिता जानता है। तो इसलिए आप भी हर पल यीशु के आगमन के लिए तैयार रहें, क्योंकि कोई नहीं जानता कि वह किस क्षण आ जाए।

मौखिक प्रश्न

1. यीशु मसीह का जन्म किस देश में हुआ?
2. प्रभु यीशु मसीह के सांसारिक माता-पिता का क्या नाम था?
3. प्रभु यीशु के प्रथम आगमन पर कौन-सी घटना आश्चर्यचकित करने वाली थी?
4. यशायाह भविष्यद्वक्ता ने भविष्यवाणी की कि वह कुंवारी से उत्पन्न होगा और उसका नाम इम्मानुएल होगा जिसका अर्थ .... है।
5. जब यीशु जैतून के पहाड़ पर था तो चेलों ने उससे क्या सवाल पूछा?
6. यीशु ने उन्हें सावधान होने के लिए कहा, कि वे लोगों द्वारा न भरमाए जा सकें।
7. बहुत से लोग आएंगे और इस बात का दावा करेंगे कि वे कौन हैं?
8. यीशु मसीह ने चार भयानक बातों के बारे में कहा, जो संसार में उसके आने से पहले होंगी। वे चीजें .... और .... हैं?
9. यीशु ने कहा उसके विश्वासी विश्वास के कारण दुख उठाएंगे। वे कौन-सी बातें हैं जो लोग एक दूसरे के साथ करेंगे?
10. यीशु ने कहा, कि झूठे भविष्यद्वक्ताओं के पास सामर्थ होगी कि वे किस प्रकार के कार्य करेंगे, यहाँ तक की यीशु के मानने वालों को भी मूर्ख बना दें?
11. यीशु ने कहा कि उसका आना प्रकृति की किस घटना के समान होगा?
12. उसके आनेपर सूरज, चांद, सितारों का क्या होगा?
13. वह कौन-सा साज़ है जिसके द्वारा स्वर्गदूत विश्वासियों को इकट्ठा करेंगे?
14. कहां पर परमेश्वर के लोग इकट्ठा होंगे?
15. वह कौन है जो केवल यीशु के दूसरे आगमन के बारे में जानता है?
16. यदि कोई ऐसा आश्चर्य मेरे साथ हो जो प्रभु यीशु के नाम पर नहीं किया गया है, तो उसके प्रति मेरा कैसा व्यवहार होना चाहिए?

आत्मिक सच्चाइयाँ–पाठ 1
मत्ती 1 और 24

1. जैसे प्रभु यीशु मसीह का पहली बार आना, भविष्यवाणियों का पूरा होना था, वैसे ही वह दुबारा सामर्थ और महिमा में आएगा। बहुत-से झूठे धर्म, झूठे भविष्यद्वक्ता और झूठे लोग आज भी हैं जो अपने आप को परमेश्वर होने का दावा करते हैं, लेकिन यीशु के आने पर और झूठे लोग इस बात का कोई भी संदेह नहीं रह जाएगा कि वह कौन है। क्योंकि बाइबल कहती है हर एक घुटना टिकेगा और हर एक जीभ अंगीकार करेगी कि यीशु ही प्रभु है। यदि कोई हमारे पास आए और कहे कि वह एक नया भविष्यद्वक्ता, मसीह अथवा ईश्वर है तो वह झूठा भविष्यद्वक्ता है।
2. वह अपने लोगों को पृथ्वी के एक छोर से लेकर दूसरे छोर तक इकट्ठा करेगा।

   ❖ यीशु ने आने की प्रतिज्ञा की थी और वह आया। फिर दुबारा उसने आने की प्रतिज्ञा की है, और वह आएगा। उसकी प्रतिज्ञा है कि वह सब विश्वासियों को एकसाथ इकट्ठा करेगा, तो वह करेगा।

   ❖ जब हम अपने जीवन में यीशु को बुलाते हैं और अपना हृदय उसे देते हैं तो उसकी प्रतिज्ञा है कि वह हमें कभी नहीं छोड़ेगा न त्यागेगा। इसका अर्थ यह है कि यदि हम पाप करें, तो वह अपनी क्षमा करने की प्रतिज्ञा को पूरा करेगा और इससे कोई फर्क नहीं कि हमारे साथ क्या होता है और हम क्या करते हैं। लेकिन यदि हमने अपना जीवन यीशु को दिया है तो वह हमें अपने साथ स्वर्ग ले जाएगा और जब वह बादलों पर आएगा तो हम भी उसके साथ अवश्य जाएंगे।
3. परमेश्वर के लोगों को उसके पीछे चलने के लिए सताव को सहना पड़ेगा।

   बाइबल बताती है जैसे-जैसे संसार का अंत नज़दीक आ रहा है, मनुष्य अधिक बुरे, अधिक नफरत करने वाले अधिक हत्या करने वाले और अधिक धोखा देने वाले होंगे। बाइबल बताती है कि परमेश्वर के लोगों के साथ दूसरे लोग दुर्व्यवहार और नफरत करेंगे, हो सकता है यह बात आपके अनुभव में हो कि जब आप प्रभु के पीछे चलने लगें तो लोगों का व्यवहार आपके प्रति बदल गया हो। हो सकता है वह आपके दोस्त या परिवार वाले हों।

   लेकिन बाइबल हमें सिखाती है कि हमें ऐसों लोगों से प्रेम करना चाहिए जो हमसे नफरत करते हैं और चोट पहुंचाते हैं और हम उनसे प्रेम करें और उनके लिए प्रार्थना करें। इसी प्रकार प्रभु यीशु ने भी उनके साथ जिन्होंने उसे धोखा दिया और चोट पहुंचाई उसने उनसे प्रेम किया। बाइबल बताती है उनके लिए विशेष आशीषें रखी गई हैं जो प्रभु यीशु के लिए सताए जाएंगे।

➢ आइए हम प्रार्थना के साथ सभा का समापन करें। आइए, हममें से प्रत्येक इस बात को बांटे कि मसीह को स्वीकार करने के बाद आप के साथ क्या-क्या हुआ। आशा

है कि यह एक सुन्दर कहानी हो, परन्तु न भी हो। क्या कोई है जिसको मसीह को ग्रहण करने के पश्चात् दुःख उठाना पड़ा? आइए हम इस व्यक्ति को सामूहिक रूप से प्रार्थना में स्मरण करें।

- किंतु इससे पहले कि हम प्रार्थना करें, हममें से प्रत्येक जो नोटबुक अथवा सादे पन्ने और कलम लाया है, वह उन्हें बाहर निकाल ले। यदि आपके पास नोटबुक है, तो प्रत्येक शीट के ऊपरी भाग में समूह के प्रत्येक जन का नाम लिख लें। प्रत्येक नाम के नीचे हम उसके प्रार्थना-निवेदन लिखेंगे। आइए हम प्रत्येक जन का प्रार्थना-निवेदन याद रखें। हम उनके भी नामों की भी सूची बना लें जो यीशु को ग्रहण करना चाहते हैं। इन सूचियों को आपस में बांट लें ताकि हम अपने मित्र के संग युद्ध में शामिल हो जाएं कि हम उसके तथा उसके प्रियजनों के लिए प्रार्थना कर सकें।
- जैसे ही हम इस सप्ताह में प्रवेश करेंगे, आइए हम एकमन हों कि हम प्रतिदिन एक दूसरे के लिए प्रार्थना करेंगे। इस नोटबुक या कागज़ के पन्ने को अपने सोने के कमरे में रख दें, और इसके पहले कि आप सोने जाएं अथवा सोकर उठें, इस कागज़ को लेकर एक-दूसरे के लिए प्रार्थना करें।
- आइए, हम परमेश्वर की विश्वासयोग्यता के लिए कि वह अपनी प्रतिज्ञाओं को पूरा करता है, उसको धन्यवाद देते हुए इस प्रार्थना-सभा का समापन करें। आइए, हम उसका धन्यवाद दें—धरती पर उसके प्रथम आगमन के लिए कि वह हमें हमारे पापों से छुटकारा देने आया। आइए हम उससे प्रार्थना करें कि वह इस सप्ताह भर एक दूसरे के लिए प्रार्थना करने हेतु हमें विश्वास योग्य बने रहने में हमारी सहायता करें।

“यीशु का मिस्र की ओर पलायन, और उसका बपतिस्मा”–पाठ 2
मत्ती 2-3

“बपतिस्मा लेने के पश्चात् यीशु तुरन्त पानी से बाहर आया और देखो आकाश खुल गया और उसने परमेश्वर के आत्मा को कबूतर की भांति उतरते और अपने ऊपर आते देखा; और देखो यह आकाशवाणी हुई: “यह मेरा प्रिय पुत्र है जिससे मैं अति प्रसन्न हूं।” मत्ती 3:16 - 17

पुनर्विचार

1. प्रभु यीशु की माता का नाम .... था?
2. यशायाह भविष्यद्वक्ता ने कहा यीशु का नाम इम्मानुएल होगा जिसका अर्थ है “परमेश्वर ....”
3. जैतून के पहाड़ पर जब चेलों ने यीशु से उसके पास आने के विषय में पूछा तो यीशु ने उन्हें सावधान किया कि वे .... के द्वारा न भरमाए जाएँ।
4. यीशु ने कहा कि बहुत से आएंगे और इस बात का दावा करेंगे कि वे .... हैं?
5. यीशु ने उनसे कहा कि संसार भर में बहुत ही भयानक घटनाएं घटित होंगी जैसे यु..... ....अ...........बी............. और भू.................।
6. यीशु ने कहा, कि उसके अनुयायी सताव झेलेंगे, क्यों?
7. यीशु ने कहा, उसका आना प्रकृति की एक घटना के समान होगा। वह क्या है?
8. स्वर्गदूत प्रभु के लोगों को कहां इकट्ठा करेंगे?
9. वह एकमात्र कौन है जो प्रभु यीशु के आगमन के बारे में जानता है?
10. यदि कोई आश्चर्यकर्म करता है और वह यीशु के नाम में नहीं किया गया तो उसके प्रति मेरा कैसा व्यवहार होना चाहिए?
11. यदि कोई मनुष्य मसीह के लिए मेरी हंसी उड़ाए तो मुझे अपने आप को .... समझना चाहिए?
12. जो मेरे साथ दुर्व्यवहार करे, उसके साथ मैं अच्छा करूं; क्योंकि यीशु ने उनके साथ.. ....किया?

यीशु का जन्म बैतलहेम में हुआ और वह तब तक वहां रहा जब तक कि पूर्व के कुछ ज्ञानी उससे आकर वहां न मिले, और वे व्यक्ति तारे का पीछा करते हुए वहां पहुंचे थे। वे यरुशलेम पहुंचे और हेरोदेस राजा से पूछा कि इस्राएल के राजा का जन्म कहां हुआ है, क्योंकि हमने तारा देखा है?

ऐसा सुनकर हेरोदेस और उसके साथ सारा यरुशलेम घबरा गया। तब हेरोदेस ने अपने धार्मिक सलाहकारों की गुप्त सभा बुलाई और पूछा कि धर्मशास्त्र में क्या लिखा है कि राजा का जन्म कहां होना चाहिए उन्होंने कहा बालक का जन्म बैतलहेम में होना चाहिए।

हेरोदेस ने ज्ञानियों से कहा उन्हें कहां जाना चाहिए। लेकिन इससे पहले कि वह वहां से जाते उसने उनसे पूछा कि उन्होंने तारा पहली बार कब देखा, उसने इसलिए ऐसा पूछा कि वह बालक की आयु का पता लगा सके।

तब वे ज्ञानी बैतलहेम की ओर चल पड़े, और तारा उनके आगे-आगे चला और ठीक उसी स्थान पर रुक गया जहां बालक था। उन्होंने वहां जाकर उसे अपनी भेंटें चढ़ाईं, जैसे; सोना, मुर्र और लोबान। इससे पहले कि वे अपने घर वापस लौटते, उन्होंने परमेश्वर की ओर से एक स्वप्न देखा जिसमें बताया गया कि वे यरूशलेम से होकर न जाएं और इसलिए वे दूसरे मार्ग से अपने घर लौट गए। यूसुफ ने भी परमेश्वर की ओर से स्वप्न देखा जिसमें उसे सावधान किया गया कि वह मरियम और बच्चे को लेकर वहां से चला जाए, और वह तब तक मिस्र में रहे, जब तक कि परमेश्वर उन्हें दुबारा न बताए। उसे बताया गया कि हेरोदेस बालक को मरवाने की कोशिश में है। और यह पुराने नियम की भविष्यद्वाणी का पूरा होना था कि "मिस्र से मैंने अपने पुत्र को बुलाया।" हेरोदेस उस बालक को मारना चाहता था, और इसलिए उसने बैतलहेम और उसके आस-पास के नगर के दो या दो से कम साल के बच्चों को मारने की आज्ञा दी। हेरोदेस को मृत्यु के बाद यूसुफ ने एक और स्वप्न देखा, जिसमें कहा गया कि वह इस्राएल को वापस लौट जाए। यूसुफ ने परमेश्वर की आज्ञा का पालन किया और वह नासरत को चला गया। उन दिनों में एक व्यक्ति जिसका नाम यूहन्ना था यहूदिया के जंगल में इस बात का प्रचार करने लगा, "मन फिराओ क्योंकि स्वर्ग का राज्य निकट है।" यूहन्ना स्वयं ऊंट की खाल का वस्त्र पहनता, और उसका खाना टिड्डियाँ और शहद था।

यरूशलेम और सारा यहूदिया और यरदन नदी के आसपास के सब लोग यूहन्ना के पास गए और अपने पापों का अंगीकार करके उससे बपतिस्मा लिया और बहुत से धार्मिक अगुवे फरीसी, शास्त्री, भी उसको सुनने के लिए वहां आते थे। इन लोगों को यूहन्ना ने सांप की सन्तान कहा क्योंकि वे अपने आप को धार्मिक समझते थे जो उन्हें विरासत में मिली थी, और इसलिए उन्हें अपने पापों की क्षमा मांगने की आवश्यकता नहीं थी। यूहन्ना बपतिस्मा देने वाले ने प्रचार किया कि उसके बाद एक आने वाला है, जो आग और पवित्र आत्मा से बपतिस्मा देगा, और लोगों को अलग-अलग करेगा–जो उसपर विश्वास करे उन्हें अपने लिए, और जो नहीं उन्हें हमेशा जलने के लिए आग की भट्ठी में झोंके जाने के लिए। सो यीशु मसीह गलील से यूहन्ना के पास यरदन नदी पर बपतिस्मा लेने के लिए आया। लेकिन यूहन्ना ने इससे बचना चाहा क्योंकि वह अपने आप को इसके अयोग्य समझता था। लेकिन जब यीशु पानी से बाहर आया तो आसमान खुल गया और पवित्र आत्मा कबूतर की नाई उसके ऊपर उतरा और स्वर्ग से एक आवाज सुनाई दी कि यह मेरा प्रिय पुत्र है जिससे मैं अत्यन्त प्रसन्न हूं।

मौखिक प्रश्न

1. कौन लोग यीशु से मिलने आए और उन्होंने उसे क्या-क्या भेंटे चढ़ाईं।
2. किस नगर में वे पहले ठहरे और उन्होंने किस से बातें कीं?
3. परमेश्वर ने यूसुफ को मिस्र जाने के लिए क्यों सावधान किया?
4. हेरोदेस की मृत्यु के बाद यूसुफ कहां गया?
5. यूहन्ना बपतिस्मा देने वाले ने कहां प्रचार किया?
6. वह कैसा दिखाई देता था?
7. लोगों के लिए उसका संदेश क्या था?,
8. जिन्होंने अपने पापों से अंगीकार किया उन लोगों का क्या हुआ?

9. फरीसियों और सदूकियों को यूहन्ना ने क्यों 'सांप के बच्चो' कहा?
10. यूहन्ना ने प्रचार किया जो उसके बाद एक आने वाला है जो उससे बढ़कर है, और कहा कि वह लोगों को अलग करेगा। कैसे?
11. गलील से यहून्ना से बपतिस्मा लेने कौन आया?
12. यूहन्ना ने अपने आप को यीशु को बपतिस्मा देने के अयोग्य समझा। तब यीशु ने उसे क्या कारण दिया कि वह उसे बपतिस्मा दे?
13. जब यीशु पानी से बाहर आया तो क्या हुआ?

आत्मिक सच्चाइयां–पाठ 2
मत्ती 2-3

1. जब हम पूर्णतः परमेश्वर की आज्ञा का पालन करते हैं, तभी हम परमेश्वर की सबसे अच्छी आशीष का अनुभव कर सकते हैं। परमेश्वर ने यूसुफ को बहुत सी चीज़े करने को कहा। यदि वे न कही जातीं तो वह कभी न करता। उसने परमेश्वर की आज्ञा को मानकर मरियम से विवाह किया, जबकि वह गर्भवती थी। उसने परमेश्वर पर विश्वास किया, जबकि उसके लिए यह असंभव था कि वह यह समझ पाता कि मरियम कैसे गर्भवती हुई। फिर परमेश्वर ने उसे मिस्र जाने को कहा–एक ऐसा देश जिसकी भाषा, जिसका रहन-सहन बिलकुल अलग था। यहां तक कि वहां के देवी-देवता भी अलग थे। ऐसा करना एक मनुष्य के लिए बहुत ही कठिन था जो अपनी पत्नी और बच्चे के साथ हो। फिर भी उसने परमेश्वर की आज्ञा मानी और इसी कारण बालक-यीशु का जीवन बच गया।

   जिस तरीके से परमेश्वर के साथ यूसफ के जीवन के लिए एक विशेष योजना थी, वैसे ही आज हममे से हर एक के लिए उसकी एक विशेष योजना है। बाइबल बताती है कि जब हम मां के गर्भ में होते हैं तभी से वह हमें जानता है और उसके पास हमारे लिए एक विशेष योजना है। यदि हम परमेश्वर की बड़ी आशीष का अनुभव अपने जीवन में चाहते हैं तो उसके निर्देशों को ध्यान से पूरा करें। परमेश्वर की इच्छा हमारे लिए यह है कि वह हमारे हृदय में रहे। जब हम प्रार्थना करते और उसका वचन पढ़ते हैं तो वह हमसे बातें करता है। हमें विशेष स्थितियों में विशेष निर्णयों के लेने में उससे मदद लेनी चाहिए। जिस तरह यूसुफ ने कठिन परिस्थिति में चुना कि वह परमेश्वर की आज्ञा का पालन करे, जबकि उसके लिए कठिन था। वैसे ही हम भी उसकी आज्ञा का पालन करें।

* क्या परमेश्वर आपसे किसी विशेष बात के लिए बात कर रहा है। क्या वह आप से कह रहा है कि किसी चीज़ को अपने जीवन में से बदल डालें। जबकि ऐसा करना आप के लिए बहुत कठिन प्रतीत होता है। यदि ऐसी बात है तो एक दूसरे के साथ उसे बांटे और प्रार्थना करें। एक दूसरे की आवश्यकताओं को लें ताकि पूरे सप्ताह भर एक दूसरे के लिए प्रार्थना कर सकें और उसकी योजना को अपने जीवन में पूरा कर सकें।

2. इससे पहले कि पुनरुत्थान के बाद वह स्वर्ग जाता, उसने हम सब को आज्ञा दी है। आइए, इससे पहले कि वह स्वर्ग पर चला जाए, हम उसके अंतिम वचनों पर ध्यान दें, "इसलिए जाओ और सब जातियों के लोगों को चेले बनाओ तथा उन्हें पिता, पुत्र तथा पवित्र आत्मा के नाम से बपतिस्मा दो; और जो-जो आज्ञाएँ मैंने तुम्हें दी हैं उनका पालन करना सिखाओ, और देखा मैं युग के अंत तक सदैव तुम्हारे साथ हूं।" हम बाद में इस अध्ययन में सीखेंगे कि कैसे हम जाकर दूसरे को प्रभु यीशु के बारे में बता सकते हैं। लेकिन इस आज्ञा को भी हमें पूरा करना है जो उसके वचन में है कि हम पिता, पुत्र तथा पवित्र आत्मा के नाम में बपतिस्मा लें।

   ➢ बपतिस्मा लेना, प्रभु यीशु मसीह के उदाहरण को पूरा करना है। यह एक ऐसी बात है कि आप एक पवित्र जन के साथ पानी में जाते हैं और थोड़ी देर बार पानी से बाहर आ जाते हैं।

- ➢ प्रभु यीशु का बपतिस्मा, जब वह बालक था, तब नहीं हुआ लेकिन लूका की पत्री में हम पाते हैं कि जब वह बालक था तब उसे मन्दिर ले जाया गया जहां महायाजक ने उसे और उसके माता-पिता को आशीष दी। लेकिन यह बपतिस्मा नहीं था।
- ➢ उसका बपतिस्मा उसका अपना निर्णय था जो उसने अपने लिए लिया। यह निर्णय उसके माता-पिता का नहीं था। प्रभु यीशु मसीह के उदाहरण को हम सबको पूरा करना चाहिए कि हम भी बपतिस्मा लें।
- ➢ यह धार्मिक परम्परा नहीं है जिसको पूरा करने पर हम एक समुदाय से जुड़ जाते हैं; और न ही यह एक आत्मिक अनुभव है कि इसके द्वारा प्राण की शुद्धि होती है। लेकिन यह तो इस बात का चिह्न है कि यीशु के पीछे चलने के लिए हम बँधे हैं और समाज के सामने एक गवाही है। बाइबल बताती है कि बपतिस्मा प्रभु यीशु के दफनाए जाने और पुनरुत्थान की तस्वीर है, और जब हम बपतिस्मा लेते हैं तो हम भी यीशु के साथ दफनाए जाने और जी उठने के कार्य में शामिल होते हैं।

* बपतिस्मा के बारे में आप क्या सोचते हैं? क्या बपतिस्मा लेना और यीशु के उदाहरण को पूरा करना कठिन बात है? क्या आप को बपतिस्मा लेने की आवश्यकता है? क्या आप बपतिस्मा लेना चाहेंगे?

यीशु की परीक्षा–पाठ 3
मत्ती 4

"मनुष्य केवल रोटी ही से नहीं, परन्तु हर एक उस वचन से जो परमेश्वर के मुख से निकलता है, जीवित रहेगा।" (मत्ती 4 : 4)

पुनर्विचार

1. यशायाह नबी ने कहा कि उसका नाम इम्मानुएल होगा जिसका अर्थ "परमेश्वर.. ....है"
2. यीशु ने कहा, जब वह पृथ्वी पर वापस आएगा तब वह.............के समान एक छोर से दूसरे छोर तक नज़र आएगा।
3. यीशु ने कहा, जब वह वापस आएगा तो प्रत्येक उसे ....पर महिमा और सामर्थ के साथ आता हुआ देखेगा।
4. इससे पहले की यीशु का आना हो, बहुत से झूठे मसीह उठ खड़े होंगे और अद्‌भुत कार्य दिखाएंगे। इसलिए हम उनसे सावधान रहें और उन झूठे भविष्यद्वक्ताओं से . ...न खाएं।
5. यीशु ने कहा कि हम अपने आपको................समझें जब प्रभु यीशु के कारण लोग हमें सताएं। क्योंकि हम अपने प्रतिफल को नहीं खोएंगे। उसने कहा हमारा व्यवहार उन लोगों के लिए..................हो।
6. यीशु ने कहा केवल एक ही है जो उसके दुबारा आने के बारे में जानता है। वह . ...है।
7. जंगल में एक मनुष्य जिसका नाम................था और जिसने मन फिराव का प्रचार किया, वह ऊँट के चमड़े का वस्त्र पहनता और टिड्डियां खाता था।
8. बहुत से लोग यूहन्ना के पास बपतिस्मा लेने आए और उन्होंने अपने ....से अंगीकार किया।
9. यूहन्ना ने कहा जो उसके बाद आने वाला है वह लोगों को अलग–अलग करेगा और जो उसका इनकार करेंगे वे न बुझने वाली ....में नष्ट किए जाएंगे।
10. यीशु ने आकर यूहन्ना से कहा कि तू मुझे.................दे।
11. यीशु के बपतिस्मे पर......................कबूतर की नाई उसके ऊपर उतरा और स्वर्ग से एक आवाज़ आई।
12. स्वर्ग जाने से पहले, उसने अपने चेलों से कहा कि वह प्रत्येक को जो उसको ग्रहण करें, उसे वे ....दें।
13. हमें ....लेना चाहिए, इसलिए नहीं कि हमारे ....हुए, लेकिन इसलिए कि यह इस बात का चिह्न है कि हम................के साथ सहभागी हुए।
14. बपतिस्मा प्रभु यीशु मसीह की ....और ....को प्रदर्शित करता है।

बपतिस्मे के बाद उसे पवित्र आत्मा जंगल में ले गया। ताकि शैतान द्वारा उसकी परीक्षा

हो। यीशु वहां चालीस दिन और रात निराहार रहा। और चालीस दिन के बाद जब वह भूखा था, तो शैतान उसके पास आया और यह कहकर उसकी परीक्षा करने लगा, "यदि तू परमेश्वर का पुत्र है तो इन पत्थरों को आज्ञा दे कि वे रोटियां बन जाएं।"

यीशु ने पुराने नियम के अनुसार उसे जवाब दिया, "मनुष्य केवल रोटी से जीवित न रहेगा, परन्तु प्रत्येक उस शब्द से, जो परमेश्वर के मुख से निकलता है, जीवित रहेगा।" और फिर वह मंदिर के शिखर पर उसे ले गया और उससे कहा, "यदि तू परमेश्वर का पुत्र है, तो अपने आप को नीचे गिरा दे। क्योंकि ऐसा लिखा है कि वह अपने स्वर्गदूतों को आज्ञा देगा, और वे तुझे हाथों-हाथ उठा लेंगे, ताकि तेरे पांव में पत्थर से चोट न लगे।" और फिर यीशु ने वचन के अनुसार उसे जवाब दिया, "तू अपने प्रभु परमेश्वर की परीक्षा न कर।" और तब वह उसे ऊँचे पर्वत पर ले गया। वहां से उन दोनों ने संसार के राज्य और वैभव को देखा। तब शैतान ने यीशु से कहा, "यह सब मैं तुझे दे दूंगा, यदि तू गिरकर मुझे दंडवत करे, और मेरी उपासना करे।" तब यीशु ने उत्तर दिया, "शैतान दूर हट। क्योंकि ऐसा लिखा है कि 'तू केवल अपने परमेश्वर की आराधना और सेवा कर।" और तब शैतान यीशु को छोड़कर वहां से चला गया, और स्वर्गदूत आकर उसकी सेवा-टहल करने लगे।

मौखिक प्रश्न

1. पवित्र आत्मा यीशु को परीक्षा के लिए कहां ले गया?
2. चालीस दिन तक .... ने क्या किया?
3. पहली दो परीक्षाओं में शैतान ने यीशु को किस बात को प्रमाणित करने की चुनौती दी कि वह कौन है?
4. पहली परीक्षा में शैतान ने पत्थरों को किस चीज़ में बदलने के लिए कहा?
5. पहली परीक्षा में यीशु ने कैसे विजय पाई?
6. दूसरी परीक्षा में जब शैतान यीशु को मंदिर के शिखर पर ले गया तो उसने क्या चाहा कि यीशु करे?
7. यीशु ने दूसरी परीक्षा में कैसे सफलता प्राप्त की?
8. तीसरी परीक्षा में शैतान ने संसार के सारे राज्य यीशु को देने की प्रतिज्ञा की, तो शैतान यीशु से क्या चाहता था कि वह करे?
9. तीसरी परीक्षा में यीशु कैस सफल हुए?
10. जब यीशु ने शैतान को वहां से चले जाने को कहा तो कौन आकर यीशु की सेवा करने लगे?

आत्मिक सच्चाइयां –पाठ 3
मत्ती-4

1. यीशु को अपना जीवन देने के बाद भी हमारे जीवन में परीक्षा आ सकती है: शायद यीशु की तरह हमें परीक्षा के लिए जंगल में जाना न पड़े। बाइबल हमें बताती है कि न केवल हमारी परीक्षा शैतान के द्वारा होती है, लेकिन हमारी अपनी इच्छाओं के द्वारा भी (याकूब 1 : 14)। हर एक के जीवन में यह लड़ाई चलती रहती है कि क्या हम अच्छा करें या बुरा। "इसलिए जो मैं करता हूं उसको समझ नहीं पाता: क्योंकि जो मैं चाहता हूं वह नहीं किया करता, परन्तु जिससे मुझे घृणा है, वही करता हूं, क्योंकि जिस भलाई की मैं इच्छा करता हूं, वह तो नहीं कर पाता, परन्तु, जिस बुराई की इच्छा नहीं करता, वही करता रहता हूं" (रोमियो 7 : 15 तथा 19)।
2. आप परीक्षा का अनुभव अपने जीवन में करेंगे क्योंकि आपके अंदर दो स्वभाव हैं: (क) शरीर की आत्मा (ख) परमेश्वर का आत्मा। गलातियों 5 : 16-17 "परन्तु मैं कहता हूँ कि पवित्र आत्मा के अनुसार चलो तो तुम शारीरिक इच्छाओं को किसी रीति से पूर्ण न करोगे। क्योंकि शरीर तो पवित्र आत्मा के विरोध में और पवित्र आत्मा शरीर के विरोध में लालसा करता है। ये तो एक दूसरे के विरोधी हैं, कि जो तुम करना चाहते हो उसे न कर सको।"
3. आप भी उसी तरीके से विजयी हो सकते हैं जैसे यीशु ने परमेश्वर के वचन की सामर्थ के द्वारा विजय प्राप्त की : इब्रानियों 4 : 12 कहता है,–"क्योंकि परमेश्वर का वचन जीवित, प्रबल और हर एक भी दोधारी तलवार से तेज़ है। वह प्राण और आत्मा, जोड़ों और गूदे, दोनों को आर-पार बेधता और मन के विचारों तथा भावनाओं को परखता है।" इस पद को अनेक बार पढ़ें। सदस्यों से पूछें कि इस पद का क्या अर्थ है?

   परमेश्वर का वचन केवल एक सलाह की पुस्तक नहीं है लेकिन यह जीवित वचन है जो परमेश्वर हमसे हमारे हृदय में बोलता है। यह हमारी आत्मा की गहराई में जिसे केवल परमेश्वर जानता है वहां पहुँचता है।

   केवल एक मुख्य बात जो एक मसीह को करनी चाहिए कि वह प्रतिदिन पिता के साथ अपना समय बिताए। जिससे शैतान कुछ न कर पाए। क्योंकि शैतान जानता है कि परमेश्वर हमारे सामर्थ का स्रोत है। वह हमसे कहेगा कि हम बहुत व्यस्त है। हम पहले ही वचन को जानते हैं। हम तो बहुत सुस्त हैं–बहुत से बहाने आप बना सकते हैं और झूठ बोल सकते हैं; लेकिन अच्छा होगा कि हम हर रोज़ प्राथमिकता के आधार पर परमेश्वर के वचन में समय बितायें।

एक सरल योजना जिसे आप पूरा कर सकते हैं :

1. अपना समय परमेश्वर के साथ अकेले बिताना शुरू करें। उसे बताएँ कि कितना अधिक प्रेम आप उससे करते हैं और उसकी प्रशंसा करें, उन अद्भुत बातों के लिए जो उसने आपके लिए की हैं।

2. उन चीज़ों के लिए धन्यवाद दें जो उसने आपके जीवन में की हैं और उन प्रार्थनाओं के लिए जिनका जवाब परमेश्वर ने आप को दिया है।

* यह एक उत्तम विचार होगा कि आप अपनी प्रार्थना के नोट-बुक में "परमेश्वर को धन्यवाद" नामक एक हिस्सा बनाएं, और उन बातों को लिखते जाएं जिन्हें परमेश्वर आपके जीवन में करता जाता है; हमेशा तारीख भी डालते रहें। इस प्रकार से आप एक लेखा रख सकते हैं कि कैसे परमेश्वर आपके जीवन में काम कर रहा है।

3. दूसरों के लिए प्रार्थना करें–दोस्तों या मित्रों, परिवारों या वे जो आपके साथ हैं–विशेषकर उनके लिए जो अभी तक प्रभु को नहीं जानते। यदि ज़्यादा लोगों के लिए प्रार्थना करनी है तो सप्ताह के प्रत्येक दिन के अनुसार उन लोगों के लिए प्रार्थना करें। आपके मित्र और परिवार प्रत्येक दिन उनके लिए प्रार्थना कर सकते हैं उदाहरण के लिए:

<u>सोमवार</u>	<u>मंगलवार</u>
राधा चाची	दादी जी
श्याम चाचा	माता जी
महेन्द्र	पिता जी
अजय	पास्टर आनन्द

* अच्छा होगा इसी वक्त हम रुक जाएं और इसे एकसाथ मिलकर करें।

4. परमेश्वर के वचन को पढ़ें, और उसपर मनन करें। बाइबल बताती है कि न केवल हम वचन को पढ़ें, लेकिन उसपर मनन भी करें जिसका अर्थ है कि हमें ऐसे करना चाहिए;

- ♦ इसे धीरे-धीरे पढ़ें।
- ♦ इसे कई बार पढें और शब्दों के अर्थ को गहराई से समझें, हो सकता है उस वचन में से सच्चाई को जानने के लिए हमें इसे कई बार पढ़ना पड़े।
- ♦ देखें कि उस सच्चाई को अपने जीवन में कैसे लागू कर सकते हैं। उदाहरण के लिए"अपने माता-पिता का आदर करना चाहिए।" व्यक्तिगत रूप से कहें, "विजय, तुमको अपने माता व पिता का आदर अवश्य करना चाहिए।"
- ♦ इस आयत को पढ़कर परमेश्वर का धन्यवा दें उन आशीषों और जरूरतों के लिए जो उसने अब तक पूरी की है। उदाहरण के लिए "हे पिता परमेश्वर, मेरे माता-पिता के लिए धन्यवाद हो। परमेश्वर तेरा धन्यवाद हो कि तू मेरा स्वर्गीय पिता है, जो मेरी प्रत्येक आवश्यकता को पूरा करता है, और जो मेरा सांसारिक पिता नहीं कर सकता वह तू कर सकता हैं।"

बाइबल में बहुत-सी अत्मिक सच्चाइयां हैं जो परमेश्वर हमारे जीवन में इसी समय बताना चाहता है। परमेश्वर के वचन पर मनन करने का एक उदाहरण प्रस्तुत किया जा रहा है।

* आइए मनन करने की विधि को सीखें मत्ती 5 अध्याय पढ़ें। और हर कोई 3 या 5 आयतें पढ़ें। हर कोई अपनी आयतों के अर्थ को समझने को कोशिश करे। परमेश्वर के आत्मा को कार्य करने दें कि वह आपसे बातें करें। एक उदाहरण जिसके द्वारा परमेश्वर ने मुझसे बातचीत की।

आयत 3 : "धन्य है वे जो मन के दीन हैं क्योंकि स्वर्ग का राज्य ऐसों ही का है।" (लेखक के

अपने आत्मिक सत्य का उदाहरण – आयत 3)। यदि मैं आत्मा में दीन हूं तो मैं धन्य हूं, मुझे परमेश्वर का राज्य प्राप्त होगा। प्रभु मेरी सहायता कर कि में अपनी आत्मा में दीन बनूं, मैं अपनी आत्मा में घमंडी नहीं होना चाहता। धन्यवाद प्रभु जो कार्य आप मेरे जीवन में कर रहे हैं। धन्यवाद प्रभु, कि मैं स्वर्ग के राज्य की प्राप्ति करूंगा वास्तव में मैं एक आशीष पाया हुआ व्यक्ति हूं।

आयत 4 : "धन्य हैं वे जो शोकित हैं क्योंकि वे शांति पायेंगे "(लेखक के अपने आत्मिक सत्य का उदाहरण – आयत 4): "मेरे लिए यह कल्पना करना कठिन है कि कैसे शोकित मनुष्य धन्य हैं। लेकिन धन्यवाद कि प्रभु यीशु मसीह का अनुयायी होने के नाते मैं जानता हूं कि मैं आशीष पाया हुआ व्यक्ति हूं। उनके लिए हमेशा आशा है, जिनका विश्वास प्रभु यीशु में है, वह आज्ञा और आराम दोनों देता है। धन्यवाद, आपने मेरे दुख में मुझे शांति दी उस समय जब मेरी मां की मृत्यु हो गई। धन्यवाद उन लोगों का जिन्होंने मेरे दुख परेशानी में मेरा साथ दिया, उस शांति के लिए आपका धन्यवाद जो पवित्र आत्मा के द्वारा मेरे प्राण को दिया। धन्यवाद प्रभु विश्वासी होने के नाते, जब दुख है तब भी मैं धन्य हूं। मैं आप से प्रेम करता हूं, क्योंकि आपको मेरी चिन्ता है।

कोई एक विशेष सिद्धांत, विधि या शब्द नहीं है। लेकिन महत्वपूर्ण बात तो परमेश्वर के वचनों पर मनन करना है। वचन को आत्मा में बसने दें, और जब वह आपके हृदय में जाएगा तो परमेश्वर आपके हृदय की गहराइयों से बात करेगा। हम निरंतर ऐसा होने दें तभी हम प्रभु के समान बनने पायेंगे। न केवल हम परीक्षाओं का सामना करने पाएंगे लेकिन और परमेश्वर का प्रेम और उसके कार्य हमारे जीवन में प्रकट होंगे। विजयी मसीह जीवन के लिए परमेश्वर को निजी रूप से जानना ज़रूरी है।

* अच्छा होगा कि आप अपनी कॉपी का आख़िरी पृष्ठ खाली रखें, जिस पर आप मनन किए हुए विचारों को लिख सकते हैं। तिथि अनुसार उन विचारों को जो परमेश्वर प्रतिदिन, आपको देता है वहां पर लिखें और, मनन करें, ऐसा करके आप अपना निजी और कीमती समय परमेश्वर के साथ बिता सकते हैं।
* अपने समूह में प्रतिज्ञा करें कि सप्ताह भर प्रतिदिन हर कोई अपना समय प्रभु के साथ बिताएगा। यदि संभव है तो प्रतिदिन का वह विचार जिसके बारे में परमेश्वर ने आपसे बातचीत की है उसे लिखें। यदि आप उसे नहीं पढ़ सकते हैं तो आप किसी की मदद लें ताकि वे आप के लिए वचन पढ़ दें। ऐसा करके प्रतिदिन परमेश्वर का वचन आपके हृदय में बढ़ता जाएगा।
* आइए, इस अध्याय को पढ़ें जो हमने किया है। अध्यायों को ख़त्म करने में जल्दबाज़ी न करें। आपस में उन अनुभवों को एक दूसरे के साथ बाटें जो परमेश्वर ने आपको दिए हैं।

मनुष्यों के पकड़ने वाले मछुओं के अन्दर से भय का निकाला जाना – पाठ 4
मत्ती 4 - 8

"उसने उनसे कहा, "हे अल्प विश्वासियों, तुम इतने भयभीत क्यों हो", तब उठकर उसने आंधी और समुद्र को डांटा, और पूर्णत: शांति छा गई।" मत्ती 8 : 26

* *एक अगुवा होने के नाते अपने समूह के सदस्यों से यह पूछना न भूलें कि क्या प्रतिदिन उन्होंने बाइबल अध्ययन और प्रार्थना किया है या नहीं। हर एक को अपने विचार प्रकट करने का अवसर दें और उन्हें उत्साहित करें।*

* *अच्छा होगा कि इस बाइबल अध्ययन के आरम्भ में ही अपनी प्रार्थना विनती को एक दूसरे के साथ बांटे और प्रत्येक के लिए प्रार्थना करें।*

पुनर्विचार

1. यशायाह नबी के द्वारा कहा गया कि यीशु का नाम इम्मानुएल होगा जिसका अर्थ "परमेश्वर .... है।"
2. जैतून पर्वत पर यीशु ने चेलों को अपने द्वितीय आगमन के बारे में शिक्षा दी। उन्हें सावधान किया कि वे झूठे नबियों से ....रहें और उन लोगों से जो अपने आप को मसीह कहेंगे और बड़े-बड़े आश्चर्यकर्म दिखाएंगे।
3. यीशु ने कहा जब वह दुबारा आएगा तो हर कोई उसे देखेगा। वह ....पर सामर्थ और महिमा के साथ आएगा।
4. यीशु ने कहा केवल एक है जो उसके आने के विषय में जानता है, वह स्वयं ....है।
5. यूहन्ना ने उन सभों को जंगल में बपतिस्मा दिया जिन्होंने अपने .... का अंगीकार किया।
6. इससे पहले कि प्रभु यीशु मसीह स्वर्ग पर उठाए जाते, उसने अपने चेलों को आज्ञा दी कि वह उसके ....हो।
7. यूहन्ना ने कहा जो उसके साथ आनेवाला है। वह लोगों को अलग-अलग करेगा और जो उसको ग्रहण नहीं करते, वे न बुझने वाली ....में डाले जायेंगे।
8. यीशु के साथ पहली दो परीक्षाओं में शैतान ने कोशिश की कि प्रभु उन दो बातों को करे जिससे यह प्रमाणित हो कि वह ....है।
9. तीसरी परीक्षा में शैतान ने यीशु से कहा कि वह उसे ....करे।
10. तीनों बार यीशु ने शैतान को .... के .... उत्तर दिया।
11. यदि हम परमेश्वर को अधिकाई से जानना चाहते हैं तो ज़रूरी है कि हम प्रतिदिन उसके साथ ....बिताएं।
12. वे कौन से दो स्वभाव मनुष्य के अन्दर लड़ते रहते हैं..................का आत्मा और .....का आत्मा।
13. यदि हम परीक्षाओं के ऊपर विजयी होना चाहते हैं तो अच्छा होगा कि प्रतिदिन ....के साथ अपना समय बिताएं।
14. और यदि यीशु के समान बनना है तो ....के साथ अकेले समय बिताना पड़ेगा।

जंगल में वापस आने के बाद यीशु ने अपनी सेवा को आरम्भ किया, वह शहर के बाहर गलील

के क्षेत्र में रहने लगा। यहां उसने उसी संदेश का प्रचार किया जो यूहन्ना ने किया था: "मन फिराओ क्योंकि स्वर्ग का राज्य निकट है।" पहले दो शिष्य जिन्हें यीशु ने बुलाया, वे शमौन पतरस और अन्द्रियास थे, और वे झील में जाल फेंक कर मछलियां पकड़ने की कोशिश कर रहे थे। यीशु ने उनसे कहा मेरे पीछे आओ मैं तुम्हें मनुष्यों का पकड़ने वाला बनाऊँगा।

और वह फिर उस मनुष्य के पास पहुंचा जिसके दो बेटे जालों को ठीक कर रहे थे। उन्हें भी उसने अपनी पीछे चलने के लिए कहा। वे जब्दी के पुत्र याकूब और यूहन्ना थे। यीशु यहूदी आराधनालय में परमेश्वर के राज्य का सुसमाचार-प्रचार करता और हर प्रकार की बीमारी को चंगा करता था। उसका नाम इतना अधिक फैल गया कि सीरिया देश के लोग भी आकर उससे चंगाई पाते थे।

जब यीशु ने देखा कि लोग उसके पीछे चले आ रहे हैं, तब वह चेलों को एक पहाड़ पर ले गया और वहां उसने उन्हें परमेश्वर के राज्य के बारे में बहुत बातें बताईं। लोग यीशु की शिक्षा को सुनते, और उसके अधिकार को देखकर हैरान हो जाते थे। क्योंकि उन्होंने अपने आराधनालयों में ऐसा नहीं सुना था। जब वह पहाड़ से नीचे उतरा, तब भीड़ पहले से ही उसका इन्तजार कर रही थी कि वह उसके पीछे हो ले। उनमें से एक कोढ़ी भी था जो अपने कोढ़ से शुद्ध होना चाहता था, जिसे यीशु ने चंगा किया। एक रोमी सिपाही ने अपने दास के लिए यीशु से विनती की और यीशु ने उसे भी चंगा कर दिया। यीशु पतरस के घर भी गया। उसकी सास जो बहुत बीमार थी, यीशु ने उसका हाथ पकड़ा और उसी घड़ी उसका बुखार ठीक हो गया। वह उठी और घर में सबकी सेवा करने लगी। यीशु वहां शाम तक रहा और बहुत से लोगों को चंगा किया, और दुष्टात्माओं को निकालता रहा।

लेकिन जब उसने देखा कि बहुत बड़ी भीड़ उनके पीछे चली आती है तो उसने अपने चेलों को आज्ञा दी, कि वे वहां से झील के दूसरी ओर चलें। जब वे नाव पर बैठे तो काफी रात हो चुकी थी, और जब वे झील के बीच में पहुंचे तो अचानक एक बड़े तूफान ने आकर नाव को लहरों से घेर लिया। चेले बहुत डर गए परन्तु यीशु सो रहा था। वे इतना डर गए थे कि उन्होंने यीशु को उठाया और बोले, 'प्रभु, हमें बचा हम नाश हुए जा रहे हैं।' तब उसने कहा, "हे अल्पविश्वासियों तुम इतने भयभीत क्यों हो।" तब उसने आंधी और समुद्र को डांटा और वे शांत हो गए और चेले विस्मित होकर कहने लगे ये कैसा मनुष्य है कि आंधी और समुद्र भी इसकी बात मानते हैं।

मौखिक प्रश्न

1. यीशु ने लोगों में किस संदेश का प्रचार किया?
2. प्रभु यीशु के पहले दो चेलों के नाम क्या थे?
3. ये दो चेले क्या काम करते थे?
4. लोग यीशु से मिलने के लिए क्यों व्याकुल थे?
5. जब पर्वत पर उसने उन्हें शिक्षा दी तो वे किस बात से प्रभावित हुए?
6. जब यीशु पर्वत से नीचे उतरा तो उसने एक मनुष्य को एक भयंकर समस्या से छुटकारा दिया। उस मनुष्य की, क्या समस्या थी?
7. उसने रोमी सिपाही के दास को भी चंगा किया, उसे क्या बीमारी थी?
8. उसने पतरस की एक रिश्तेदार को चंगा किया, वह कौन सी रिश्तेदार थी?
9. प्रभु यीशु झील की दूसरी ओर क्यों जाना चाहते थे?
10. यीशु के चेले क्यों भयभीत थे?
11. यीशु ने उन्हें क्यों डाँटा?
12. यीशु नाव पर क्या कर रहा था?
13. जब यीशु ने आंधी और समुद्र को शांत किया तो चेलों की, यीशु के प्रति, क्या प्रतिक्रिया थी?

आत्मिक सच्चाइयां–पाठ 4
मत्ती 4-8

1. *<u>प्रभु यीशु ने हमें "मनुष्यों का मछुआ होने के लिए बुलाया है।</u>* जो स्वतंत्रता हमें यीशु में प्राप्त हुई है, वह हमसे चाहता है कि हर एक देश, नगर पड़ोस और संसार में हम बांटे। यह उसके वह आख़री शब्द थे जो उसने स्वर्ग पर उठाए जाने से पहले कहा। इस अध्ययन के अंत में हम यह सीखेंगे कि हम अपने विश्वास को कैसे साफ-साफ बता सकते हैं। क्योंकि कई बार हममें से बहुत अपने विश्वास का लोगों को बताने से डरते हैं। हम सोचने लगते हैं कि, "मैं कौन हूं? मैं छोटा हूं। मैं किसी को कैसे यीशु के प्रति विश्वास दिला सकता हूं, और यदि मैं करूँ भी, तो मैं तो संसार के छोटे से हिस्से में ही कर पाऊँगा? प्रभु यीशु मसीह कैसे चाहता है कि हम पूरे संसार को उसके लिए जीत लें?"

   बाइबल हमें सिखाती है, कि यदि हम बहुत ही अच्छे हैं, तब भी हम किसी मनुष्य को प्रभु में नही ला सकते। क्योंकि जब हम अपना हृदय यीशु को देते हैं, तो उस मनुष्य के कारण नहीं जिसने हमें प्रभु के बारे में बताया है, लेकिन यह तो परमेश्वर के आत्मा के द्वारा हमें प्रेरित किया गया कि हम मन फिराएँ। यूहन्ना 16 : 8 में लिखा है "और जब वह आएगा तो संसार को पाप और धार्मिकता और न्याय के विषय में निरुत्तर करेगा।"

   मनुष्यों का पकड़ने वाला होने के नाते हमें अपने जीवन के जाल को पकड़कर रखना है और जो मछलियां (मनुष्य) पवित्र आत्मा हमें देता है अन्हें प्रभु के पास लाएं। हमें अपने विश्वास को लोगों तक पहुंचाने के लिए ज़रूरी है कि हम इस योग्य हों कि जो कार्य प्रभु ने हमारे जीवन में किए हैं, लोगों को बता सकें। इसे "गवाही देना" कहा जा सकता है। 'गवाह' शब्द न्यायालयों में इस्तेमाल होता है जिसका अर्थ है सत्य को जानना, और उसे बताना। हो सकता है लोग आप को पागल कहें, आपकी गवाही पर विश्वास न करें, लेकिन वे कभी भी इस बात से इन्कार नहीं कर सकते जो अनुभव आपको हुआ है, वह तो सत्य ही है। आइए यहां एक अभ्यास करें।

- प्रत्येक व्यक्ति यीशु में आने से पहले के अपने जीवन के बारे में सोचें।
- सोचें कि प्रभु यीशु मसीह उन तक कैसे पहुंचाया गया।
- उस पल के बारे में सोचें, जब पवित्र आत्मा आपके हृदय में आया, और आप जान गए कि यीशु परमेश्वर है, और आपको अपने जीवन में उसकी आवश्यकता है।
- उस निर्णय के बारे में सोचें जब आपने अपना जीवन मसीह को सौंपा था।
- सोचें कि मसीह के आने के बाद आपके जीवन में क्या बदलाव आया।
- हर कोई अपनी गवाही को यहां एक दूसरे को सुनाए। ध्यान रहे कि यह गवाही 3 मिनट से ऊपर न हो।

* अब हम एक दूसरे के लिए प्रार्थना कर सकते हैं। अपनी आवश्यकताओं के लिए और और परिवार के उन सदस्यों के लिए जिन्होंने अभी तक यीशु को ग्रहण नहीं किया है। उनके नाम अपनी कॉपी में लिख लें और निरंतर उनके लिए प्रार्थना करते रहें।

2. यीशु ने अपने चेलों को इसलिए नहीं डांटा कि उन्होंने उसे नींद से जगा दिया था, परन्तु इसलिए कि वे बहुत डर गए थे। वे इन तूफानों के पहले ही अभ्यस्त थे। लेंकिन यह तूफान बहुत खतरनाक था। परन्तु वे परमेश्वर की सामर्थ के अभ्यस्त नहीं थे। वे अभी भी इस बात को नहीं जान पाए थे कि यीशु उनके जीवन में किसी भी बड़े तूफान से बढ़कर है, और वही यीशु नाव में उनके साथ था।

मेरे डेढ़ साल की एक छोटी बेटी है। जो अपने चारों ओर के संसार से परिचित हो रही है। वह घर में दौड़ती और कभी आलमारी खोलती है, कभी बर्तन, तो कभी कपड़े–जो कुछ भी उसे मिलता है, उसके साथ खेलना चाहती है। एक दिन हम अपने दोस्त के घर खाना खा रहे थे और वह फर्श पर खेल रही थी। अचानक एक बड़ा काला कुत्ता उस कमरे में आ पहुंचा, मेरी छोटी बेटी अपनी छोटी-छोटी टांगों से दौड़ते और मां-मां चिल्लाते हुए हमारी ओर दौड़ी, मैंने उसे अपनी बांहों में उठा लिया। धीरे-धीरे उसने अपने शरीर को आराम से मेरे हाथों में छोड़ दिया। आप जानते हैं ऐसा क्यों हुआ, क्योंकि मैं उससे प्रेम करता हूं और वह मुझ पर विश्वास करती है कि मैं उसकी देखभाल करता हूं। थोड़े ही समय बाद मेरी बेटी पूरी तरह आराम में हो गई, और उस कुत्ते को हाथ से पुचकारने लगी।

हम भी परमेश्वर की संतान हैं, और हमें जीवन का नियंत्रण उसके हाथों में दे देना चाहिए। वह हमारी रक्षा करने वाला है। वह हमारी और हमारे बच्चों की भी सुरक्षा करता है। वह हमसे प्रेम करता है, और जब हम भयभीत हों तो दौड़कर उसके पास चले जाएं और अपने डर को उसकी बाहों में छोड़ दें। जब प्रतिदिन हम अपने जीवन को उसकी आज्ञाओं को मानते हुए उसके चरणों में देते हैं, तब कोई डर की बात नहीं होती।

पुराने नियम में एक मनुष्य जिसका नाम दाऊद था वह बहुत ही बुरी स्थितियों और समस्याओं से निकला। क्योंकि राजा शाऊल उसे मारना चाहता था, क्योंकि दाऊद ने परमेश्वर के बातों में बहुत से सत्यों को जाना और इसी कारण वह और अधिक परमेश्वर के निकट हो गया। उसने बहुत-सी कविताएं लिखी जिन्हें भजन कहा जाता है। यह परमेश्वर की प्रेरणा से लिखी गईं जो परमेश्वर के विषय में बताती हैं। ये 150 भजन हैं जो सब के सब दाऊद द्वारा लिखे नहीं गए। लेकिन ये पुराने नियम में हैं। उसने बहुत से भजन डर के विषय में लिखे। लेकिन मैंने भजन 27 चुना है कि आप उसे अपनी प्रार्थना में इस हफ्ते पढ़ें। प्रभु से मांगे कि वह आपका डर समाप्त करे और आप उसके हाथों में प्रेम और सुरक्षा के साथ चले जाएँ।

*इस सप्ताह का अंत प्रार्थना के साथ करें, परंतु इस बार प्रत्येक जन अपने लिए एक संगी ढूंढ़ ले–यह ध्यान देते हुए कि वे एक ही लिंग के हों। एक दूसरे से उन विषयों पर बात करें जिनसे आप डरते हैं। तब एक दूसरे के भय के लिए प्रार्थना करें और उन्हें परमेश्वर के सामने डाल दें। परमेश्वर से कहें कि आप अपना पूरा भरोसा उसी पर डाल रहे हैं, यहां तक कि उन बातों के लिए भी जो अत्यन्त भयावह हैं।

भजन संहिता - 27

यहोवा मेरी ज्योति और मेरा
उद्धार है – मैं किस से डरूँ?
यहोवा मेरे जीवन का दृढ़ गढ़ है–
में किस से भयभीत होऊं?
जब कुकर्मी मेरा मांस खा जाने को
मुझ पर चढ़ आएं,
और मेरे विरोधी तथा शत्रु भी,
तो वे ठोकर खाकर गिर पड़े।
चाहे सेना भी मेरे विरुद्ध छावनी डाले,
फिर भी मेरा हृदय भयभीत न होगा;
चाहे मेरे विरुद्ध युद्ध भी छिड़ जाए,
फिर भी मैं निश्चिन्त बना रहूँगा।

मैंने यहोवा से एक वर मांगा है,
मैं उसी के यत्न में लगा रहूँगा:
कि मैं अपने जीवन भर यहोवा के
भवन में ही निवास करने पाऊँ,
जिससे यहोवा की मनोहरता निहारता रहूँ
और उसके मंदिर में उसका
ध्यान करता रहूँ।
विपत्ति के दिन तो वह मुझे अपने
मण्डप में छिपा रखेगा,
वह मुझे अपने तम्बू के गुप्त स्थान में
छिपा लेगा,
वह मुझे चट्टान पर चढ़ा देगा।

अब मेरा सिर मेरे चारों ओर से
शत्रुओं से ऊँचा किया जाएगा,
और मैं यहोवा के तम्बू में जय जयकार
के साथ बलिदान चढ़ाऊंगा:
मैं गाऊगा, हां, यहोवा की स्तुति के
भजन गाऊँगा।

हे यहोवा, जब मैं पुकारूँ तो मेरी
पुकार सुन,
मुझपर अनुग्रह कर और मुझे उत्तर दे।
जब तू ने कहा, "मेरे दर्शन का खोजी हो"
तो मेरे हृदय ने तुझ से कहा,
"हे यहोवा, मैं तेरे दर्शन का खोजी
होऊंगा।"
अपना मुख मुझ से न छिपा।
क्रोध में आकर अपने सेवक को दूर न भगा
तू तो मेरा सहायक रहा है।
हे मेरे उद्धार करने वाले परमेश्वर,
न मुझे त्याग, न मुझे छोड़।
मेरे माता-पिता ने तो मुझे छोड़ दिया है
परन्तु यहोवा मुझे सम्भाल लेगा।

हे यहोवा, मुझे अपना मार्ग सिखा,
और मेरे शत्रुओं के कारण
समतल पथ पर मेरी अनुगवाई कर।
मुझे मेरे शत्रुओं की इच्छा पर न छोड़,
क्योंकि झूठे गवाह मेरे विरुद्ध
उठ खड़े हुए हैं
जो हिंसा ही उगलते रहते हैं।

यदि मुझे यह विश्वास न होगा
कि जीवितों की भूमि में यहोवा की
भलाई को देखूँगा,
तो मैं हताश हो गया होता।
यहोवा की प्रतीक्षा करता रह।
हियाव बांध और तेरा हृदय
दृढ़ बना रहे।
हां, यहोवा ही की प्रतीक्षा करता रह।

“मसीह की सांसारिक सेवकाई का अर्थ–प्रेम”–पाठ 5
मत्ती 8-10

“और जनसमूह को देखकर उसे लोगों पर तरस आया, क्योंकि वे उन भेड़ों की तरह पीड़ित और उदास थे जिनका कोई चरवाहा न हो” (मत्ती 9:36)

* *इससे पहले कि आप इस पाठ को आरम्भ करें, लोगों से आप पूछें कि क्या वे अपना निजी समय प्रभु के साथ बिता रहे हैं कि नहीं। प्रेम के साथ उन्हें उत्साहित करें कि लगातार वे प्रभु के वचन में बढ़ते जाएं। क्या वे एक दूसरे की आवश्यकताओं के लिए प्रार्थना कर रहे हैं। क्या किसी को अवसर प्राप्त हुआ कि वह पिछले सप्ताह गवाही देता?*

पुनर्विचार

1. यशायाह नबी के द्वारा कहा गया कि, “यीशु का नाम इम्मानुएल होगा जिसका अर्थ “परमेश्वर ....है”।
2. यीशु ने कहा जब वह वापस आएगा तो हर कोई उसे देखेगा और वह ....पर सामर्थ और महिमा के साथ आएगा।
3. यीशु ने कहा, केवल एक है जो उसके आने के विषय में जानता है, वह स्वयं ....है।
4. यूहन्ना ने उन सभों को जंगल में बपतिस्मा दिया जिन्होंने अपने.................का अंगीकार किया।
5. यूहन्ना ने कहा, जो उसके बाद आने वाला है वह पृथ्वी के लोगों को अलग करेगा और जो उसको ग्रहण नहीं किया, वे न बुझने वाली .... के द्वारा दंडित किए जाएंगे।
6. यीशु ने शैतान को तीन बार परमेश्वर के ....अनुसार उत्तर दिया।
7. यदि हम प्रभु के नज़दीक होना चाहते हैं तो हमें ....के साथ अपना निजी समय बिताना चाहिए।
8. प्रभु यीशु ने हमें “मनुष्यों का ....” होने के लिए बुलाया है।
9. आंधी के समय यीशु नाव में क्या कर रहे थे?
10. चेले क्यों भयभीत थे?
11. यीशु ने चेलों को इसलिए डांटा क्योंकि वे ....हो गए थे, और उन्होंने उसपर विश्वास नहीं किया था।
12. बाइबल हमें सिखाती है कि हम यीशु की सुरक्षा में उसके चरणों पर हैं तो हमें.......... की आवश्यकता नहीं है।

उस तूफान के बाद यीशु और उसके चेले झील की दूसरी ओर उस स्थान पर पहुंचे जहां दो व्यक्ति दुष्टात्माओं से पीड़ित थे। ये व्यक्ति बहुत ही उग्र थे, तथा कब्रों में रहा करते थे। उनमें से एक जोर से चिल्लाया, “हे परमेश्वर के पुत्र, हमारा तुझसे क्या काम! क्या तू यहाँ हमें समय से पहले यातना देने आया है?

कुछ ही दूरी पर बहुत से सुअरों का एक झुंड चर रहा था। दुष्टात्माएँ उससे यह कहकर विनती करने लगीं कि हमें उन सुअरों के झुंड में भेज दे क्योंकि वह उन्हें निकालना चाहता था। उसने उनसे कहा कि “जाओ” और वे निकलकर उनमें समा गईं। और पूरा झुंड झील में जा पड़ा और डूब मरा।

चरवाहे भागकर नगर में गए तथा दुष्टात्माग्रस्त मनुष्यों पर जो कुछ बीता था, सारा हाल कह सुनाया। इसके बाद यीशु वापस गलील को लौटा जहां एक लकवे के मारे को लोग यीशु के पास लाए। यीशु ने उसे चंगा किया और कहा, "जा, तेरे पाप क्षमा हुए"। जो लोग वहां थे। वे हैरान हुए और उन्होंने परमेश्वर की महिमा की, लेकिन फरीसी और शास्त्रियों ने कहा यह तो परमेश्वर की निन्दा करता है।

उसके बाद यीशु आगे बढ़ा और उसने मत्ती नाम के एक मनुष्य को चुंगी-चौकी पर बैठे देखा। उसने कहा मेरे पीछे आ। वह उठा और उसके पीछे चल दिया। फरीसियों ने जब यह देखा तो उसके चेलों से कहा, "तुम्हारा गुरु पापियों और चुंगी लेने वालों के साथ क्यों खाता है।" "यीशु ने उनको उत्तर देते हुए कहा, मैं बलिदान नहीं पर दया चाहता हूं।"

इसके बाद यीशु वहां से निकलकर हर प्रकार के लोगों के पास गया और उनसे बातें कीं। वहां उसे एक आराधनालय का अधिकारी मिला। इस व्यक्ति की पुत्री मर चुकी थी। यीशु शोक-सभा में गया और उस लड़की का हाथ पकड़कर उसे जीवित कर दिया।

उसने दो व्यक्तियों को भी दृष्टिदान दिया जो उसके पीछे-पीछे चल चल रहे थे और चंगाई के लिए विनती कर रहे थे। उसने एक गूंगे को भी जो दुष्टात्मा से भी पीड़ित था चंगा किया।

यीशु ने बहुतों की आवश्यकताओं को देखा और उनपर तरस खाया। लोगों की आवश्यकताएं बहुत बड़ी थीं। ये लोग उन भेड़ों के समान थे जिसका कोई चरवाहा न हो उसने अपने चेलों से कहा फसल तो तैयार है पर काटने वाले कम है। इसलिए फसल के मालिक से विनती करो कि वह और मज़दूर भेज दे।

इसके बाद उसने अपने चेलों को पूरे इस्राएल में भेज दिया। उसने उन्हें सामर्थ दी कि वे लोगों की आवश्कताओं को पूरा करें। उनका उद्देश्य प्रभु के प्रेम को बांटना और प्रकट करना था। उसने उन्हें विशेष निर्देश दिए कि उन लोगों को ढूंढ़े जो प्रभु के शुभ-संदेश को सुनना चाहते हैं वे उनके घर जाएं और उन्हें शांति दें। लेकिन उसने उन्हें सावधान भी किया कि बहुत से उन्हें और उनके वचन को ग्रहण नहीं करेंगे।

उसने उनसे कहा मैं तुम्हें भेड़ों के समान भेड़ियों के बीच में भेजता हूं। इसलिए सांप की तरह चालाक और कबूतर की नाई भोले बनो, और यह भी कहा कि सांसारिक वस्तुओं की चिंता न करो क्योंकि परमेश्वर तो तुम्हारे बालों की गिनती को भी जानता है कि कितने हैं। हर वस्तु उसके नियंत्रण में है।

वह बाद में उसने उनसे यह कहा कि जो तुम्हें ग्रहण करता है, वह मुझे ग्रहण करता है; और जो मुझे ग्रहण करता है, वह मेरे भेजने वाले को ग्रहण करता है। जो कोई इन छोटों में से किसी एक को चेला जानकर ठंडे पानी का एक गिलास भी पीने को दे तो वह अपना प्रतिफल कभी भी न खोएगा।

मौखिक प्रश्न

1. गलील सागर को उस भयंकर नाव-यात्रा के पश्चात् प्रभु यीशु और उसके चेले किससे मिले?
2. उन दो व्यक्तियों की समस्या क्या थी?
3. प्रभु यीशु ने उनके लिए क्या किया?
4. सुअरों ने अपनेआप को झील में क्यों गिरा दिया था?
5. नगर के लोगों ने यीशु से क्यों कहा कि वह उस स्थान को छोड़कर चला जाए?

6. लकवे के मारे हुए व्यक्ति के साथ यीशु ने क्या किया?
7. फरीसियों ने यीशु को निन्दा करने वाला क्यों कहा?
8. उस चुंगी लेने वाले का नाम क्या था?
9. फरीसी क्यों यीशु की बुराई कर रहे थे जब वह अपने कुछ साथियों के साथ भोजन कर रहा था?
10. उन लोगों को यीशु ने क्या जवाब दिया?
11. अधिकारी की पुत्री को यीशु ने क्या किया?
12. अंधे व्यक्ति के साथ यीशु ने क्या किया?
13. गूंगे व्यक्ति को यीशु ने कैसे चंगा किया?
14. यीशु ने अपने चेलों को क्या करने भेजा?
15. यीशु ने अपने चेलों से कहा कि वे ....के समान चालाक, और ....की नाई भोले बनें।
16. यीशु ने किन वस्तुओं की चिंता न करने को कहा?
17. परमेश्वर ने उनसे कहा कि वह तुम्हारे...................... की गिनती को भी जानता है।
18. जब उसने यह कहा कि जो कोई इन छोटों में से एक को चेला जानकर ठंडे पानी का एक गिलास भी पीने को दे, तो मैं तुमसे सच कहता हूं कि वह अपना प्रतिफल कदापि नहीं खोएगा। यहां प्रभु किन लोगों के विषय में बात कर रहे थे?

आत्मिक सच्चाइयां–पाठ 5
मत्ती 8-10

1. यीशु प्रत्येक व्यक्ति की चिंता करता है। वह दुष्टात्मा-ग्रस्त, बीमार, गरीब, धनवान और विशेषकर बच्चों की चिन्ता करता है। परमेश्वर के राज्य में हर एक की कीमत है।
2. मनुष्य हमेशा एक दूसरे की परवाह नहीं करते। जब यीशु ने दुष्टात्मा-ग्रस्त को ठीक किया तो लोग इस बात से बहुत नाराज़ हुए उन्हें लोगों की नहीं, सुअरों की चिंता थी। वे चाहते थे कि यीशु उस क्षेत्र से चला जाए। उन्हें इस बात की चिंता नहीं थी कि यीशु कैसे हमेशा से उनकी सहायता करता आया है। लेकिन उन्हें तो केवल अपने धन की कमी की चिन्ता थी। यह बहुत आसान है कि कई बार हम मनुष्य से बढ़कर पैसे की चिंता करते है। दुर्भाग्य की बात यह है कि हममें से कई ऐसा करते हैं। 1तीमुथियुस 6 : 10 में ऐसा लिखा है "क्योंकि धन का लोभ सब प्रकार की बुराइयों की जड़ है। कुछ लोगों ने इसकी लालसा में विश्वास से भटककर अपने आप को अनेक दुखों से छलनी बना डाला है," और मत्ती 6:9-21 में यीशु ने ऐसा कहा, "अपने लिए पृथ्वी पर धन का संचय मत करो, जहां कीड़ा और जंग नष्ट करते हैं और जहां चोर सेंध लगाकर चोरी करते हैं। परन्तु अपने लिए स्वर्ग में धन संचित करो जहां न कीड़ा और न जंग नष्ट करते हैं और न ही चोर सेंध लगाकर चोरी करते हैं, क्योंकि जहां तेरा धन है, वहां तेरा मन भी लगा रहेगा।" पैसा एक शक्तिशाली चीज़ है। वह हमपर नियंत्रण कर सकता है या हम इसे परमेश्वर को दे सकते हैं कि वह हम पर नियंत्रण करे। सोचें कि हम हर हफ़्ते अपना पैसा कैसे खर्च करते हैं? अच्छा होगा कि हम इसे लिख लें।

- अपने से सवाल पूछें कि क्या जिस प्रकार मैं पैसा खर्च करता हूँ, उससे यीशु को आदर मिलता है?
- या, मैं उन चीज़ों को खरीद रहा हूं या कर रहा हूं जिनसे परमेश्वर का निरादर होता है? क्या मैं जिस प्रकार पैंसे खर्च करता हूँ उससे दूसरों को ठोकर लगती है? या मैं जिस प्रकार इसे खर्च करता हूं, उससे दूसरों की भलाई होती है?

पुराने नियम में परमेश्वर ने लोगों से यह चाहा कि वे उसे दसवाँ अंश दें। नये नियम में परमेश्वर ने हमसे हमारे जीवन को और जो कुछ हमारे पास है उसे मांगा है। लेकिन हम परम्परा के आधार पर पुराने नियम को पूरा करते हुए अपने धन का 10 प्रतिशत प्रभु के कार्य के लिए कलीसिया में देते हैं। इसे दशमांश कहते हैं। इस बात के लिए प्रार्थना करें कि परमेश्वर आपका कितना धन अपने कार्य के लिए चाहता है। वचन सिखाता है कि परमेश्वर उन लोगों को आशीष देता है जो परमेश्वर के राज्य को बढ़ाने के लिए खर्च करते हैं। बाइबल हमें यह भी सिखाती है कि परमेश्वर हमारी सब आवश्यकताओं की पूर्ति करता है। हो सकता है कि आप सोचें कि परमेश्वर इस बात को नहीं समझता कि मैं कितना गरीब हूं। मेरे ऊपर कितना कर्ज़ा है। लेकिन यीशु स्वयं भी एक सांसारिक गरीब परिवार में पैदा हुआ था। यीशु गरीबी की समस्या को जानता है। लेकिन पहले वह हमसे चाहता है जो कुछ वह हमसे करने को कहे हम उसकी आज्ञा का पालन करें और विश्वासयोग्य बने रहें। परमेश्वर से आप पूछें कि वह आपसे कैसे चाहता है कि आप प्रभु की सेवकाई में धन द्वारा सहायता कर सकते हैं।

3. यीशु के पीछे चलने का अर्थ उसका अनुसरण करना है और दूसरों से वैसा ही प्रेम करना जैसा उसने किया। यह सच है कि हम लोगों को चंगा नहीं कर सकते जैसा यीशु ने किया, लेकिन यीशु आज भी लोगों को चंगा करता है। हम बीमारों के लिए विश्वास से प्रार्थना करते रहें। उनके साथ रहकर उनके दुख:दर्द में शामिल हो जाएं। उन्हें बताएँ कि प्रभु यीशु का प्रेम उनके लिए ऐसा ही है। दुष्टात्माग्रस्त लोगों के लिए प्रार्थना करें कि आज भी यीशु पूरे संसार में लोगों को उनसे आज़ाद कर रहा है। हम जरुरतमंदों की सहायता करें। जितना भी हम कर सकते हैं, हमें उनकी शारीरिक आवश्यकताओं की पूर्ति करनी चाहिए। लेकिन विशेषकर उन्हें प्रभु का प्रेम भी बताना हैं जो उनके जीवन को नया कर सकता है। विशेषकर हमें बच्चों की सहायता करनी चाहिए। यीशु ने अपने चेलों को बहुत से कार्य करने की आज्ञा दी लेकिन जो बच्चों की मदद करेंगे उनके लिए विशेष प्रतिफल है।
4. कुछ लोग ऐसे हैं जिनसे प्रेम करना इतना आसान नहीं। लेकिन परमेश्वर हमसे चाहता है कि हम दयालु बनें। चुंगी लेने वालों को उस समय एक विशेष कारण से पसंद नहीं किया जाता था। क्योंकि वे एक भ्रष्ट सरकार के लिए लोगों से पैसा इकट्ठा करते थे, और उनमें से बहुत से जितना उन्हें लोगों से लेना होता था, उससे अधिक लेकर अपनी जेब में डाल लेते थे। ऐसे व्यक्ति के लिए जो आप की चोरी करे, और विशेषकर जब वह न पछताए, तो उसके प्रति परमेश्वर का प्रेम दर्शाना आसान नहीं होता। लेकिन यीशु का अनुयायी होने के कारण हमारे पास उस व्यक्ति पर दोष लगाने का कोई अधिकार नहीं है। यदि वह गलत भी कर रहा है तो हमारा कर्त्तव्य उनके लिए प्रार्थना करना, उनसे प्रेम करना और उनको क्षमा करना है। यदि वे पछताते हैं तो वे परमेश्वर की पूर्ण क्षमा प्राप्त करेंगे। बाइबल कहती है कि हम सब पापी हैं और दंड के योग्य हैं। वह यह भी कहती है कि हमें क्षमा और दया प्राप्त हुई है, सो हमें औरों के प्रति भी दया और क्षमा को दिखाना है, जबकि ये कार्य परमेश्वर की सामर्थ के बिना असम्भव है।
5. संसार की आवश्यकताएं इतनी बड़ी हैं कि जिसे हम अकेला पूरा नहीं कर सकते। करोड़ों लोग आज भी ऐसे हैं जिन्होंने अपने जीवन में यीशु के प्रेम का अनुभव अभी तक नहीं किया; और ऐसे भी करोड़ों लोग हैं जिन्होंने संसार में प्रेम का अनुभव किसी से नहीं किया। लेकिन यदि कोई उन्हें यह प्रेम दे तो वे उसका अनुभव करेंगे। व अपना जीवन प्रभु को देंगे और उसके प्रेम का अनुभव करेंगे। जो हम कर सकते हैं, वह हमें जरूर करना चाहिए। लेकिन हमें यह भी प्रार्थना करनी चाहिए कि प्रभु आप को ऐसे लोग दे जिनके द्वारा लोग प्रभु के प्रेम को जान सकें।
6. आप अपना प्रेम परमेश्वर और एक दूसरे के प्रति ऐसा करके दिखा सकते हैं कि परमेश्वर के कार्य के लिए अपनी स्थानीय कलीसिया में दसवां अंश दें। परमेश्वर स्थानीय कलीसिया का उपयोग, लोगों की आत्मिक, शारीरिक और मानसिक समस्या का समाधान करने के लिए करता है। परमेश्वर आपके दशमांश का इस्तेमाल करता है जिससे कलीसिया के कार्य पूरे किये जा सकें।

मौखिक प्रश्न

1. वह कौन-सी विधियां हैं जिनका प्रयोग मैं अपने जीवन की परिस्थिति में परमेश्वर का प्रेम प्रकट करने के लिए कर सकता हूं?

2. जो लोग मेरे चारों ओर रहते हैं उनकी विशेष आवश्यकताएं क्या हैं? वे किन कारणों से दु:खी हैं?
3. इन लोगों की सहायता मैं कैसे कर सकता हूं?
4. विशेषकर बच्चों को परमेश्वर का प्रेम मैं कैसे दिखा सकता हूं?
5. किस तरीके से लोगों के सामने मेरे धन का उपयोग होता आया है?
6. क्या मैं पैसे से परमेश्वर का आदर करता हूं?
7. अपने ऊपर परमेश्वर की दया को, मैं अपने चारों ओर के लोगों पर कैसे प्रकट कर सकता हूँ?

* *यहां पर एक और अच्छा अवसर है कि हम संसार के दूसरे भागों में रह रहे मिशनरियों को मदद करने के विषय में विचार-विमर्श करें और संसार के किसी ऐसे समूह के लिए प्रार्थना करें जिन्होंने अभी परमेश्वर के प्रेम के विषय में नहीं सुना है।*

"विश्वासघात और क्षमा"–पाठ 6
मत्ती 21-27:10

"यदि हम अपने पापों को मान लें तो वह हमारे पापों को क्षमा करने और हमें सब अधर्म से शुद्ध करने में विश्वासयोग्य और धर्मी है" (1 यूहन्ना 1:9)।

पुनर्विचार

1. यशायाह भविष्यद्वक्ता ने कहा कि उसका नाम इम्मानुएल होगा जिसका अर्थ "परमेश्वर ....।" है?
2. यीशु ने कहा कि कोई नहीं जानता कि पृथ्वी पर दुबारा उसका आना कब होगा, सिवाय ....के।
3. यूहन्ना ने जंगल में बहुतों को बपतिस्मा दिया जिन्होंने अपने ....से पश्चाताप किया।
4. यीशु ने तीन बार परमेश्वर के .... के द्वारा शैतान को उत्तर दिया।
5. यदि हम परमेश्वर के और नजदीक होना चाहते हैं तो हमें अपना निजी समय ....के साथ बिताना चाहिए।
6. यीशु ने हमें "मनुष्यों का......................" होने के लिए बुलाया है।
7. यीशु ने अपना प्रेम लोगों को उनकी बीमारियों से ....करके दिखाया।
8. यीशु को उनकी बहुत-सी...................को देखकर तरस आया।
9. यीशु ने कहा कि तुम सब लोगों के बीच में जाओ लेकिन......................के सामान चालाक और........................के समान भोले बनो।
10. यीशु ने कहा कि वह उनके.....................की गिनती को भी जानता है?
11. जब उसने यह कहा कि जो कोई इन छोटों में से एक को चेला जानकर ठंडे पानी का एक गिलास भी पीने को दे तो मैं तुमसे सच कहता हूं कि वह अपना............कदापि न खोएगा।
12. यीशु ने अपने चेलों को जब वे नाव पर आंधी और तूफान का सामना कर रहे थे तो कहा..............।

गलील में यीशु ने बहुत से लोगों को सिखाया, प्रचार किया और चंगा किया। लेकिन बहुतों ने उसके वचन को ग्रहण नहीं किया। यीशु ने चेलों को बताया कि यह परमेश्वर की योजना के अनुसार है कि वह सत्य को बुद्धिमानों से छुपाकर रखेगा और बच्चों पर प्रकट करेगा। समय आया जब उसने अपने चेलों को सावधान किया कि वह सताया जाएगा, मारा जाएगा और तीसरे दिन जी उठेगा।

यीशु का यरूशलेम में आना एक बड़ी घटना थी। लोग मार्ग के किनारे खड़े हो गए, अपने कपड़े बिछा दिए और हाथों में खजूर की डालियां ली कि जब वह मार्ग से गुज़रे तो वे उसका स्वागत करें। जब वह गदहे पर बैठकर वहां से गुजरा तो वे चिल्लाए "होशन्ना! होशन्ना! धन्य है वह जो प्रभु के नाम से आता है! सर्वोच्च स्थान में होशन्ना!" यीशु ने कई दिन तक यरुशलेम में शिक्षा दी, प्रचार किया और बहुतों को चंगा किया। लेकिन फरीसी और सदूकियों के साथ कई बार उसका सामना और वाद-विवाद भी हुआ।

स्वयं यीशु के अपने चेलों में से एक, यहूदा इस्करियोती ने महायाजकों से यीशु को पकड़वाने

के लिए पैसा मांगा। उन्होंने उसे 30 चांदी के सिक्के दिये। फसह के पर्व पर यीशु ने अपने चेलों के साथ आखिरी भोजन किया और तब उसने रोटी ली और कहा, "यह मेरी देह है" और फिर प्याले को लेकर धन्यवाद दिया और कहा "इसमें से पियो। यह नई वाचा का मेरा लहू है जो बहुतों के पापों की क्षमा के लिए बहाया जाता है।" फिर जैतून पर्वत पर उसने चेलों को सावधान किया कि वे सब ठोकर खाएंगे। तभी पतरस ने कहा कि वह कभी भी प्रभु को न छोड़ेगा। यीशु ने कहा, न केवल वह उसको छोड़ देगा, बल्कि वह मुर्गे की बांग देने से पहले तीन बार उसका इन्कार करेगा।

तब वह चेलों को लेकर गतसमनी के बाग़ में चला गया। वहां वह रात भर प्रार्थना करता रहा। जो कुछ उसके साथ घटित हो रहा था उससे वह व्याकुल हो उठा। उसने चेलों से कहा कि वे जागते रहें और प्रार्थना करें, लेकिन वे सो गए। वे केवल उस वक्त जागे जब यहूदा महायाजकों के साथ यीशु को पकड़ने आया। महायाजक उसे पकड़कर कैफा के पास ले गए और चेले उसे उसी घड़ी छोड़कर भाग गए। जब यीशु से पूछताछ हो रही थी तो पतरस आंगन में था। जब वह वहां बैठा था तो एक लकड़ी उसके पास आई और कहने लगी, "तू भी तो यीशु के साथ था।" पतरस ने इनकार किया। फिर एक दूसरी लड़की ने कहा कि वह यीशु के साथ था। इस बार पतरस ने कसम खाते हुए इन्कार किया। फिर लोगों ने पतरस पर दोष लगाया कि वह यीशु के साथ था। इस बार वह कसम खाते हुए बोला मैं उस मनुष्य को नहीं जानता, और ठीक उसी समय मुर्गे ने बांग दी और पतरस को यीशु के कहे शब्द याद आए जो उसने जैतून पर्वत पर कहे थे। वह बाहर गया और बुरी तरह रोने लगा।

जब सुबह हुई तो याजक यीशु को पिलातुस के पास ले गए कि वह उसे क्रूस पर चढ़ाए। जब यहूदा ने यह देखा तो वह महायाजकों के पास गया और 30 चांदी के सिक्के उन्हें वापस किए और उसने उनसे कहा मैं निर्दोष के लहू का दोषी हूं। मैंने पाप किया है। मैं विश्वासघाती हूं। उन्होंने उसे जवाब दिया इस बात से हमारा क्या मतलब? तू खुद ही जान। यहूदा ने वे चांदी के सिक्के मन्दिर में फेंक दिए और वहां से जाकर अपने आपको फांसी लगा ली।

मौखिक प्रश्न

1. प्रभु की योजना यह है कि वह अपनी सच्चाई को ज्ञानवानों से छिपा कर आम लोगों पर प्रकट करे?
2. जब यीशु यरुशलेम नगर में गया तो उसके साथ किस प्रकार का व्यवहार हुआ?
3. यहूदा महायाजकों के पास क्यों गया और उन्होंने उसे 30 चांदी के सिक्के क्यों दिए?
4. चेलों के साथ आख़िरी भोज पर यीशु ने रोटी और दाखरस की विशेषता को बतायी थी। वे क्या थीं?
5. यीशु ने कहा उसका लहू बहाया जाना ज़रूरी है। क्यों?
6. जैतून पर्वत पर यीशु ने अपने चेलों से कहा कि वे धोखा खायेंगे। पतरस ने इस बात से इन्कार किया। तब यीशु ने पतरस के लिए क्या भविष्यद्वाणी की थी?
7. किस संकेत के द्वारा यहूदा ने यीशु को पकड़वाया था?
8. जब यीशु से धार्मिक अगुवे पूछताछ कर रहे थे तब पतरस कहाँ था?
9. दो लड़कियों ने पतरस के ऊपर दोष लगाया था। वह दोष क्या था?
10. तीसरी बार जब लोगों ने आकर पतरस से कहा कि वह यीशु के साथ था, तो पतरस ने क्या उत्तर दिया?
11. यहूदा को यीशु के साथ विश्वासघात करने का कब आभास हुआ?
12. वह क्यों महायाजकों के पास वापस गया?
13. जब महायाजकों ने 30 चांदी के सिक्कों को लेने से इन्कार किया तो यहूदा ने क्या किया?

आत्मिक सच्चाइयां–पाठ 6
मत्ती 11–27:10

1. शिष्यों के साथ अंतिम भोजन के द्वारा, उसने एक प्रथा का आरंभ किया जो उस समय से आज तक यीशु के अनुयायियों द्वारा समस्त संसार में पालन किया जाता है। हम इसे प्रभु-भोज कहते हैं। प्रभु-भोज कोई चमत्कारिक घटना नहीं है कि जिससे हमारे पाप क्षमा हो जाएँ या जिससे कोई विशेष कार्य हमारे शरीर में हो; और ऐसा भी नहीं है कि उसी घड़ी ये रोटी और दाखरस प्रभु का लहू और शरीर बन जाए। यह तो यीशु के अनुयायियों को इकट्ठा होकर यीशु की क्रूस पर दी गई कुर्बानी को याद करना है। यह इस बात को याद करने का समय है कि यीशु ने हमारे पापों के लिए अपना प्राण दिया है। यह एकसाथ धन्यवाद देने और आनंद मनाने का समय है कि यीशु ने हमारे पाप क्षमा किए। 2 कुरिन्थियों 11: 23–33 में यह सिखाता है कि यह एक बहुत गंभीर अवसर होता है और इसे हमें हल्का नहीं जानना चाहिए। यह समय होता है कि हम उसके बलिदान पर मनन करें और अपने आप को जांचे। इस बात को याद रखते हुए कि उसने हमारे लिए सलीब पर क्या किया।

2. इससे पहले कि हम असफल हों परमेश्वर हमारी असफलताओं को जानता है वह और हमें ग्रहण करता चाहता है कि वह हमें परमेश्वर के राज्य में इस्तेमाल करे: उस समय से जब यीशु ने पतरस को मनुष्यों को पकड़नेवाला होने के लिए बुलाया था, उसे मालूम था कि वह उस रात उसे धोखा देगा। लेकिन जब हम लगातार बाइबल पढ़ते हैं तो प्रेरितों के काम में हमें पता चलता है कि परमेश्वर ने पतरस को बहुत से लोगों के लिए इस्तेमाल किया, और वास्तविकता तो यह है कि पतरस ने 2 पुस्तकें भी बाइबल में लिखी हैं। यीशु के स्वर्ग में उठाए जाने के बाद पतरस ने यरूशलेम में उन्हीं लोगों के सामने साहस के साथ प्रचार किया जिनके सामने उसने यीशु का इन्कार किया था। तो प्रभु हमारी असफलताओं से हैरान नहीं होता। क्योंकि यीशु को ग्रहण करने के बाद भी हम कई बार अपने जीवन में असफल हो जाते हैं। हम पाप करते हैं, धोखा देते हैं और जिन चीजों से हम घृणा करते हैं, उन्हीं को हम करते हैं।

3. यदि हम परमेश्वर के सामने असफल हो जाते है तो हमें क्या करना चाहिए?

   उस रात दो व्यक्तियों ने यीशु को धोखा दिया। (1) पतरस–जो बाद में परमेश्वर के लिए बड़ी अधिकाई के साथ इस्तेमाल हुआ और (2) यहूदा- जिसने यीशु को धोखा दिया लेकिन बाद में उसने आत्महत्या कर ली। बाइबल हमें बताती है कि हम सब पापी हैं। हम सब परमेश्वर को धोखा देते हैं, और उस धोखे की सज़ा अनंत दंड है। यहूदा ने अपने पापों से पश्चाताप नहीं किया और न ही प्रभु की क्षमा को प्राप्त कर सका। कई बार लोग उन गलत कार्यों के कारण जो उन्होंने अपने जीवन में किए, आत्मग्लानि से भरा महसूस करते हैं। कुछ लोग सोचते हैं कि उनके पाप बहुत ही बड़े हैं, इसलिए परमेश्वर उन्हें क्षमा नहीं कर सकता। बाइबल हमें सिखाती है कि यह सत्य नहीं है। 1 यूहन्ना 1 : 9 में लिखा है "यदि हम अपने पापों को मान लें तो वह हमारे पापों को क्षमा करने और हमें सब अधर्म से शुद्ध करने में

विश्वासयोग्य और धर्मी है।"

इसका अर्थ यह हुआ कि यदि कोई व्यक्ति:

- परमेश्वर के पास आता है
- जो कुछ उसने किया है वह परमेश्वर को बताता है
- पश्चाताप करता है
- परमेश्वर से अपने पापों की क्षमा मांगता है
- **तभी परमेश्वर उस व्यक्ति के भयानक से भयानक पापों को क्षमा करने में विश्वासयोग्य और धर्मी है। क्योंकि क्रूस पर यीशु का बलिदान इस योग्य है कि वह हमारे इस पाप को साफ कर दे।**

इसका अर्थ यह भी है कि प्रभु यीशु का अनुयायी होने के कारण हमें उन पापों के कारण हारा हुआ जीवन नहीं बिताना चाहिए, जिन पापों को पहले ही परमेश्वर ने क्षमा कर दिया है। हम उन बातों के कारण आत्मग्लानि में न जिएं जिन्हें परमेश्वर ने उससे पहले ही क्षमा किया है। पतरस ने अपने पापों से पश्चाताप किया और बाद में प्रभु के द्वारा इस्तेमान होने के योग्य ठहरा। हम अपने पापों से पश्चाताप कर सकते हैं, और प्रभु के लिए अच्छे से इस्तेमाल हो सकते हैं।

हां, वास्तव में यहूदा के हृदय में बुराई थी। यह भयानक बात है कि अपने अच्छे मित्र के साथ विश्वासघात किया जाए कि उसके कारण उसे क्रूस पर चढ़ना पड़े। जबकि वह इन सब बातों के विषय में निर्दोष था। सच्चाई यह है कि परमेश्वर के पास यहूदा के जीवन के लिए भी योजना थी। यहूदा भी परमेश्वर द्वारा क्षमा किये जाने के योग्य था। लेकिन यदि वह प्रभु के पास आकर क्षमा मांगता तभी। लेकिन उसने आत्मग्लानि को जीवन में नियंत्रण करने दिया। यह उसके सहने से बाहर हो गया था। इसलिए उसने आत्माहत्या कर ली।

4. यीशु ने अपने चेलों से कहा कि परमेश्वर के साथ हमारी वाचा यीशु के लहू बहाए जाने और पापों की क्षमा के बाद ही संभव है। परमेश्वर की क्षमा-प्राप्ति करने के लिए हमने कोई कार्य नहीं किया। एक बार जब हमने प्रभु यीशु को अपने हृदय में अपना लिया तो फिर कोई भी इसे हमसे नहीं छीन नहीं सकता। इफिसियों 1:13-14 में पाया जाता है, "उसी में तुम पर भी जब तुमने सत्य का वचन सुना जो तुम्हारे उद्धार का सुसमाचार है–और जिस पर तुमने विश्वास किया–प्रतिज्ञा किए हुए पवित्र आत्मा की छाप लगी। वह हमारे उत्तराधिकार के बयाने के रूप में इस उद्देश्य से दिया गया है कि परमेश्वर के मोल लिए हुए का छुटकारा हो, जिससे परमेश्वर की महिमा की स्तुति हो।" यहून्ना 3:16 बताता है कि आप के पास अनन्तजीवन है। जब यीशु एक बार आपके हृदय में आ गया तो फिर वह आपको नहीं छोड़ता। उसके बाद आप हमेशा के लिए बच जाते हैं। हमें यीशु के बलिदान को याद रखना चाहिए और पाप को त्यागना चाहिए। प्रत्येक दिन हम उसकी आज्ञा को मानते हुए चलें। लेकिन 1यूहन्ना 2:1 हमें याद दिलाता है कि यदि हम पाप करें तो याद रखें कि हमारे अंदर कौन रहता है। हम याद रखें कि वह हमें पिता के सामने बचाने वाला है। उसने हमारे पापों के लिए कीमत चुकायी है।

मौखिक प्रश्न

1. आप पतरस और यहूदा के बारे में क्या सोचते हैं?
2. "क्षमा" शब्द का आपके लिए क्या अर्थ है?
3. क्या आपने कभी अपने आपको यहूदा के समान पापी महसूस किया?
4. जोर से न बोलें, लेकिन ऐसा हो सकता है कि आपने कुछ ऐसा किया हो कि आपके लिए

यीशु की क्षमा को लेना कठिन प्रतीत होता हो? क्या ऐसा है?

5. इस स्थिति में यीशु आपसे क्या कहता है? क्या प्रत्येक जन ने ज़ोर से 1यूहन्ना 1:9 का उच्चारण किया है, अथवा उसे ज़ोर से पढ़ा है।

हर कोई अपने सिर को झुकाए और जो कुछ उसके दिल में है प्रभु से कहे। यदि कोई पाप है तो अंगीकार करे, यदि आत्मग्लानि है तो प्रभु से कहे कि वह इसे निकाल दे। परमेश्वर से कहें कि उसका बलिदान जो उसने हमारे लिए सलीब पर दिया हमें हमारे पापों से क्षमा करने के लिए काफी है। इस सत्य का दावा कीजिए।

*हो सकता है कि बाद में शैतान आपके विचारों में आप पर दोष लगा कर आप पर आक्रमण करें। लेकिन ये विचार परमेश्वर के नहीं है। जब पहले ही प्रभु ने आप के पापों को क्षमा कर दिया है तो ध्यान रहे कि वह झूठी ग्लानि दुष्ट की ओर से है। इसलिए अच्छा होगा कि आप इस बात के लिए प्रार्थना करें। यह कहें:

> "धन्यवाद यीशु, मेरे पाप क्षमा करने के लिए (विशेष पाप का नाम लेकर), धन्यवाद कि तेरा बलिदान इस योग्य है कि मेरे पाप क्षमा हुए। मुझे पूरा विश्वास है। मैं आपसे प्रार्थना करता हूं कि इस आत्मग्लानि के विचारों को मेरे अंदर से निकाल दें।"

परमेश्वर विश्वासयोग्य है, वह ऐसा करेगा। जब आप प्रभु से प्रार्थना करते हैं तो हर बार शैतान आपके ऊपर आक्रमण करना चाहता है। लेकिन यदि आप प्रार्थना करें तो शैतान ज्यादा देर रुक नहीं सकता। वह आपको छोड़कर भाग जाएगा और आप आज़ाद हो जाएंगे। हमें प्रभु यीशु में अपने जीवन के हर एक क्षेत्र में पूर्ण विजय प्राप्त है!

यीशु का क्रूस पर चढ़ाया जाना–पाठ 7
मत्ती 26–27

"क्योंकि क्रूस की कथा नाश होने वालों के लिए मूर्खता है, परंतु हम उद्धार पाने वालों के लिए परमेश्वर की सामर्थ है।" 1कुरिन्थियों 1:18

पुनर्विचार

1. यशयाह भविष्यद्वक्ता ने कहा, उसका नाम इम्मानुएल होगा जिसका अर्थ है परमेश्वर .... "।
2. यीशु ने कहा कि उसके दुबारा आने का समय कोई नहीं जानता, केवल......................... ....।
3. यूहन्ना ने उन सबको जिन्होंने अपने.............................से मन फिराया उन्हें बपतिस्मा दिया।
4. यीशु ने तीन बार शैतान को ....अनुसार उत्तर दिया।
5. यदि हम परमेश्वर के निकट बढ़ना और परीक्षा का सामना करना चाहते हैं। तो हमें ....परमेश्वर के साथ ....समय व्यतीत करना होगा।
6. यीशु ने अपने चेलों को "........................का..................." होने के लिए बुलाया।
7. यीशु ने अपने चेलों से कहा कि वे न ....क्योंकि उसकी उपस्थिति उनके साथ है।
8. यीशु ने अपना समय आराधनालय में ....देते हुए, परमेश्वर के राज्य का सुसमाचार सुनाते और बीमारों को ....करते हुए बिताया।
9. यीशु ने अपने अनुयायियों से कहा, जब तुम लोगों के बीच में जाओ तो सांप के समान.. ....और कबूतर की नाई ....बनो।
10. यीशु ने कहा, हमारे सिर के बाल भी .... हुए हैं।
11. जैतून के पहाड़ पर यीशु ने पहले ही से बता दिया था कि ....मुर्गे की बांग देने से पहले तीन बार उसका इन्कार करेगा।
12. ....वह चेला था जिसने यीशु को चांदी के तीस सिक्कों में बेच दिया था।
13. ....ने यीशु का इनकार तो किया, परन्तु बाद में प्रभु के लिए सामर्थ के साथ इस्तेमाल हुआ।
14. ....ने जो कुछ उसने किया था, उससे उसे बहुत आत्मग्लानि हुई और बाद में उसने जाकर आत्महत्या कर ली।
15. .... बाइबल हमें सिखाती है कि यदि हम अपने पापों को .... लें तो वह हमारे पापों को .... करने और हमें सब अधर्म से .... करने में विश्वास योग्य और धर्मी है।

जब पतरस कैफा के घर के बाहर खड़ा था, तो उस समय यीशु पर झूठे दोष लगाए जा रहे थे। लेकिन तब भी वे मृत्युदंड योग्य कोई भी दोष उसमें न पा सके। यीशु चुपचाप सब कुछ सहता रहा और अपने को बचाने के लिए उसने मुंह न खोला। जब कैफा कुछ न कर सका और अपने प्रयासों को असफल होते देखकर उसने यीशु से पूछा, "अगर तू परमेश्वर का पुत्र मसीह है तो हमें बता।"

आख़िरकार यीशु ने चुप्पी तोड़ी और कहा, "तूने स्वयं ही कह दिया। फिर भी मैं तुझसे कहता हूं कि अब से तुम मनुष्य के पुत्र को सर्वशक्तिमान के दाहिनी ओर बैठा हुआ और स्वर्ग के बादलों पर आता देखोगे।"

कैफा के लिए इतना प्रमाण पर्याप्त था। उसने यीशु को ईशनिन्दक घोषित करते हुए अपने वस्त्र फाड़ लिये। उन सब ने यीशु को पकड़ा, उसे पीटा, थप्पड़ मारा तथा उसका मज़ाक उड़ाया।

सुबह होने पर मुख्य याजकों व अधिकारियों ने उसे बांधकर पुन्तियुस पिलातुस के हाथों में सौंप दिया जो यहूदिया प्रान्त का रोमी राज्यपाल था। राज्यपाल ने उससे पूछा, "क्या तू यहूदियों का राजा है?" उसने सहजता से उत्तर दिया कि "तू स्वयं ही कहता है।" इसके बाद याजकों ने उसपर कई आरोप लगाए, परंतु इसपर भी यीशु चुप ही रहा। राज्यपाल यीशु की खामोशी से बहुत चकित हुआ। उसने यीशु में कोई दोष नहीं पाया और उसे शांतिपूर्वक छोड़ने का प्रयास किया।

जैसा कि यह दिन यहूदियों का सबसे महत्वपूर्ण त्यौहार 'फसह' था, और पिलातुस की इस अवसर पर लोगों की इच्छानुसार एक कैदी को छोड़ने की प्रथा थी। अत: इस बार भी लोगों के सामने दो व्यक्तियों को लाया गया। इसमें से एक यीशु था और दूसरा खूँखार अपराधी बरअब्बा था। उसने लोगों से पूछा कि किस व्यक्ति को उनके लिए छोड़ा जाए। महायाजकों द्वारा उकसाए जाने पर लोगों ने चिल्लाकर बरअब्बा को छोड़ने तथा यीशु को क्रूस पर चढ़ाने को कहा। पिलातुस ने फिर लोगों से कहा "क्यों, इसने क्या बुरा काम किया है?" परंतु वे अड़े रहे कि वह उसे क्रूस पर चढ़ाए। पिलातुस ने काबू से बाहर होती भीड़ को देखकर यह कहकर सहमति दी कि मैं इस व्यक्ति के खून से निर्दोष हूं, तुम ही उसे ले जाओ।" लोगों ने उसे उत्तर दिया कि इसका लहू हमपर और हमारे संतान पर हो। पिलातुस ने बरअब्बा को छोड़ने तथा यीशु को कोड़े लगाने की आज्ञा दी, और उसे अपने मुख्यालय प्रिटोरियन ले जाने की आज्ञा दी जहां उसे और भी अधिक यातना दी जानी थी।

प्रिटोरियन में उन्होंने उसके वस्त्र उतारकर बैंजनी वस्त्र पहनाए। उन्होंने उसके हाथ में एक सरकंडा दिया तथा उसके सिर पर कांटों का मुकुट पहनाया। सिपाहियों ने उसका ठठ्ठा उड़ाया और उसपर थूका। वे ठठ्ठा करने के लिए उसके सामने झुके। उन्होंने उसके हाथ से सरकंडा लिया और उसके सिर पर मारा।

प्रिटोरियन में यह सब करने के बाद सैनिकों ने उसके कपड़े उसे पहनाये, और उसे गोलगता जिसका अर्थ खोपड़ी है, की ओर ले चले। इसी जगह पर उसे क्रूस दी जानी थी। जब वे प्रिटोरियन से जा रहे थे, उन्होंने शमौन नामक व्यक्ति को यीशु का क्रूस उठाने के लिए पकड़ा।

जब यीशु क्रूस पर टंगे थे, सैनिकों ने पर्ची डालकर उसके कपड़े बांटे। वे उसे मरता हुआ देखने के लिए क्रूस के नीचे खड़े हो गए। उसे क्रूस पर टँगा हुआ देखने के लिए महायाजक और प्राचीन भी आए थे, जो उसपर दोष लगाने और ताना मारने लगे कि वह क्रूस से उतरकर दिखाए। काफी और लोग भी उस स्थान पर आये थे जो सिर हिला-हिलाकर उसके लिए अपशब्द बोल

रहे थे। यहां तक कि उसके साथ लटकाए गए चोर भी उसके खिलाफा बोलने से नहीं चूके।

परंतु छठे घंटे से लेकर नवें घंटे तक पृथ्वी पर अंधकार छाया रहा। यीशु ने चिल्लाकर परमेश्वर से कहा, एली, एली, लमा शबक्तनी!" जिसका अर्थ है, "हे मेरे परमेश्वर, हे मेरे परमेश्वर! तूने मुझे क्यों छोड़ दिया?" वहां खड़ा एक व्यक्ति यह सुनकर दौड़ा और सिरके से भीगा स्पंज यीशु को देने की कोशिश की। वहां खड़े लोगों ने उससे कहा, "उसे अकेला छोड़ दो। देखते हैं कि एलियाह उसे बचाने आता है या नहीं" इसके बाद यीशु ने चिल्लाकर प्राण त्याग दिए।

उसकी मृत्यु पर पूरे यरूशलेम में अनोखी घटनाएं घटी, जिन्होंने प्रमाणित कर दिया कि वह कौन था। मंदिर के बीच का पर्दा जो परमपवित्र स्थान को शेष मंदिर से अलग करता था, ऊपर

से नीचे तक फटकर दो टुकड़े हो गया, भूमि कांपी और चट्टानें टूट गई। इतना ही नहीं, बहुत सी कब्रें खुल गईं और यीशु के वे अनुयायी जो पहले ही मर गए थे, जीवित होकर यरूशलेम नगर में घुमने लगे।

उसी शाम को यूसुफ नाम का एक धनी व्यक्ति पिलातुस के पास गया और यीशु के शव को दफनाने की आज्ञा माँगी। पिलातुस ने अनुमति दे दी और यीशु के शव को एक चट्टान में खुदी नई कब्र में ले जाया गया। यूसुफ ने यीशु के शव को लेकर स्वच्छ मलमल के कपड़े में लपेटकर कब्र में रखा और इससे पहले कि वह मरियम मगदलीनी और दूसरी मरियम के साथ वहां से चला जाय, उसने प्रवेश–द्वार पर एक भारी पत्थर लुढ़का दिया।

मौखिक प्रश्न

1. कैफा के घर में यहूदी अगुवों ने किस बात में यीशु को दोषी ठहराया?
2. जो भी दोष यीशु पर लगाए जा रहे थे, उनका उसने कैसे जवाब दिया?
3. जब यीशु के ऊपर दोष लगाए जा रहे थे, तब वह चुपचाप रहा। इस बात से पिलातुस को क्या लगा?
4. बरअब्बा कौन था?
5. रोमी सिपाहियों ने यीशु के साथ कैसा व्यवहार किया?
6. जब यीशु सलीब पर थे तो याजकों और लोगों ने उसके साथ कैसा व्यवहार किया?
7. छठे घंटे से लेकर नवें घंटे तक उस स्थान पर क्या हुआ?
8. इससे पहले की यीशु अपना प्राण त्यागता, उसने पुकारकर क्या कहा?
9. कौन-सी विचित्र घटनाएं यीशु की मृत्यु के समय हुईं?
10. अरमतियाह के यूसुफ ने यीशु के शव के साथ क्या किया?

आत्मिक सच्चाइयां – पाठ 7
मत्ती 26–27

परमेश्वर के तरीके मनुष्य के तरीके नहीं हैं। आइए, हम सब 1कुरिन्थियों 1:18-21, 27 को पढ़े। इसे दो-तीन बार बढ़ें ताकि सबको सोचने का समय मिल जाए कि बाइबल क्या कहती है।

"क्योंकि क्रूस की कथा नाश होने वालों के लिए मूर्खता है, परन्तु हम उद्धार पाने वालो के लिए परमेश्वर की सामर्थ है" क्योंकि लिखा है:

"मैं ज्ञानियों के ज्ञान को नष्ट करूंगा और बुद्धिमानों की बुद्धि को व्यर्थ कर दूंगा।"

कहां रहा ज्ञानी, कहां रहा शास्त्री और कहां इस युग का विवादी? क्या परमेश्वर ने इस संसार के ज्ञान को मूर्खता नहीं ठहराया? क्योंकि जब परमेश्वर के ज्ञान के अनुसार यह संसार अपने ज्ञान से परमेश्वर को न जान सका, तो परमेश्वर को यह अच्छा लगा कि इस प्रचार की मूर्खता के द्वारा विश्वास करने वालों का उद्धार करे। परंतु परमेश्वर ने संसार के मूर्खो को चुन लिया है कि ज्ञानवालों को लज्जित करें, और परमेश्वर ने संसार के निर्बलों को चुन लिया है कि बलवानों को लज्जित करें।"

यदि हम प्रभु यीशु का जीवन देखें तो हम देख सकते हैं कि परमेश्वर के नियम मनुष्यों के नियमों से अलग है।

- *जब सांसारिक राजा पैदा होते हैं तो वे एक महल में पैदा होते है, लेकिन परमेश्वर ने राजाओं के राजा यीशु को गरीबी में उत्पन्न होने के लिए भेजा।*
- *जब किसी महत्वपूर्ण व्यक्ति के बारे में लोगों को एक विशेष सूचना देनी होती है, तो सूचना देने वाला व्यक्ति बहुत धनी, अच्छे वस्त्र पहने हुए और एक महत्वपूर्ण सवारी गाड़ी में आता हुआ दिखाई देता है। लेकिन यीशु के आने की सूचना देने वाला व्यक्ति यूहन्ना, ऊंट की खाल का वस्त्र पहने, जंगल में रहने, और टिड्डयां खाने वाला था। जहां लोगों को उसे सुनने जाना पड़ता था।*
- *यदि सांसारिक राजा का कोई शत्रु है और यदि राजा के पास अपने शत्रु पर विजय प्राप्त करने और उसे नाश करने की सामर्थ्य है, तो वह आसानी से ऐसा कर सकता है। लेकिन यीशु ने स्वयं अपने आपको अपने शत्रु शैतान द्वारा परीक्षा लिए जाने के लिए दे दिया और आज तक भी उसने शैतान को पूरी तरह नष्ट नहीं किया है।*
- *जब सांसारिक राजा अपने करीबी साथियों का चुनाव करता है, तो वह उन मनुष्यों को लेता है जो सबसे पहले बड़े स्कूल में पढ़े हैं, ऊंचे परिवारों से संबंधित हैं, जिसके पास बहुत-सा धन है। लेकिन यीशु ने उन्हें जो साधारण व्यवसाय करते थे, जैसे मछुआरे, चुगी लेने वाले और चमड़े का कार्य करने वाले को चुना।*
- *सांसारिक राजा अपनी मनवाने के लिए लोगों को मजबूर करते हैं और उनको जो उनकी आज्ञा नहीं मानते, परन्तु यीशु ने हमें प्रेम करना सिखाया है। वह मनुष्य पर छोड़ देता है कि चाहे वे उसके पीछे चले या उसका इन्कार करे।*

- *सांसारिक राजा चाहते हैं कि दूसरे उनके लिए काम करें, उसे कर चुकाए और यदि कोई उसकी सत्ता को धोखा दे तो उसे जान से मार देते हैं। लेकिन यीशु ने स्वयं अपनी इच्छा से औरों के पापों की कीमत को चुकाने के लिए अपना प्राण दिया। वह चाहता है कि हम स्वतंत्र हों और अनन्तकाल तक उसके साथ रहें।*
- *जब सांसारिक राजा मरता है तो उसका पुत्र उसके स्थान पर राज्य करता है, लेकिन जब यीशु मरा तो वह दुबारा जी उठा और वह अनन्तकाल तक राज्य करता है।*

  यीशु कोई मनुष्य नहीं है। वह परमेश्वर है। उसकी आराधना, उपासना और उसकी आज्ञा मानी जानी चाहिए। वह हमसे प्रेम करता है और हमारे लिए सबसे अच्छा चाहता है। यीशु का जीवन इस पृथ्वी पर पूरी समझ से बाहर है। परमेश्वर की विधियां इतनी महान है कि हमारी छोटी बुद्धि उसे समझ नहीं पाती। मनुष्यों को उसे समझना और ग्रहण कर लेना असंभव-सा प्रतीत होता है।

*बाइबल हमें सिखाती है कि प्रभु इस बात से प्रेम करता है कि लोग उसकी प्रशंसा करें। साधारण रूप से प्रशंसा का अर्थ यह है कि आप उसे बताएं कि जो आशीषें और अनोखे कार्य उसने किए हैं उनके लिए हम उसे कितना चाहते हैं। परमेश्वर को हमारे हृदय का प्रेम, जो उसके लिए है, सुनना भाता है। जैसा, "प्रभु, मैं आप से प्रेम करता हूं क्योंकि आपने मुझसे प्रेम किया है। मैं आपकी प्रशंसा करता हूं, क्योंकि आप शक्तिशाली और महान परमेश्वर है।" ऐसी बातें ये दर्शाती हैं कि निजी रूप से परमेश्वर आप के लिए कौन है।

यदि हम यीशु के जीवन और मृत्यु के बारे में सोचें तो हम आश्चर्यचकित हो जाएंगे कि ब्रह्माण्ड के रचयिता परमेश्वर ने हमारे लिए क्या किया है उसका प्रेम हमारी समझ से बढ़कर है। उसकी विधियां इतनी महान और बढ़कर हैं कि उसकी उतनी बड़ाई करना जितना वह है कठिन है। अच्छा होगा कि यहां हम रुकें और थोड़ी देर के लिए उसकी प्रशंसा करें।

क्रूस पर चढ़ाए जाने का उद्देश्य हमारे पापों के लिए बलिदान देना था। उसे सज़ा और दंड हमारे पापों के लिए जो हमने किए और करेंगे, दिया गया। हर रोज़ उसका धन्यवाद और प्रशंसा करें कि वह हमारा प्रभु बचाने वाला है।

आइए, यहां हम एक वाक्य में प्रार्थना करना सीखें, यह सोचते हुए कि यीशु ने हमारे लिए क्या किया। उदाहरण के लिए धन्यवाद पिता, कि तूने मुझे बचाया। दूसरे व्यक्ति के प्रार्थना का वाक्य हो सकता है, आप दयालु पिता हैं; और यहां हर किसी को समय प्राप्त होगा कि वह जैसा भी महसूस करते हैं एक वाक्य में प्रार्थना करें।

*अगुवे को चाहिए कि वह लोगों को सिखाए कि वे प्रतिदिन की प्रार्थना में प्रभु की प्रशंसा करें और वह पूछे कि पूरे सप्ताह भर प्रभु ने उनके साथ क्या किया और उनकी समस्या और परेशानियों में उन्हें उत्साहित करे।

“यीशु का पुनरुत्थान”–पाठ 8
मत्ती 27

“यहोवा कहता है, “मैं उन योजनाओं को जानता हूं जो मैंने तुम्हारे लिए बनाई हैं, ऐसी योजनाएं जो हानि की नहीं, परन्तु तुम्हारे कुशल की हैं कि तुम्हें एक उज्ज्वल भविष्य और आशा दूं।” यिर्मयाह 29:11

पुनर्विचार

1. यशायाह नबी ने कहा, उसका नाम इम्मानुएल होगा जिसका अर्थ है “परमेश्वर ....”।
2. यीशु ने कहा, कोई नहीं जानता कि वह दुबारा कब आएगा, केवल ....।
3. यहून्ना ने उन सबको, जिन्होंने अपने .... से पश्चाताप किया, बपतिस्मा दिया।
4. यीशु ने तीन बार शैतान को .... अनुसार उत्तर दिया।
5. यदि हम परमेश्वर के निकट बढ़ना और परीक्षा का सामना करना चाहते हैं तो हमें .... परमेश्वर के साथ समय बिताना होगा।
6. यीशु ने अपने चेलों को “.................... का पकड़ने वाला” होने के लिए बुलाया।
7. यीशु ने नाव पर चेलों से कहा, “....................मत।”
8. यीशु का हृदय तरस से भर गया, जब उसने बहुत से लोगों की ....को देखा।
9. यीशु ने चेलों को .... की तरह बुद्धिमान और ....के समान भोले बनकर बाहर जाने को कहा।
10. पतरस ने तीन बार यीशु का ....करके विश्वासघात किया।
11. यहूदा ने ....चांदी के सिक्कों में बेचकर विश्वासघात किया।
12. यीशु हमारे सब पापों को ....कर देता है, जब हम उसका अंगीकार करते हैं।
13. रोमी सिपाहियों ने यीशु के साथ कैसा व्यवहार किया?
14. जब यीशु सलीब पर मरने वाला था तो महायाजक उसका .... करने लगे।
15. जब यीशु ने अपना प्राण त्यागा तो बहुत-सी विचित्र घटनाएं हुईं, जिनमें से बहुत से मरे हुए व्यक्ति .... होकर नगर में घूमने लगे।
16. अरमत्तियाह का यूसुफ यीशु के शव को इसलिए ले गया कि वह उसे ....में दफनाए।

यीशु के सलीब पर चढ़ाए जाने के बाद फरीसी और याजक पिलातुस के पास जाकर उससे कहने लगे कि यीशु ने कहा था कि वह तीसरे दिन जी उठेगा। इसलिए अच्छा होगा कि सुरक्षा के अच्छे प्रबंध किए जाएं ताकि कोई उसके शव को चुरा न ले जाए। पिलातुस ने उसकी विनती मान ली। अत: उन्होंने कब्र के मुंह को सील बंद कर दिया और वहां सिपाहियों को नियुक्त कर दिया। सप्ताह के पहले दिन मरियम मगदलीनी और मरियम कब्र पर गईं। लेकिन जब वह वहां पहुंची तो एक बड़ा भूकंप आया और जो पत्थर कब्र के मुंह पर था, वह वहां से हटा हुआ था।

एक स्वर्गदूत जो स्वर्ग से वहां पर आया, वह वहां बैठा हुआ था। उसके वस्त्र श्वेत थे और बिजली के समान चमक रहे थे, और वे सिपाही कांपते हुए मरे हुओं के समान हो गए। स्वर्गदूतों

ने स्त्रियों से कहा, डरो मत। मैं जानता हूं कि तुम यीशु को ढूंढ़ रही हो। वह यहां नहीं है, वह मुर्दों में से जी उठा है; और वह तुमसे पहले गलील को जाएगा जहां तुम उसे पाओगे। स्त्रियां आनंद से भर गईं और चेलों को बताने के लिए दौड़ पड़ीं। मार्ग में यीशु उनसे मिला और कहा आनन्दित हो। उन्होंने उसके पैर पकड़कर उसे दंडवत् किया। तब यीशु ने उनसे कहा डरो मत, जाओ और मेरे चेलों से कहो कि वे गलील को चले जाएं, वहां वे मुझे देखेंगे। तब सिपाही दौड़कर महायाजकों के पास गए और जो कुछ हुआ था वह कह सुनाया। महायाजकों ने सिपाहियों को बहुत-सा धन दिया और कहा कि लोगों से कहना कि जब वे सो रहे थे तो उसके चेले आकर उसे चुरा ले गए; और यदि राज्यपाल के कानों तक यह बात पहुची, तो हम उसे समझा लेगें और तुम्हें संकट से बचा लेंगे। उन्होंने धन लेकर जैसा बताया था वैसा ही किया; और यह अफवाह पूरे यरुशलेम में फैल गई।

तब चेले उस पर्वत पर चले गए जिसे यीशु ने उन्हें बताया था। तब यीशु वहां उन्हें मिला और उन्होंने उसे दण्डवत् किया। पर किसी-किसी को उसपर संदेह हुआ। तब जाकर यीशु ने अपने स्वर्ग पर उठाए जाने से पहले आख़िरी निर्देश चेलों को दिए। यीशु ने कहा, **"स्वर्ग और पृथ्वी का सारा अधिकार मुझे दिया गया है, इसलिए जाओ और सब जातियों के लोगों को चेले बनाओ तथा उन्हें पिता, पुत्र, पवित्र आत्मा के नाम से बपतिस्मा दो और जो-जो आज्ञाएं मैंने तुम्हें दी हैं उनका पालन करना सिखाओ; और देखो, मैं युग के अंत तक सदैव तुम्हारे साथ हूं।" आमीन।**

मौखिक प्रश्न

1. फरीसी क्यों सिपाहियों को कब्र पर नियुक्त करना चाहते थे?
2. कौन-कौन सी स्त्रियां कब्र पर गईं?
3. जब ये स्त्रियां वहां पर पहुंची तब उन्होंने क्या देखा?
4. स्वर्गदूत ने उनसे क्या कहा?
5. सिपाहियों का क्या हुआ?
6. स्वर्गदूत के आने के बाद सिपाही कहां चले गए?
7. महायाजकों द्वारा सिपाहियों को क्या सलाह दी गई?
9. यीशु ने चेलों को कहां पर मिलने को कहा?
10. स्वर्ग पर उठाए जाने से पहले यीशु ने अपने अनुयायियों को क्या आज्ञा दी?
11. अब से लेकर जगत के अंत तक किस के साथ होने के लिए यीशु ने प्रतिज्ञा की?

आत्मिक सच्चाइयां–पाठ 4

मत्ती 28

1. यीशु का संदेश सब लोगों तक बांटना आवश्यक है। हो सकता है कि परमेश्वर आपके हृदय में ऐसी इच्छा और सामर्थ दे, कि आप उसका संदेश औरों तक पहुंचा सकें। यीशु के प्रेम को बांटने के बहुत से तरीके को सकते हैं। परन्तु प्रभु यीशु तक लोगों को लाने का एक तरीका कहानियों के द्वारा हो सकता है। यदि इस पुस्तक के अनुसार आप लोगों को संदेश देना चाहते हैं, तो आप 7 हफ़्तों में इसे पूरा कर सकते हैं। पाठ 4 से आप लोगों की आवश्यकताओं के लिए प्रार्थना कर रहे थे। हो सकता है आपने लोगों से बातें भी की हों या जो परिवर्तन आपके जीवन मेंआया हो उसे आप बता सकते हैं, और यदि आपने ऐसा नहीं किया है, तो इस सप्ताह ऐसा करने का प्रण लें।

- ➢ किसी से जाकर ऐसा न कहें, कि वह बहुत पापी है; उनकी बहुत बुरी दशा है, और यदि वह पश्चाताप नहीं करेगा तो वह न बुझनेवाली आग में डाला जाएगा।
- ➢ आप उनके घर में अपने साथ संक्षिप्त बाइबल-अध्ययन करने के लिए आमंत्रित करें।
- ➢ जब आप अध्ययन के लिए उनके घर जाएँ, तो अपने साथ एक साथी ज़रूर लें, चाहे वह कलीसिया से अथवा बाइबल-स्कूल से हो।
- ➢ उन व्यक्तियों से उनके जीवन के बारे आप पूछ सकते हैं, उनके परिवार से मिल सकते हैं और उनकी आवश्यकताओं को जान सकते हैं। आप उनके परिवार, नौकरी, घर में शांति के लिए परमेश्वर से प्रार्थना कर सकते हैं।
- ➢ प्रभु यीशु के जन्म की कहानी से शुरू कर सकते हैं। कोशिश करें कि वे आप से प्रश्न पूछें और यदि आप जवाब नहीं जानते हैं, तो कहें कि अगली बार आप उसका जवाब लेकर आएंगे।
- ➢ एक घंटे से ज्यादा उनके घर में समय न बिताएं, क्योंकि यह छोटा बाइबल अध्ययन है।
- ➢ प्रतिदिन, प्रति सप्ताह इस व्यक्ति और इसके परिवार के लिए प्रार्थना करते रहें।

याद रखें: जैसा हम पहले से ही जानते हैं कि हमारे पास कोई अपनी सामर्थ नहीं है, जिससे दुष्टात्मा को निकाल सकें, या लोगों की आवश्यकता को पूरा कर सकें।

लेकिन यह सामर्थ तो केवल पवित्र आत्मा की है जो हमारे अंदर रहता है। यह लोगों की बीमारियों से उन्हें चंगा करने की सामर्थ रखता है। वह दुष्टात्माओं से आज़ाद करने की, पाप की जंजीरों को तोड़ने की, और पश्चाताप करने की भी सामर्थ रखता है। हमारा कर्त्तव्य तो उनके लिए प्रार्थना करना और संदेश देना है।

हो सकता है कि आप के पास समय न हो कि आप सात हफ़्ते उसके साथ समय बिताएं, लेकिन आप यीशु के बारे में उसे बता सकते हैं।

आपको क्या करना है:

- ➢ जितना आपको याद है, उतना आप उन्हें अच्छी तरह यीशु के बारे में बता सकते हैं। जैसे

यीशु का जन्म, बपतिस्मा, जीवन, आश्चर्यकर्म, प्रेम, मन-फिराव का संदेश तथा मृत्यु और पुनरुत्थान के बारे में।

- ➢ उन्हें इस बात का उदाहरण दें कि जैसा यीशु के समय लोग बुरे थे, आज भी लोग परमेश्वर के सामने अधर्मी ठहरते हैं–चाहे हम बहुत अच्छे मनुष्य ही क्यों न हो। इसका अर्थ है कि हम सबने पाप किया है। उदाहरण के लिए जैसे, झूठ, चोरी, घृणा, ईर्ष्या, व्यभिचार इत्यादि।
- ➢ उन्हें बताएं कि जैसा परमेश्वर ने बाइबल के समय में लोगों को क्षमा किया, वैसे ही आज भी जब आप अपने पापों से पश्चाताप करते हैं तो वह क्षमा करता है।
- ➢ आप अपने यीशु में आने से पहले के जीवन, उसे ग्रहण करने के समय के जीवन, और फिर ग्रहण करने के बाद के जीवन की गवाही लोगों को दें।
- ➢ बाइबल के पद यूहन्ना 3:16 को पढ़ें, "परमेश्वर ने जगत से ऐसा प्रेम किया कि उसने अपना एकलौता पुत्र दे दिया, ताकि जो कोई उसपर विश्वास लाए नाश न हो, परन्तु अनन्त जीवन पाए।"
- ➢ लोगों से पूछें, कि क्या वे यीशु पर विश्वास लाकर अपने पापों की क्षमा प्राप्त करना चाहते हैं। यदि वे कहते हैं हां, तो एक साधारण प्रार्थना करने में उनकी मदद करें कि वे अपना जीवन प्रभु को दें।
- ➢ यदि वे कहते हैं नहीं, तो आप उनसे पूछें कि क्या आप उनके लिए प्रार्थना कर सकते हैं। आप परमेश्वर से प्रार्थना करें कि वे अपने जीवन में उसके सत्य को समझ सकें।

***अब रुक जाइए, सब एकसाथ बैठकर इस बात का अभ्यास करें कि कैसे मनुष्य को यीशु के पास लाया जा सकता है।**

यदि आप सोचेते हैं, कि यह आपके लिए असंभव है, कि मैं कभी नहीं कर सकता, तो इस अध्ययन के बारे में सोचें जो हम आगे करने जा रहे हैं।

2. "और देखो जगत के अंत तक सदैव मैं तुम्हारे साथ हूं।" बाइबल हमें सिखाती है कि जिस घड़ी आप यीशु को ग्रहण करते हैं, पवित्र आत्मा आपके अंदर आता है, और हमारे जीवनों में निवास करता है। शायद आप इस बात का एहसास नहीं करते, लेकिन वह पहले ही आपके जीवन में कार्य कर रहा है (यूहन्ना 14:7)।

- ➢ जब आप परमेश्वर के साथ प्रतिदिन अकेले समय बिताते हैं तो वह आप को सिखाता है (यूहन्ना 14: 26)
- ➢ जब आप परमेश्वर की आज्ञा के विरुद्ध जाते हैं, तो वह हमें एहसास कराता है कि यह वही है जो पहली बार हमें समझाता है कि हम पापी हैं; और अपने जीवन में हमें यीशु की क्षमा की आवश्यकता हैं (यूहन्ना 16: 8-11)।
- ➢ यह वही है जो हमें बुद्धि देता और हमारा मार्गदर्शन करता है कि परमेश्वर की सिद्ध इच्छा हमारे जीवन में पूरी हो यूहन्ना 16: 13
- ➢ जब हम उदास होते हैं तो वह हमें सांत्वना पहुँचाता है (प्रेरितों के काम 9:31)।
- ➢ वह हमें विशेष दानों से परिपूर्ण करता है–उन कार्यों को करने के लिए जो कभी हमने सपने में भी नहीं सोचा। यह हमें औरों को देने के लिए अपना वचन देता है कि हम यीशु के बारे में औरों को बता सकें (1कुरिन्थियों 12)।

शायद हम ऐसा सोचें, कि हम कभी भी वैसा यीशु के पीछे चलने वाला अनुयायी नहीं हो सकते,

जैसे हमें होना चाहिए। हो सकता है कि हम यह सोचें कि परमेश्वर की आज्ञा पूरा करना असंभव है। यह सत्य है कि ये बातें जो ऊपर कही गयीं हैं सत्य है। हम कभी भी अपने आप से कुछ ऐसा नहीं कर सकते कि यीशु के पीछे चल सकें। लेकिन पवित्र आत्मा के द्वारा जो हमारे जीवन में रहता है संभव है।

यह भेद की बात है कि आप लोगों को प्रभु यीशु के बारे में बताते है, बिना भय का जीवन बिताते हैं, प्रतिदिन ठीक निर्णय लेते है–ये सब भेद हैं। जब हम संसार के सृष्टिकर्ता को अपने जीवन में प्रवेश होने देते हैं, तब वह हमें अपना दान देता है कि उसी उपस्थिति निरंतर पवित्र आत्मा के द्वारा हमारे अंदर बनी रहे। पवित्र आत्मा हमारे लिए सामर्थ का स्त्रोत है। यह बात बहुत ही प्रोत्साहित करने वाली है कि परमेश्वर के पास हमारे लिए एक सुन्दर योजना, विचित्र विचार, और सुन्दर उद्देश्य हमारे जीवन के लिए है। आइए, हम इस अध्ययन की समाप्ति एक बड़ी ही विशेष प्रतिज्ञा से जो यिर्मयाह 29:11-13 में मिलती है करे:

"यहोवा कहता है कि मैं उन योजनाओं को जानता हूं जिन्हें मैंने तुम्हारे लिए बनाई हैं। ऐसी योजनाएं जो हानि की नहीं, परन्तु तुम्हारे कुशल की हैं, कि तुम्हें एक उज्ज्वल भविष्य और आशा दूं। तब तुम मुझे पुकारोगे और मेरे पास आकर मुझसे प्रार्थना करोगे और मैं तुम्हारी सुनूंगा। तुम मुझे ढूंढोगे और पाओगे, क्योंकि तुम संपूर्ण हृदय से मुझे ढूंढोगे।"

परमेश्वर आपको आशीष दे, जब कि आप उसे और अधिक जानने की खोज में लग जाते हैं।